एक कहानी कई रंग–17 ः

पोम और पील जैसी कहानियॉ

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Pome Aur Peel Jaisi Kahaniyan (Pome and Peel Like Stories)
Cover Page picture : Stone Statue
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5
पोम और पील जैसी कहानियॉ 7
1 पोम और पील 9
2 राम और लक्ष्मण या विद्वान उल्लू 23
3 फ़कीर चन्द 46
4 मूर्ति के प्यार में 100
5 रैवन 107
6 वफादार जोहानैस 131

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2000,** तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियॉ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं। तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"।

कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में ये कहानियॉ कुछ इसी तरह की कहानियॉ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियॉ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि वैसी सारी कहान्यिॉ हम यहॉ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि वैसी कहानियॉ हम एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में हम **21** पुस्तकें पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं। यह इस सीरीज़ की **22**वीं पुस्तक है "पोम और पील जैसी कहानियॉ"। इस सीरीज़ में प्रकाशित कुछ पुस्तकों की सूची इस पुस्तक के अन्त में दी हुई है।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुॅची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

पोम और पील जैसी कहानियॉ

पोम और पील लोक कथा इटली की एक बहुत ही लोकप्रिय कथा है। इस कथा में एक मित्र अपने मित्र की ज़िन्दगी बचाने के लिये उलटे उलटे और मित्र को अप्रिय लगने वाले काम करता है। दूसरा मित्र भी उसको अपना अच्छा मित्र समझ कर उसके कामों पर ज़्यादा ध्यान नहीं देता हालॉकि वह हमेशा ही यह सोचता रहता है कि उसका सबसे अच्छा मित्र होते हुए भी वह उसके साथ ऐसा क्यों कर रहा है। पूछने पर भी पहला मित्र उसे कुछ नहीं बताता पर आख़िर में वह वह उसकी हरकतों से परेशान हो जाता है और उससे बताने की ज़िद करता है। चेतावनी देने के बाद भी जब वह नहीं मानता तो उसे बताना ही पड़ता है और वह पत्थर का बन जाता है। किसी तरह बाद में उसे ज़िन्दा कर लिया जाता है और दोनों मित्र ख़ुशी ख़ुशी रहने लगते हैं।

सारी कहानी बहुत ही मज़ेदार ढंग से चलती है। ऐसी कहानी केवल वहीं नहीं कही जाती है बल्कि दूसरे देशों में भी कही सुनी जाती हैं। हम यहॉ ऐसी ही कुछ कहानियॉ दे रहे हैं जिनमें एक मित्र ने दूसरे मित्र की जान बचाने के लिये उसके लिये बहुत अजीब अजीब काम किये हैं।

ये सब कथाऐं दोस्ती और वफादारी की महत्ता बताती हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

1 पोम और पील[1]

एक बार की बात है कि किसी समय में एक बहुत ही भले पति पत्नी रहते थे। उनके कोई बच्चा नहीं था सो उनको एक बेटे की बहुत इच्छा थी।

एक दिन पति कहीं बाहर गया हुआ था कि रास्ते में उसको एक जादूगर मिला। उसने उस जादूगर से कहा — "जादूगर साहब, मुझे एक बेटा चाहिये। मैं एक बेटा पाने के लिये क्या करूँ?"

जादूगर ने उसको एक सेब दिया और कहा — "लो यह सेब लो और इसको अपनी पत्नी को खिला देना और नौ महीने बाद उसको एक बहुत ही अच्छा बेटा हो जायेगा।"

पति उस सेब को ले कर घर वापस आ गया। वह सेब उसने अपनी पत्नी को दे कर कहा — "लो यह सेब खा लो। यह सेब मुझे एक जादूगर ने दिया है और कहा है कि इसको खा कर तुम्हारे एक बेटा हो जायेगा।"

उसकी पत्नी तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गयी। उसने तुरन्त अपनी दासी को बुलाया और उस सेब को छील कर लाने के लिये कहा।

---

[1] Pom and Peel – a folktale from Venice, Italy, Europe. Taken from the book "Folktales of Italy" by Italo Calvino edited by George Martin. Its 125 stories are available in Hindi from hindifolktales@gmail.com

दासी वह सेब छील कर ले आयी। छिला हुआ सेब तो उसने अपनी मालकिन को दे दिया पर उसके छिलके उसने अपने पास रख लिये और उनको उसने खुद खा लिया।

पत्नी को नौ महीने बाद एक बेटा हुआ और उसी दिन उस दासी को भी एक बेटा हुआ। पत्नी का बेटा सफेद रंग का था जैसा कि सेब के गूदे का रंग होता है और दासी का बेटा लाल रंग का था जैसा कि सेब के छिलके का रंग होता है।

पत्नी के बेटे का नाम था पोम और दासी के बेटे का नाम था पील। दोनों बच्चे बड़े होते गये। दोनों बच्चे एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे और भाइयों की तरह से रहते थे।

एक बार वे दोनों बाहर घूम रहे थे तो उन्होंने सुना कि एक जादूगर की बेटी है जो सूरज की तरह चमकीली है पर किसी ने उसको देखा नहीं था क्योंकि वह अपने घर से कभी बाहर ही नहीं निकलती थी। यहॉ तक कि वह कभी खिड़की से भी नहीं झॉकती थी।

पोम और पील के पास एक तॉबे का घोड़ा था जो अन्दर से खोखला था। एक दिन वे दोनों उसमें वायलिन और बिगुल ले कर बैठ गये और क्योंकि वे उस घोड़े को उसके पहियों को अन्दर से घुमा कर चला सकते थे सो वे उस घोड़े में बैठ कर अपनी वायलिन और बिगुल बजाते हुए उस

घोड़े को उसके पहियों को अन्दर से घुमाते हुए चला कर जादूगर के महल की तरफ चल दिये।

जब वे जादूगर के महल के पास पहुँचे तो जादूगर ने बाहर देखा तो उसको एक बहुत ही बढ़िया तॉबे का घोड़ा दिखायी दिया जिसमें से संगीत निकल रहा था।

वह उस घोड़े को अन्दर ले आया और उस आश्चर्यजनक चीज़ दिखाने के लिये अपनी बेटी को अन्दर से बाहर बुलाया। उस संगीत वाले घोड़े को देख कर उसकी बेटी भी बहुत खुश हुई।

पर जैसे ही वह उस घोड़े के साथ अकेली रह गयी पोम और पील दोनों उस घोड़े में से बाहर निकल आये। उनको देख कर वह लड़की डर गयी।

उन्होंने उससे कहा — "तुम डरो नहीं। हमने सुना था कि तुम बहुत सुन्दर हो तो बस हम तो तुमको केवल देखना चाहते थे सो यहॉ इस तरीके से हमने तुम्हें देख लिया।

अब अगर तुम यह चाहती हो कि हम लोग यहॉ से चले जायें तो हम चले जायेंगे पर अगर तुमको हमारा संगीत पसन्द हो और तुम चाहती हो कि हम तुम्हारे लिये वह संगीत बजाते रहें तो हम वह संगीत बजाते रहेंगे। फिर किसी के बिना जाने कि हम यहॉ कभी आये भी थे हम चले जायेंगे।"

लड़की को उनका संगीत अच्छा लगा तो वे वहॉ रुक गये और अपना संगीत उसको सुनाते रहे और फिर कुछ देर बाद तो वह उनको खुद ही जाने नहीं देना चाहती थी।

तो पोम बोला — "अगर तुम हमको यहॉ से नहीं जाने देना चाहतीं तो फिर चलो हमारे साथ। मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ।"

वह लड़की तैयार हो गयी। वे तीनों उस घोड़े के पेट में छिप गये और वह घोड़ा फिर अपने पहियों पर चलने लगा। वे तीनों वहॉ से चल कर रात काटने के लिये शाम को आ कर एक सराय में ठहर गये।

जैसे ही वे लोग वहॉ से गये वह जादूगर घर लौटा और अपनी बेटी को आवाज लगायी पर कोई नहीं बोला। उसको उसने इधर उधर भी ढूँढा पर जब उसको उसके महल में नहीं पाया तो अपने चौकीदारों से पूछा तो उन्होंने बताया कि उन्होंने तो उसको महल से बाहर जाते नहीं देखा।

तब उस जादूगर को लगा कि उसके साथ चाल खेली गयी है। यह सोच कर वह बहुत गुस्सा हो गया। वह अपने महल के छज्जे पर गया और अपनी बेटी को तीन शाप दिये।

"उसको तीन घोड़े मिलेंगे, एक सफेद, एक लाल और एक काला। वे सब घोड़े प्यारे होंगे जैसे कि उसने अभी एक घोड़े से

प्यार किया। वह सफेद घोड़े पर चढ़ेगी और यह सफेद घोड़ा उसका किया हुआ सब कुछ बेकार कर देगा।

फिर उसको तीन सुन्दर छोटे छोटे कुत्ते मिलेंगे, एक सफेद, एक लाल और एक काला। वह काले कुत्ते को पसन्द करेगी जैसे कि वह करती है और वह काला कुत्ता भी उसका किया हुआ सब कुछ बेकार कर देगा।

फिर जब वह रात को सोने के लिये अपने बिस्तर पर जायेगी तो उसके कमरे में एक बहुत बड़ा सॉप आयेगा। वह खिड़की के रास्ते से आयेगा और उसको काट कर मार देगा।"

जब वह जादूगर ये तीन शाप अपने छज्जे पर से चिल्ला रहा था तो तीन बूढ़ी परियॉ नीचे सड़क पर से गुजर रहीं थी। उन्होंने ये शाप सुने और वे ये शाप सुनती हुई चलती गयीं और चलती गयीं।

अपनी लम्बी यात्रा के बाद शाम को थक कर वे परियॉ भी इत्तफाक से उसी सराय में रुकीं जिसमें पोम, पील और जादूगर की वह बेटी रुके हुए थे।

जैसे ही वे अन्दर घुसीं तो एक परी बोली — "ज़रा उस जादूगर की बेटी को देखना। अगर उसको अपने पिता के तीनों शापों का पता चल जाये तो वह बेचारी तो ठीक से सो भी नहीं सकेगी।"

उसी सराय में एक बैन्च पर पोम, पील और जादूगर की बेटी भी सो रहे थे। पोम और जादूगर की बेटी तो सो गये थे पर पील को अभी नींद नहीं आयी थी।

पील इतना अक्लमन्द था कि वह एक ऑख खोल कर सोता था इसी लिये उसको पता रहता था कि उसके चारों तरफ क्या हो रहा है और इसी लिये यह परी भी क्या कह रही थी यह सब भी उसने सुन लिया था।

परी आगे बोली — "अगर उस जादूगर की यह इच्छा है कि उसकी बेटी को तीन घोड़े मिलें – सफेद, लाल और काला और वह सफेद घोड़े पर बैठे जो उसके सारे किये कराये को बेकार कर देगा तो ऐसा ही होगा।"

तो दूसरी परी बोली — "पर अगर कोई दूर का देखने वाला आदमी यहॉ मौजूद हो और वह उस सफेद घोड़े का सिर तुरन्त ही काट दे तो उस लड़की को कुछ नहीं होगा।"

इस पर तीसरी परी बोली — "और जो भी इस बात को अपने मुॅह से निकालेगा वह पत्थर बन जायेगा।"

इसके बाद पहली परी फिर बोली — "इसके बाद जादूगर की इच्छा है कि उसकी बेटी को तीन छोटे छोटे सुन्दर कुत्ते मिलें और वह उन कुत्तों में से उसी कुत्ते को चुने जिसको वह जादूगर उससे चुनवायेगा यानी काले कुत्ते को चुने और वह उसके किये कराये को बेकार कर देगा तो ऐसा ही होगा।"

तो दूसरी परी बोली — "पर अगर कोई दूर देखने वाला आदमी यहॉ मौजूद हो तो वह उस काले कुत्ते का सिर काट देगा और फिर उसको कुछ नहीं होगा।"

तीसरी परी बाली — "और अगर इसके बारे में वह किसी से कुछ भी बोला तो वह पत्थर का बन जायेगा।"

पहली परी फिर बोली — "उसकी तीसरी और आखिरी इच्छा यह है कि जब वह रात को अपने बिस्तर पर सोने जाये तो उसकी खिड़की से एक बहुत बड़ा सॉप आयेगा और उसको मार डालेगा। तो यह भी हो कर ही रहेगा।"

तो दूसरी परी फिर बोली — "पर अगर कोई दूर देखने वाला आदमी यहॉ मौजूद हो तो वह उस सॉप का सिर काट देगा और फिर उसे कुछ नहीं होगा।"

तीसरी परी बाली — "और अगर इसके बारे में वह एक शब्द भी किसी को बतायेगा तो वह पत्थर का बन जायेगा।"

इस तरह पील को तीनों भयानक भेदों का पता चल गया जिनको अगर वह ठीक से बरतता तो जादूगर की बेटी की जान बचा सकता था और अगर किसी और को बताता तो वह खुद पत्थर का बन जाता।

अगले दिन पोम, पील और वह जादूगर की बेटी तीनों वह सराय छोड़ कर आगे चले जहॉ पोम का पिता उन लोगों के लिये

तीन घोड़े लिये इन्तजार कर रहा था – एक सफेद, एक काला और एक लाल।

जादूगर की बेटी तुरन्त ही कूद कर सफेद घोड़े पर बैठ गयी पर पील भी तेज था। उसने भी तुरन्त ही उस घोड़े का सिर काट दिया।

पोम बोला — "यह तुमने क्या किया पील? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो तुमने उसे मार डाला? वह घोड़ा तो मुझको बहुत ही प्यारा था।"

पील बोला —"मुझे अफसोस है कि मैंने तुम्हारा वह प्यारा घोड़ा मार दिया पर यह सब मैं तुमको अभी नहीं बता सकता।"

जादूगर की बेटी बोली — "पोम, इस पील का दिल तो बहुत ही खराब है। मैं अब इसके साथ नहीं जाऊॅगी।"

पर पील ने यह मान लिया कि उसने पागलपन में उस घोड़े को मार डाला था और उसने इस बात के लिये जादूगर की बेटी से माफी भी मॉग ली। जादूगर की बेटी ने उसको माफ कर दिया।

पोम के पिता उन सबको ले कर अपने घर पहुॅचे तो वहॉ तीन छोटे छोटे सुन्दर कुत्ते उनका स्वागत करने आये – एक सफेद, एक काला और एक लाल।

जादूगर की बेटी तुरन्त ही काले छोटे कुत्ते को उठाने के लिये झुकी कि पील ने अपनी तलवार से तुरन्त ही उस काले कुत्ते का सिर काट दिया।

जादूगर की बेटी बड़ी ज़ोर से चिल्लायी — "तुम तो बहुत ही पागल और बेरहम आदमी हो पील। दूर हो जाओ मेरी नजरों से। तुमने पहले मेरा घोड़ा मार दिया और अब यह प्यारा सा छोटा सा कुत्ता भी मार दिया।"

उसी समय पोम के माता पिता भी बाहर निकल आये। उन्होंने खुशी खुशी अपने बेटे और बहू का स्वागत किया और बहू को समझाया कि वह एक बार पील को फिर से माफ कर दे।

पर शाम को खाने के समय जबकि सब लोग बहुत खुश थे पील कुछ उदास और अकेला सा बैठा था। कोई उसको उकसा कर अपने साथ बातें करने पर मजबूर भी नहीं कर पा रहा था।

लोगों ने उससे पूछने की कोशिश भी की कि वह उदास सा क्यों था पर उसने सबको यह कह कर टाल दिया था कि कोई खास बात नहीं थी बस वह ज़रा थका हुआ था।

वह दावत से पहले ही यह कह कर उठ कर वहॉ से चला गया कि अपनी थकान की वजह से उसको नींद आ रही थी और वह सोने जा रहा था। पर वह अपने कमरे की बजाय पोम के सोने के कमरे में जा कर उसके पलंग के नीचे छिप गया।

जब पोम और जादूगर की बेटी सोने के लिये अपने कमरे में आये और अपने पलंग पर लेटे तो पील पलंग के नीचे से उनके कमरे की खिड़की पर निगाह जमाये हुए था।

जब पोम और जादूगर की बेटी गहरी नींद सो गये तो पील ने उस कमरे की खिड़की का शीशा टूटने की आवाज सुनी। उसकी ऑखें तो खिड़की की तरफ ही लगी थीं।

उसने देखा कि बहुत बड़ा सॉप उस खिड़की से हो कर कमरे के अन्दर आने की कोशिश रहा था। पील तुरन्त ही पलंग के नीचे से बाहर निकला और अपनी तलवार से उसका सिर काट दिया।

इस शोर से जादूगर की बेटी की ऑख खुल गयी। उस समय उसको वह बड़ा सॉप तो दिखायी नहीं दिया क्योंकि वह तो गायब हो गया था बस केवल पील ही अपने हाथ में नंगी तलवार लिये वहॉ खड़ा दिखायी दिया।

उसको इस तरीके से खड़ा देख कर वह ज़ोर से चिल्लायी — "बचाओ बचाओ। हत्या हत्या। यह पील हमको मारना चाहता है। मैंने उसको दो बार तो माफ कर दिया पर अबकी बार मैं उसको माफ नहीं कर सकती। इस बार तो इस जुर्म के लिये उसको मरना ही पड़ेगा।"

यह सुन कर सब जाग गये और पोम के सोने के कमरे की तरफ भागे। पील को पकड़ कर जेल भेज दिया गया और तीन दिन बाद उसको फॉसी लगाने का दिन निश्चित कर दिया गया।

यह सोच कर कि अब चाहे वह यह भेद किसी को बताये या न बताये उसे तो मरना ही है सो उसने मरने से पहले पोम की पत्नी को

तीन बातें बताने की इजाज़त मॉगी। उसको इजाज़त दे दी गयी। पोम की पत्नी उससे मिलने के लिये जेल में आयी।

पील ने उससे कहा — "तुम्हें याद है जब हम तुम्हारे पिता के घर से भाग कर पहली बार एक सराय में रुके थे?"

"हॉ हॉ बिल्कुल याद है।"

"उस समय तुम और तुम्हारा पति तो सो रहे थे पर मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैं उस समय जागा हुआ था। उस समय वहॉ तीन परियॉ आयीं और उन्होंने आपस में बात की कि तुम्हारे जादूगर पिता ने तुमको तीन शाप दिये।

पहला शाप तो यह कि तुमको तीन घोड़े मिलेंगे – सफेद, लाल और काला। पर तुम सफेद घोड़े पर चढ़ोगी जो तुम्हारा सब कुछ खत्म कर देगा। पर अगर कोई सफेद घोड़े का गला काट देगा तो तुम बच जाओगी। और जो भी यह बात किसी और से कहेगा तो वह पत्थर का हो जायेगा।"

जैसे ही पील ने अपनी यह बात खत्म की उस बेचारे के पैर और टॉगें संगमरमर की हो गयीं। जादूगर की बेटी समझ गयी। वह रुऑसी हो कर बोली — "पील, बस इतना काफी है और आगे कुछ मत बोलना।"

पर वह आगे बोलता ही गया — "मुझे तो मरना ही है चाहे मैं बोलूॅ या न बोलूॅ इसलिये मैं बोलने के बाद मरना ज़्यादा पसन्द करूॅगा।

उन तीनों परियों ने यह भी कहा कि जादूगर का अपनी बेटी को दूसरा शाप यह था कि फिर उसको तीन छोटे छोटे सुन्दर कुत्ते मिलेंगे – सफेद, लाल और काला।

पर वह काले कुत्ते को अपनी गोद में उठायेगी जो उसका सब कुछ खत्म कर देगा। पर अगर कोई उस काले कुत्ते को मार देगा तो वह बच जायेगी। और जो भी यह बात किसी और से कहेगा वह पत्थर का हो जायेगा।"

जब पील ने कुत्ते वाला शाप पोम की पत्नी को बताया तो उसका शरीर उसकी गरदन तक संगमरमर का हो गया। जादूगर की बेटी यह सब सुन कर रो पड़ी।

वह रोते रोते बोली — "पील, मेहरबानी कर के मुझे माफ कर दो। मैं समझ गयी। अब कुछ और मत कहो।"

पर क्योंकि अब पील का गला पत्थर का हो चुका था और उसका जबड़ा भी पत्थर का हो रहा था उसकी आवाज भर्रा रही थी।

उसी भर्रायी हुई आवाज में उसने कहा — "और जो कोई इस बात को अपने मुँह से कहेगा वह पत्थर का हो जायेगा।" और यह कहने के बाद तो वह सिर से पैर तक संगमरमर की मूर्ति ही बन गया।

पील की पत्नी बहुत ज़ोर से रो पड़ी और रो रो कर कहने लगी — "आह यह मैंने क्या किया। मैंने एक ऐसे वफादार आदमी को मार दिया जिसने मेरी जान बचायी।"

फिर कुछ सोच कर उसने अपने ऑसू पोंछे और बोली अगर इस आदमी को कोई फिर से ज़िन्दा कर सकता है तो वह हैं मेरे पिता जी खुद।

सो उसने अपने पिता को एक चिट्ठी लिखी — "प्रिय पिता जी, आप मुझे माफ कर दें और मेहरबानी कर के तुरन्त ही यहॉ आ जायें।"

वह जादूगर अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था सो उसकी चिट्ठी मिलते ही वह अपनी बेटी के पास दौड़ा चला आया।

उसकी बेटी ने उसे चूमा और बोली — "पिता जी, मुझे आपसे एक सहायता चाहिये। ज़रा इस बेचारे नौजवान को देखिये। आपके तीन शापों से मेरी रक्षा कर के मेरी जान बचाने के बदले में यह बेचारा सारा का सारा पत्थर का हो गया है। मेहरबानी कर के आप इसको ज़िन्दा कर दीजिये।"

जादूगर बोला — "बेटी तुम्हारे प्यार की खातिर मैं यह भी करूँगा।" उसने अपनी जेब से बालसम[2] के मरहम की एक शीशी निकाली और

[2] Balsam (also called Turpentine) is a kind of sweet smelling sap of certain trees and shrubs used for medicinal purposes. It has flowers also. See the picture of its flower above.

पील के सारे शरीर पर चुपड़ दी। उस मरहम के लगाते ही पील तुरन्त ही ज़िन्दा हो गया।

इस तरह फिर उसे फॉसी के फन्दे की तरफ ले जाने की बजाय वे लोग उसको एक गाड़ी में बिठा कर गाते बजाते और "पील ज़िन्दाबाद" के नारे लगाते हुए घर ले गये।

इस तरह पील ने जादूगर की बेटी की जान बचायी और जादूगर की बेटी ने पील की जान बचायी।

2 राम और लक्ष्मण या विद्वान उल्लू[3]

पोम और पील जैसी कहानियों के संग्रह में यह कहानी हमने तुम्हारे लिये भारत की लोक कथाओं से ली है। यह कहानी वहॉ भी डेढ़ सौ साल पहले कही सुनी जाती थी।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसका नाम राजा चन्द्र था। उसका वजीर बत्ती एक बहुत ही विद्वान आदमी था। उन दोनों में आपस में इतना प्यार था कि वे राजा और मन्त्री कम और दोस्त ज़्यादा थे। दोनों के कोई बच्चा नहीं था और दोनों ही एक बेटे के लिये बहुत इच्छुक थे।

आखिरकार राजा की पत्नी और वजीर की पत्नी दोनों ने एक दिन एक ही समय में दो बेटों को जन्म दिया। राजा के बेटे का नाम रखा गया राम और वजीर के बेटे का नाम रखा गया लक्ष्मण। दोनों के जन्म पर सारे देश में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं।

दोनों बच्चे एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे। अलग अलग रह कर उनका मन ही नहीं लगता था। वे रोज एक साथ स्कूल जाते थे एक साथ नहाते थे और एक साथ ही खेलते थे। यहॉ तक कि खाना भी एक ही थाली में ही खाते थे।

[3] Rama and Laxman or The Learned Owl. Taken from the book "Old Deccan Days or Hindoo Fairy Tales" by Mary Frere. 1868. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

एक दिन जब राम पन्द्रह साल का था तो उसकी मॉ, यानी रानी ने अपने पति राजा चन्द्र से कहा — "हमारा बेटा राम नीचे लोगों में बैठने लगा है जैसे वह हमेशा लक्ष्मण के साथ ही खेलता रहता है। यह उसके ओहदे के लिये ठीक नहीं है। मैं चाहती हूॅ कि आप उसके इस सम्बन्ध पर थोड़ी रोक लगायें और उसके लिये अच्छे साथी ढूॅढें।"

राजा चन्द्र बोले — "यह मैं नहीं कर सकता। लक्ष्मण के पिता मेरे बहुत अच्छे वज़ीर और दोस्त हैं जैसे उनके पिता मेरे पिता के थे। तो हमारे बच्चों को भी वैसे ही होने दो।"

यह सुन कर रानी कुछ गुस्सा हो गयी। उसने राजा से तो कुछ नहीं कहा पर उसने दुनियॉ के बहुत सारे विद्वानों को बुला भेजा और उनसे पूछा कि क्या दोनों बच्चों का प्यार तोड़ने का कोई साधन नहीं था। उन्होंने जवाब दिया कि वे ऐसे किसी साधन को नहीं जानते थे जो यह कर सके।

आखिर एक नाचने वाली रानी के पास आयी और बोली कि वह यह काम कर सकती है पर इसको लिये रानी को उसे कोई बहुत बड़ा इनाम देना पड़ेगा।

रानी ने उसको सोने की मुहरों से भरा एक थैला दिया और कहा — "यह तुम्हें तुम्हारे काम शुरू करने से पहले है और अगर बाद में तुम इस काम में कामयाब हो गयीं तो फिर मैं तुम्हें इतना ही और दूॅगी।"

अब इस नीच स्त्री ने क्या किया कि उसने बहुत बढ़िया कपड़े पहने और बागीचे में बने हुए घर में चली गयी जिसे राजा चन्द्र ने अपने बेटे के लिये बनवाया था। राम और लक्ष्मण अपने खेल के समय का बहुत सारा हिस्सा वहीं बिताया करते थे।

इस घर के बाहर एक बहुत बड़ा कुॅआ था और एक सुन्दर बागीचा था। जिस समय यह नाचने वाली वहॉ पहुॅची तो राम और लक्ष्मण कुॅए के पास बैठे बैठे ताश खेल रहे थे।

वह उनके पास पहुॅची और कुॅए से पानी खींचने लगी। राम ने अपनी नजरें उठायीं और उसकी तरफ देखा और लक्ष्मण से कहा — "इस स्त्री के पास जाओ जिसने इतनी बढ़िया पोशाक पहन रखी है और मुझे पता लगा कर बताओ कि यह कौन है।"

लक्ष्मण ने वही किया जो उससे कहा गया था। उसने उस स्त्री से जा कर पूछा कि उसे क्या चाहिये था।

स्त्री बोली — "कुछ नहीं। कुछ नहीं।"

और अपना सिर हिलाते हुए वहॉ से चली गयी। वहॉ से वह रानी जी के पास आयी और बोली — "मैंने आपका काम कर दिया अब जैसा कि आपने मुझसे वायदा किया था मेरा इनाम मुझे दीजिये।" यह सुन कर रानी ने उसको सोने की मुहरों का दूसरा थैला भी दे दिया।

उधर लक्ष्मण जब उस स्त्री के पास से लौट कर आया तो राम ने पूछा "उसने क्या कहा। वह क्या चाहती थी।"

लक्ष्मण बोला — "उसने मुझसे कहा कि उसको कुछ नहीं चाहिये। वह कुछ नहीं चाहती थी।"

राम कुछ गुस्से से बोला — "यह कैसे हो सकता है। वह जरूर कुछ चाहती होगी। उसने तुमसे जरूर ही कुछ कहा होगा। वरना उसको बिना किसी काम के यहॉ आने की जरूरत ही क्या थी। यह कोई राज़ की बात है जो तुम मुझसे छिपा रहे हो। मैं तुमसे कहता हूॅ कि तुम मुझे वह बात बताओ।"

लक्ष्मण बेकार में ही कहता रहा कि उसको कुछ नहीं चाहिये था उसने मुझसे कुछ नहीं कहा पर राम मानने को तैयार नहीं हुआ। दोनों में झगड़ा हुआ दोनों लड़े और राम गुस्से में आ कर अपने पिता के पास दौड़ा गया।

राजा ने उसको खराब मूड में देखा तो पूछा — "क्या बात है मेरे बेटे।"

राम बोला — "पिता जी। मैं वज़ीर के बेटे से गुस्सा हूॅ। मैं उस लड़के से नफरत करता हूॅ। उसको मरवा दिया जाये और उसके मरने के सबूत में मुझे उसकी ऑखें ला कर दी जायें। नहीं तो मैं आज खाना नहीं खाऊॅगा।"

यह सुन कर राजा बहुत दुखी हुआ। राजा ने उसको बहुत समझाने की कोशिश की पर जब राम खाना खाने नहीं आया तो राजा चन्द्र ने अपने वज़ीर से कहा — "तुम अपने बेटे को यहॉ से

ले जाओ और उसे कहीं छिपा दो। आज दोनों में बहुत ज़ोर की लड़ाई हो गयी है।"

उसके बाद वह बाहर गया एक हिरन मारा और उसकी ऑखें राम को दिखाते हुए कहा — "देखो मेरे बेटे। तुम्हारे कहे अनुसार मैंने वजीर के बेटे को मार दिया है और उसकी ऑखें निकाल ली हैं।"

राम यह देख कर बहुत खुश हो गया और खुशी खुशी खाना खा लिया। पर कुछ दिन बाद ही उसको अपने साथी की याद आने लगी। अब उसके पास ऐसा कोई नहीं था जिसको वह कहानियॉ सुना सुना कर आनन्द लेता।

तब चार दिन तक लगातार उसने सपने में एक शीशे का महल देखा जिसमें एक राजकुमारी रहती थी जो संगमरमर जैसी सफेद थी।

उसने बहुत सारे अक्लमन्दों को इसलिये बुला भेजा ताकि वह अपने उस सपने का मतलब जान सके। पर कोई उसके सपने का कोई मतलब नहीं बता सका।

इस सुन्दर राजकुमारी के और अपने खोये हुए दोस्त के बारे में सोचते साचते वह और दुखी हो गया। वह सोचने लगा "इस मामले में मेरी सहायता करने वाला आज मेरे पास कोई नहीं है। अगर आज मेरा दोस्त होता तो वह कितनी जल्दी इस सपने का मतलब बता देता। ओह मेरे दोस्त। मेरे दोस्त। मेरे खोये हुए दोस्त।"

तभी राजा चन्द्र कमरे में आये तो उसने उनसे कहा — "पिता जी। मेहरबानी कर के मेरे दोस्त की कब्र मुझे दिखाइये ताकि मैं भी वहीं मर सकूँ।"

राजा चन्द्र बोले — "यह तुम क्या बेवकूफी की बात कर रहे हो? पहले तो तुमने विनती कर के अपने दोस्त को मरवाया और अब तुम उसकी कब्र पर मरना चाहते हो। इस सबका क्या मतलब है।"

राम बोला — "पर पिता जी। आपने उसको मार डालने का हुक्म ही क्यों दिया। जबसे मैंने उसको खोया है तबसे मैंने अपना दोस्त खो दिया है यहॉ तक कि मेरी ज़िन्दगी की खुशी सो गयी है। पर अब मुझे उसकी कब दिखाये वरना मैं कसम से मर जाऊँगा।"

राजा ने देखा कि उसका बेटा राम सचमुच में इस बात को बहुत महसूस कर रहा है तो उसने राम से कहा — "तुमको मुझे तुम्हारा हुक्म न मानने के लिये धन्यवाद देना चाहिये कि मैंने तुम्हारी बेवकूफी की इच्छा का पालन नहीं किया।

तुम्हारा पुराना साथी ज़िन्दा है। इसलिये अब तुम लोग फिर से दोस्त बन जाओ। तुमने जो ऑखें देखी थीं वह तुम्हारे इस दोस्त की नहीं बल्कि एक हिरन की थीं।"

इसके बाद राम लक्ष्मण की दोस्ती फिर से बन गयी।

एक दिन राम ने लक्ष्मण से कहा — "यह चार रात पहले की बात है कि मैंने एक अजीब सा सपना देखा। मैंने देखा कि एक घने

जंगल में मैं मीलों घूमता फिर रहा हूॅ। घूमते घूमते में एक गोले के पेड़ों की बगिया में आ गया हूॅ।

उसके बीच से हो कर मैं फिर एक अमरूद के पेड़ों के बागीचे में आ गया हूॅ और उसके बाद मैं एक सुपारी के बागीचे में आ गया। और सबसे बाद में एक कोपल के पेड़ों के बागीचे में आया।

इसके बाद फूलों का बागीचा था। वहॉ के माली ने मुझे एक फूलों का गुच्छा दिया। बागीचे के चारों तरफ एक नदी बह रही थी। उसके दूसरी तरफ कॉच का एक महल था जिसमें एक बहुत सुन्दर लड़की बैठी थी।

मैंने इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी। उसका शरीर जैसे संगमरमर का बना हुआ था। उसने बहुत सारे गहने पहने हुए थे। उसकी सुन्दरता को देख कर तो मैं बेहोश ही हो गया। बस उसके बाद मेरी ऑख खुल गयी।

ऐसा मेरे साथ चार बार हुआ पर अभी तक कोई मुझे यह नहीं बता सका है कि इसका मतलब क्या है।"

लक्ष्मण बोला — "मैं बता सकता हूॅ। कहीं ऐसी राजकुमारी मौजूद है जैसी कि तुमने देखी है। अगर तुम चाहो तो तुम उससे शादी कर सकते हो।"

राम तुरन्त बोला — "मगर कैसे? और तुमने मेरे इस सपने का क्या मतलब निकाला।"

वजीर का बेटा बोला — "अब जो मैं कहता हूॅ तुम वह सुनो। एक देश में जो यहॉ से बहुत दूर है एक राजा के राज्य के बीच में उस राजा की बेटी रहती है। बहुत सुन्दर बेटी। वह एक कॉच के महल में रहती है।

इस महल के चारों तरफ एक नदी बहती है और नदी के चारों तरफ एक फूलों का बागीचा है। उस बागीचे के चारों तरफ चार घने जंगल हैं – कोपल का सुपारी का अमरूद का और गोले का।

राजकुमारी चौबीस साल की है पर उसकी अभी शादी नहीं हुई है क्योंकि उसने यह तय कर रखा है कि वह उसी से शादी करेगी जो वह नदी कूद कर पार कर उसके किस्टल के महल में आ कर उससे मिलेगा।

और हालॉकि हजारों ने यह कोशिश कर ली है पर वे सब बड़ी तकलीफ से मारे गये हैं। या तो वे नदी में डूब गये हैं या गिरने से उनकी गर्दन की हड्डी टूट गयी है। इसलिये जो कुछ तुमने सपने में देखा है वह सच है।"

राम बोला — "क्या हम इस देश पहुॅच सकते हैं।"

उसके दोस्त ने जवाब दिया — "हॉ हॉ क्यों नहीं। बल्कि तुम्हें ऐसा ही करना चाहिये। तुम अपने पिता के पास जाओ और जा कर उनसे कहो कि तुम अब दुनियॉ देखना चाहते हो। तुम उनसे न तो कोई हाथी लेना और न कोई नौकर। बस उनसे उनका पुराना लड़ाई वाला घोड़ा ले लेना।"

इस बातचीत के बाद राम अपने पिता के पास गया और बोला — "पिता जी मैं आपसे विनती करता हूॅ कि मुझे जाने की इजाज़त दी जाये। मैं वजीर के बेटे के साथ जा कर दुनियॉ देखना चाहता हूॅ।"

पिता बोले — "ठीक है। पर तुम्हें साथ के लिये क्या चाहिये। क्या तुम्हें हाथी चाहिये, कितने? नौकर चाकर, वे भी कितने?"

बेटा बोला — "मुझे कुछ नहीं चाहिये पिता जी। बस आप अपना लड़ाई वाला घोड़ा मुझे दे दीजिये ताकि उस पर बैठ कर मैं यात्रा कर सकूॅ।"

राजा बोला — "ठीक है बेटा।"

और उस घोड़े पर सवार हो कर राम और लक्ष्मण अपनी यात्रा पर चल दिये।

हजारों मील चलने के बाद एक दिन वे गोले के पेड़ों के बागीचे में आ गये। उसके बाद एक अमरूद के पेड़ों के बागीचे में फिर सुपारी के पेड़ों के बागीचे में और आखीर में कोपल के बागीचे में आ गये।

उसके बाद वे एक बहुत सुन्दर बागीचे में घुसे जहॉ वहॉ के माली ने उनको फूलों का एक बड़ा सा गुच्छा दिया। इससे उनको लगा कि उस जगह के आस पास आ पहुॅचे हैं जहॉ के लिये वे यहॉ तक आये थे।

अब ऐसा हुआ क्योंकि उस नहर के पानी में बहुत सारे लोग अपनी जान दे चुके थे जो राजकुमारी के महल के कॉच के महल के चारों तरफ बनी हुई थी राजा ने एक नियम बना दिया था कि शादी की इच्छा रखने वाला कोई भी राजा के बिना जाने और बिना इजाज़त के उसे पार करने की कोशिश नहीं करेगा।

और अगर कोई भी राजा या राजकुमार वहॉ बेवजह घूमता फिरता नजर आया तो उस देश के नियम के अनुसार उसको जेल में बन्द कर दिया जायेगा।

अब इस बारे में राजा और वजीर के बेटे को कुछ भी मालूम नहीं था तो जब वे बागीचे के बीच में पहुँचे तो उनको उनके सामने ही वह बड़ी नदी नजर आयी। वह उस महल के बिल्कुल सामने ही थी।

वे दोनों आपस में सोचने लगे कि अब आगे क्या किया जाये कि तभी राजा के नौकर वहॉ आये और उन दोनों को पकड़ कर ले जा कर जेल में बन्द कर दिया।

लक्ष्मण बोला — "यह तो बड़ा गड़बड़ हो गया।"

राम भी एक लम्बी सॉस ले कर बोला — "हॉ सो तो है। यह तो हमारे सपनों का बड़ा दुखी अन्त है। सोचो यहॉ से बच कर भागने का कोई तरीका है क्या।"

लक्ष्मण बोला — "हॉ है। मैं हर मौके पर कोशिश करूँगा।"

यह कह कर वह सन्तरी की तरफ चला गया जो जेल का पहरा दे रहा था। उसने उससे कहा — "हम लोग यहॉ बन्द हैं और बाहर नहीं जा सकते। यह लो तुम कुछ पैसे लो और बाहर जा कर बस इतना चिल्ला दो कि "माली की गाय भाग गयी है।"

सन्तरी ने सोचा कि यह तो पैसे कमाने का बड़ा अच्छा मौका है सो पैसे ले कर वह वहॉ से चला गया और उसने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था।

लक्ष्मण ने जैसा सोचा था वैसा ही हुआ। माली की पत्नी ने सन्तरी की पुकार सुनी तो सोचा "अरे सन्तरी फिर से जेल का कमरे पर पहरा दे रहा है। ऐसा लगता है कि जेल में कोई आया है। मुझे यकीन है कि ये वही दोनों नौजवान राजा हैं जो मुझे सुबह बागीचे में मिले थे। कम से कम मैं उनको आजाद कराने की कोशिश तो कर सकती हूॅ।"

सो उसने दो बूढ़े भिखारियों को साथ लिया कुछ फूल और मिठाई साथ ली और घर से चलने के लिये तैयार हुई जैसे कि मन्दिर जा रही हो। यह मन्दिर उसी कोने में था जहॉ उन बन्दियों का जेल का कमरा था।

सन्तरियों ने सोचा कि यह अपने दो साथियों को साथ ले कर शायद मन्दिर पूजा करने जा रही होगी से उन्होंने उनको बिना किसी रोक टोक के अन्दर जाने दिया। जैसे ही वे उस कोने में घुसीं तो उन्होंने जेल के कमरे का दरवाजा खोला और राम लक्ष्मण से उन

दोनों भिखारियों से अपने कपड़े बदलने के लिये कहा जो उन्होंने बहुत जल्दी कर लिया। माली की पत्नी ने भिखारियों को जेल में छोड़ा वह राम लक्ष्मण को सुरक्षित रूप से अपने घर ले आयी।

जब वे घर पहुँच गये तब वह उनसे बोली — "तुमको मालूम होना चाहिये कि हमारे राजा को सलाम किये बिना और उनकी इजाज़त लिये बिना नदी के किनारे जा कर तुम लोगों ने बहुत बड़ी गलती की।

यह कानून यहॉ का इतना सख्त कानून है कि अगर मैंने तुम्हें बचा कर लाने की कोशिश नहीं की होती तो तुम्हें बहुत समय तक जेल में रह जाना पड़ जाता। हालॉकि मुझे लगा था कि यह सब तुमसे अज्ञानता में हुआ है।

मैं तुमको छुड़ाना चाहती थी पर कल जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी तुम लोग यहॉ से निकल कर राजा के दरबार में सलाम मारना।"

अगले दिन सन्तरी अपने दोनों बन्दियों को राजा के पास ले गये — "देखिये राजा साहब ये दो बन्दी राजकुमार हैं जिनको हमने कल रात गिरफ्तार किया है। ये लोग कानून के खिलाफ नदी के किनारे घूम रहे थे।"

पर जब उन्होंने बन्दियों की तरफ देखा तो वहॉ तो केवल दो भिखारी थे जिनको सब कोई जानते थे। वे महल के फाटक पर भी कई बार देखे गये थे।

राजा उनको देख कर हॅस पड़ा बोला — "अरे बेवकूफो। तुम लोग ज़रा कुछ ज़्यादा ही सावधान हो गये हो। आओ यहॉ आओ और अपने नौजवान राजाओं को देखो। क्या तुम इनको इनकी शक्ल से भी नहीं पहचान सके।"

इस पर वे सन्तरी शर्म के मारे मुॅह लटका कर वहॉ से चले गये। माली की पत्नी की बात सुन कर राम और लक्ष्मण अगले दिन सुबह ही राजा के दरबार में गये। राजा ने उनका बड़ी शान से स्वागत किया।

पर जब उसने उनकी यात्रा का उद्देश्य सुना तो उसने अपना सिर ना में हिलाया और कहा — "मेरे प्यारे साथियो। तुम अपने इन इरादों को अपने से दूर ही रखो। अगर तुम मेरी बेटी भागीरथी[4] को जीतना ही चाहते हो तो मैं एक दोस्त की हैसियत तुमको सलाह देता हूॅ कि तुम इसके लिये कोशिश न ही करो तो अच्छा है।

तुमको तो कहीं और सैंकड़ों राजकुमारियॉ मिल जायेंगी जो तुमसे शादी करने के लिये तैयार हो जायेंगी। तुम यहॉ किसलिये आये हो जहॉ हजारों तुम्हारे जैसे सुन्दर राजकुमारों ने अपनी ज़िन्दगी गॅवा दी है। तुम मेरी बेटी के बारे में सोचना छोड़ दो। वह बहुत ही जिद्दी लड़की है।"

[4] Baragaruttee – a name of River Ganges. Infact this word should be Bhageerathee which is actually Ganges' other name.

पर राम भी उस लड़की से शादी की जिद करता ही रहा। सो राजा ने उसको बेमन से इजाज़त दे दी। राज्य भर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि एक और राजकुमार अपनी जान दॉव पर लगाने जा रहा है। मेहरबानी कर के उसके लिये मन से प्रार्थना करें ताकि वह अपने उद्देश्य में कामयाब हो जाये।

राम ने बहुत अच्छे कपड़े पहने अपने पिता के घोड़े पर चढ़ा और उसको ऐड़ लगायी और नदी के ऊपर कूद गया। घोड़ा ऊपर हवा में उड़ा जैसे कोई चिड़िया उड़ती है नदी पार की और सामने वाले कॉच के महल के बीच के ऑगन में जा कर उतर गया।

पर राम को लगा कि यह काम कोई बहुत ज़्यादा अच्छा नहीं हुआ सो यह काम उसने तीन बार किया। यह देख कर राजा बहुत खुश हुआ उसने राम के घोड़े को सहलाया राम को चूमा और कहा — "स्वागत है तुम्हारा ओ मेरे दामाद।"

उसके बाद दोनों की शादी हुई। सारा शहर रोशनी से चमकाया गया। एक दूसरे को भेंटें दी गयीं। वे सब फिर कुछ दिन तक सुख से रहे।

आखिर एक दिन राम ने अपने ससुर जी से कहा — "जनाब। मैं यहॉ बहुत खुश खुश रह रहा हूॅ पर अब मैं अपने माता पिता से मिलने के लिये अपने देश जाना चाहता हूॅ।"

राजा बोला — "मेरे बेटे। तुम कहीं भी जाने के लिये आजाद हो पर मेरे तुम्हारे सिवा और कोई बेटा नहीं है। और न तुम्हारी

पत्नी के अलावा और कोई बेटी ही है इसलिये मैं तुम्हें अपनी ऑखों से दूर नहीं करना चाहता। मुझे इसमें बहुत दुख होता है।

कभी कभी मुझसे मिलने के लिये आते रहना मुझे बहुत खुशी होगी। तुम्हारे लिये मेरे दरवाजे हमेशा के लिये खुले हैं। तुम्हारा यहॉ हमेशा स्वागत है।"

राम ने कभी कभी वहॉ लौटने का वायदा किया। राजा से बहुत सारी भेंटें और यात्रा के लिये जरूरत का सारा सामान ले कर वह अपनी पत्नी और साथी लक्ष्मण को साथ ले कर वह अपने देश की तरफ चल दिया। जाने से पहले राम लक्ष्मण ने माली की पत्नी को भी बहुत इनाम दिया जिसने उनकी इतनी सहायता की थी।

पहली शाम को यात्री लोग जंगल के बाहर की तरफ गोले के बागीचे की हद तक पहुॅच गये। वहॉ उन्होंने रात बिताने की सोची। राम और उसकी पत्नी अपने तम्बू में चले गये। पर लक्ष्मण जो राम को बहुत ज़्यादा प्यार करता था उनके दरवाजे पर रात भर पहरा देता रहा।

वह रात भर एक पेड़ के नीचे बैठा रहा। कुछ समय बाद दो उल्लू उसके सिर के ऊपर से उड़े और उस पेड़ की सबसे ऊॅची डाल पर जा कर बैठ गये और एक दूसरे से बात करने लगे।

वजीर का बेटा बहुत सारे आदमियों से कहीं ज़्यादा होशियार था। वह उन पक्षियों की भाषा जानता था। मादा उल्लू पति उल्लू

से बोली "प्रिये मुझे कोई कहानी सुनाओ। तुम्हें बहुत दिन हो गये मुझे कोई कहानी सुनाये हुए।"

यह सुन कर उसके पति ने कहा — "कहानी? मैं तुम्हें क्या कहानी सुना सकता हूॅ। क्या तुम इन लोगों को देख रही हो जो इस पेड़ के नीचे कैम्प लगाये हुए हैं। क्या तुम इनकी कहानी सुनना पसन्द करोगी?"

मादा उल्लू राजी हो गयी और पति उल्लू ने कहना शुरू किया — "पहले इस बेचारे वज़ीर की तरफ देखो। यह बहुत ही वफादार और सेवा करने वाला आदमी है। इसने अपने राजा के लिये कितना किया है। पर न तो इसे अभी तक इसका कोई इनाम मिला है और ना ही आगे मिलेगा।"

यह सुन कर तो लक्ष्मण का ध्यान पूरी तरह से उधर चला गया। उसने सोचा जो कुछ भी वह सुनेगा वह उसे लिख लेगा सो उसने अपना लिखने का सामान निकाला और उसे लिखने का इरादा किया।

पति उल्लू ने राम और लक्ष्मण के जन्म से उनकी कथा कहनी शुरू की। फिर उनकी दोस्ती के बारे में बात की। उनका झगड़ा उनकी लड़ाई फिर उनका समझौता और उसके बाद राजकुमारी को पाने के लिये जो उन्होंने तकलीफें सहीं उनके बारे में बताया।

और आखीर में उस दिन का भी हाल बताया जिस दिन उन्होंने अपने घर वापस जाने का फैसला किया।

मादा उल्लू ने पूछा — "अब इसके बाद इस बेचारे वज़ीर की किस्मत में क्या लिखा है।"

उसके पति ने जवाब दिया — "इस जगह से आगे यह फिर राजा और रानी के साथ आगे बढ़ता रहेगा। जब तक ये लोग राजा चन्द्र के राज्य के पास पहुँचेंगे तो वहॉ से जाते समय ये एक बहुत बड़े बरगद के पेड़ के नीचे से गुजरेंगे।

लक्ष्मण को वहॉ सबसे ऊँची डाल के आस पास कुछ डालियों को बड़े खतरनाक ढंग से हिलते डुलते दिखायी देगा तो वह राजा और रानी के पास दौड़ा जायेगा और जल्दी से उनको वहॉ से हटायेगा जो उनको यकीनन ही मार देता। वह पेड़ फिर बहुत ज़ोर की आवाज करते हुए धरती पर गिर जायेगा।

पर उसके यह काम करने के बावजूद राजा अपनी किस्मत से नहीं बच पायेगा। वज़ीर ने यह सब लिख लिया।

मादा उल्लू ने पूछा — "फिर क्या।"

उल्लू बोला — "फिर क्या। फिर यह कि जब राजा और रानी अपने लोगों के साथ और आगे चलेंगे और महल के दरवाजे की महराब के नीचे से गुजरेंगे तो वज़ीर देखेगा कि दरवाजे की छत तो असुरक्षित बनी है। तो वह वहॉ भी राजा और रानी को सुरक्षित रूप से निकाल लेगा और उसके बाद वह दरवाजा गिर जायेगा।

मादा उल्लू ने पति उल्लू से पूछा — "उसके बाद।"

पति उल्लू बोला — "उसके बाद जब राजा और रानी सो जायेंगे तब वज़ीर उनका पहरा दे रहा होगा। तो वह देखेगा कि एक बहुत बड़ा कोबरा सॉप दीवार से नीचे उतरता हुआ देखेगा जो धीरे धीरे रानी की तरफ बढ़ेगा।

वह उसे अपनी तलवार से मार देगा पर इत्तफाक से उस कोबरे के खून की एक बूँद रानी के गोरे माथे पर पड़ जायेगी। वज़ीर अपने हाथ से उसको पोंछने की हिम्मत नहीं कर पायेगा।

इसकी बजाय वह अपना चेहरा कपड़े से ढकेगा ताकि वह अपने होठों से वह बूँद चाट सके। पर उसके इस काम के लिये राजा राम उससे गुस्सा हो जायेगा और इस वजह से वह पत्थर का हो जायेगा।"

मादा उल्लू ने पूछा — "तो क्या फिर वह हमेशा के लिये पत्थर का बना रहेगा?"

पति उल्लू ने कहा — "नहीं वह हमेशा के लिये तो पत्थर नहीं बना रहेगा। पर हॉ वह आठ साल तक ऐसा ही रहेगा। फिर जब राजा के बच्चा होगा तो ऐसा होगा कि एक दिन वह बच्चा फर्श पर खेल रहा होगा तो वह उसको पकड़ लेगा। बस उसी के छूने से वह फिर से ज़िन्दा हो जायेगा।

पर मैंने तुमको आज काफी बता दिया है चलो अब चूहे पकड़ते हैं – टूहू टूहू।" चिल्लाते हुए वे वहॉ से उड़ गये।

लक्ष्मण ने यह सब अपने पास पहले ही लिख लिया था। यह सब जान कर उसका दिल भारी हो गया। फिर उसने सोचा कि हो सकता है कि यह सब सच नहीं भी हो इसलिये उसने यह सब किसी से भी नहीं कहा। अगले दिन उन्होंने फिर अपनी यात्रा शुरू कर दी।

अब उल्लू ने जैसा कहा था वैसा ही होने लगा। जब ये सब लोग एक बड़े बरगद के पेड़ के नीचे से गुजरने लगे तो वज़ीर ने देखा कि वह पेड़ तो बहुत ही खतरनाक और असुरक्षित है।

उसने सोचा कि अरे उल्लू तो ठीक कह रहा था। उसने तुरन्त ही राजा और रानी का हाथ पकड़ा और उनको उसके नीचे से बाहर की तरफ ले गया। जैसे ही उसने ऐसा किया कि उस पेड़ की एक बड़ी सी शाख चरचरा कर नीचे गिर पड़ी।

इसके कुछ देर बाद वे अपने राज्य की हद के पास पहुॅचे तो वहॉ अपने महल की मेहराब के नीचे से निकल रहे थे कि वज़ीर ने देखा कि मेहराब के कुछ पत्थर उसमें से बस निकलने ही वाले थे।

उसने फिर सोचा वह उल्लू तो सच ही बोल रहा था सो उसने जल्दी से राम और भागीरथी के हाथ पकड़े और उन दोनों को उसके नीचे से निकाल दिया। उनके वहॉ से हटते ही वह दरवाजा गिर पड़ा। सो ठीक समय से उसने उनकी जान बचा ली।

घर में पहुॅचने पर राजा चन्द्र और उनके वजीर ने उनका बड़े ज़ोर शोर से स्वागत किया।

कुछ दिनों बाद की बात हे कि एक रात राजा रानी सो रहे थे और वह नौजवान वज़ीर बाहर पहरा दे रहा था कि उसने देखा कि बहुत बड़ा कोबरा रानी के सिर के ऊपर आ रहा था।

वजीर को लगा कि उसके बुरे दिन अब शुरू होने वाले हैं। अब मेरी किस्मत में अगर यही है तो यही है। मैं अपना काम करूँगा।

यह सोच कर उसने अपनी पोशाक में से अपने और राजकुमार के जीवन का इतिहास, यानी बचपन से ले कर अब तक जो उल्लू ने बोला था और उसने लिखा था राम के पास रख दिया। फिर उसने अपनी तलवार निकाली और कोबरा को मार दिया।

कोबरा सॉप के खून की कुछ बूँदें रानी के माथे पर गिर पड़ीं। उसने अपने चेहरे पर कपड़ा ढका और सॉप के खून की बूँदों को चाटने के लिये तैयार हुआ कि उसी समय राजा की ऑख खुल गयी।

राजा ने पूछा — "यह तुम क्या कर रहे हो। ओ लक्ष्मण तुम तो मेरे भाई के समान हो। तुमने तो मुझे कितनी परेशानियों से बचाया है फिर तुम मेरे साथ ऐसा बर्ताव क्यों कर रहे हो कि तुम उसके पवित्र माथे को चूम रहे हो।

अगर तुम्हें उससे प्यार था तो तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया जब तुमने उस कॉच के महल में देखा था। उस समय मैं वहॉ से

चला जाता ताकि तुम उससे शादी कर सको। ओ मेरे भाई ओ मेरे भाई तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया।"

ऐसा कह कर उसने अपना चेहरा अपने हाथों से ढक लिया। उसने सिर उठाया वज़ीर की तरफ देखा पर उधर से कोई जवाब नहीं मिला क्योंकि वह तो पत्थर का बन चुका था।

तब राम ने पहली बार अपने पास रखा हुआ एक कागज देखा जो लक्ष्मण ने उसके पास रख दिया था। उसने उसे पढ़ा तो उसे लगा कि लक्ष्मण ने बचपन से ही उसके लिये क्या कुछ नहीं किया। उसको पढ़ते पढ़ते वह फूट फूट कर रोने लगा। वह उस मूर्ति के पैरो में झुक गया। उसके पत्थर के घुटने पकड़ कर बहुत रोया।

जब सुबह हुई और राजा चन्द्र और रानी मॉ वहॉ आये वह तभी भी वह वहॉ रो रहा था और उस मूर्ति से माफी मॉग रहा था।

राजा और रानी ने उससे पूछा कि "यह तुमने क्या किया।"

जब उसने उनको बताया तो राम के पिता उस पर बहुत गुस्सा हुए। उन्होंने कहा कि "क्या इतना काफी नहीं था कि तुमने उसको अपने गुस्से की वजह से पहले मरवा डाला था। पर अब तुम्हारे बेइज़्ज़त करने की वजह से वह मूर्ति बन गया। तुम हमेशा ही उसके साथ बुरा करते रहते हो।"

आठ साल बीत गये वजीर अपनी पुरानी हालत में नहीं आया। रोज राजा राम और रानी भागीरथी दोनों उसके पास बैठे हुए उसको

देखते रहते। वे उसके आगे हाथ जोड़ते उसका नाम ले ले कर उससे माफी मॉगते रहते।

ऐसा करते करते आठ साल बीत गये। तब भागीरथी को बच्चे की आशा हुई तो नवें महीने में उसने एक बेटे को जन्म दिया। उसके नौ महीने बाद जब वह घुटनों चलने लगा तो उसके माता पिता उस पर ध्यान देने लगे।

उन्होंने उसको इस आशा में मूर्ति के पास बिठाना शुरू कर दिया कि एक दिन वह उसको छू लेगा जैसा कि उल्लू ने कहा था।

वे तीन महीने तक देखते रहे पर कुछ नहीं हुआ। आखिर जब बच्चा एक साल का हुआ और चलना सीखने लगा तब एक दिन वह मूर्ति के पास पहुॅच गया और उसके पैरों की तरफ बढ़ने लगा।

उसने अपनी बॉहें फैलायीं और मूर्ति का पैर पकड़ लिया। जैसे ही उसने मूर्ति का पैर छुआ वजीर ज़िन्दा हो गया। उसने तुरन्त ही झुक कर बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया जिसने उसे ज़िन्दा किया था। और बहुत देर तक उसे चूमता रहा।

राम और भागीरथी की खुशी का भी कोई ठिकाना नहीं था। उनको अपना पुराना दोस्त मिल गया था। राम और लक्ष्मण के माता पिता भी बहुत खुश थे।

राजा चन्द्र ने वजीर से कहा — "देखो मेरा बेटा अपनी पत्नी और बच्चे के साथ खुश है जबकि तुम्हारे बेटे का कोई भी नहीं है।

तुम अब उसके लिये कोई लड़की देखो ताकि हम उसकी शादी भी देख लें।

सो वजीर ने अपने बेटे के लिये एक सुन्दर दयालु लड़की देख ली। उन दोनों की शादी राम की शादी से भी ज़्यादा शानदार तरीके से हुई। उसके बाद सब बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

3 फ़कीर चन्द[5]

पोम और पील जैसी कहानियों के इस संग्रह की यह कहानी भी भारत की लोक कथाओं से ली गयी है। यह वहॉ के बंगाल प्रान्त में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक राजा का बेटा था और एक वज़ीर का बेटा था। वे दोनों आपस में एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे। इतना प्यार करते थे कि वे एक साथ बैठते थे एक साथ उठते थे। एक साथ चलते थे एक साथ खाना खाते थे। एक साथ सोते थे और एक साथ ही उठते थे।

इस तरह से उन दोनों ने एक दूसरे के साथ रहते हुए कई साल बिता दिये। एक दिन दोनों के मन में यह इच्छा हुई कि वे दूर देशों की सैर करें। उन्होंने अपना अपना सामान सॅभाला और अपनी यात्रा पर निकल पड़े।

हालॉकि वे दोनों बहुत अमीर थे क्योंकि उनमें एक राजा का बेटा था और एक वज़ीर का बेटा था फिर भी उन्होंने अपने साथ एक भी नौकर नहीं लिया। वे बस अपने अपने घोड़ों पर सवार हुए और चल दिये।

[5] Phakir Chand. Taken from the book “Folktales of Bengal” by Lal Behari Dey. 1889. Its Hindi translation has been published by NBT, Delhi. 2020.

उनके घोड़े देखने में सुन्दर थे। वे पक्षीराज नस्ल[6] के थे। राजा का बेटा और वज़ीर का बेटा दोनों कई दिनों तक चलते रहे।

उन्होंने बड़े बड़े धान के खेत पार किये। वे शहरों और गॉवों में से हो कर गये। बिना पेड़ों और बिना पानी वाले रेगिस्तानों में से गुजरे। ऐसे जंगलों में से गये जहॉ चीते और भालू जैसे जंगली जानवर रहते थे।

एक शाम वे ऐसी जगह आ पहुँचे जहॉ न कोई आदमी दिखायी दे रहा था और न उनका कोई घर। धीरे धीरे अँधेरा बढ़ता जा रहा था सो वे एक घने पेड़ के नीचे अपने अपने घोड़ों से उतर गये। घोड़ों को उन्होंने उस पेड़ के तने से बॉध दिया।

वे फिर उस पेड़ पर चढ़ गये और उसकी शाखों पर बैठ गये। उस पेड़ की शाखें काफी सारी पत्तियों से ढकी हुई थीं। यह पेड़ एक तालाब के किनारे लगा हुआ था और उस तालाब का पानी किसी कौए की ऑख जितना साफ था।

राजा का बेटा और वज़ीर का बेटा दोनों वहॉ जितनी आरामदेह हालत में हो सकता था उतनी आरामदेह हालत में बैठ गये। वह रात उन्होंने वहीं बैठ कर गुजारने का निश्चय किया।

वे वहॉ के अकेलेपन के डर से कभी फुसफुसा कर बात करते तो कभी बिल्कुल चुप हो जाते। एक बार तो उनको नींद का झटका

[6] Pakshi means bird, and Raj means King. So Pakshiraj means the “King of the Birds” species.

भी आया कि तभी किसी भयानक दृश्य से उनकी ऑख भी खुल गयी।

उन्होंने सुना कि तालाब के बीच से एक बहुत ही भयानक आवाज आ रही है जैसे कहीं से बहुत सारा पानी दौड़ा जा रहा हो। उन्होंने उधर देखा तो देखा कि एक बहुत बड़े साइज़ का सॉप उस पानी में से निकल रहा है और उसका फन भी बहुत बड़ा है। उसका शरीर कई रौड[7] में फैला पड़ा था।

पानी में से निकल कर वह किनारे की तरफ तैर आया और फुंकार मारता हुआ इधर उधर घूमने लगा।

पर राजा के बेटे और वज़ीर के बेटे का ध्यान उसकी जिस चीज़ ने सबसे ज़्यादा खींचा वह थी उसके सिर पर जड़ी हुई एक चमकीली मणि[8]। वह उसके सिर पर हजारों हीरों से भी ज़्यादा तेज़ चमक रही थी।

उसने सारे तालाब को उसके किनारों को और उसके चारों तरफ जितनी भी चीज़ें थीं सबको चमका रखा था। उन लोगों ने इससे पहले ऐसी कभी कोई चीज़ देखी नहीं थी।

सॉप ने अपने माथे से वह मणि निकाली और उसको जमीन पर रख कर फुंकार मारता हुआ वह खाने की खोज में इधर उधर घूमने लगा।

---

[7] Rod is measure of length varying locally from 5 1/2 yards to 8 yards. One square Rod = 25.3 Square Mile. It is a unit of land measure also – equal to 40 square Rods (or 1/4th Acre).

[8] Mani is a gem. This is Snake gem. Many large snakes have gem on their heads. It is said that these gems are lucky for certain purposes.

पेड़ पर बैठे हुए दोनों दोस्त सारे में फैली उस चमकीली रोशनी की बहुत तारीफ करने लगे। उन्होंने पहले ऐसी कोई चीज़ कभी देखी तो नहीं थी हॉ सुनी जरूर थी कि ऐसी कोई चीज़ है जो सात राजाओं के खजाने के बराबर है।

पर उनका यह आश्चर्य बहुत जल्दी ही दुख और डर में बदल गया क्योंकि वह सॉप फुंकार मारता हुआ उसी पेड़ की जड़ के पास आ गया था जिस पेड़ की शाख पर वे बैठे हुए थे। वहॉ आ कर उसने एक एक कर के उनके दोनों घोड़ों को खा लिया था।

उनको डर था कि उसके अगले शिकार अब वही होंगे। तभी उन्होंने देखा कि वह भयानक सॉप घोड़े खा कर वहॉ से चला गया और दूर जा कर घूमने लगा। यह देख कर उनकी जान में जान आयी।

वज़ीर के बेटे ने उस सॉप को वहॉ से गया देख कर सोचा कि वह उसकी चमकीली मणि उठा ले। उसने सुन रखा था कि नागमणि का चमकीलापन छिपाने का केवल एक ही तरीका था कि उसको गाय के गोबर में या फिर घोड़े की लीद में छिपा लिया जाये।

उसको यह भी दिखायी दे गया कि उनके घोड़ों की लीद तो उस पेड़ की जड़ के पास ही पड़ी थी। सो वह बहुत ही धीमे कदम रखता हुआ पेड़ से नीचे उतरा, घोड़े की लीद नीचे से उठा कर उस मणि पर डाली और फिर से पेड़ पर चढ़ गया।

सॉप ने जब अपने सिर की मणि की रोशनी नहीं देखी तो वह फुंकार मारता हुआ वहीं आया जहॉ उसने उस मणि को छोड़ा था। उसकी फुंकार, चिल्लाहट और आहों की आवाज बहुत ही भयानक थी।

जहॉ वह मणि घोड़े की लीद के नीचे पड़ी थी वहॉ वह चक्कर काटे जा रहा था। लगता था कि अपनी मणि के बिना वह परेशान था। पर फिर अपनी मणि न पा कर कुछ ही देर में वह मर गया।

अगली सुबह राजा का बेटा और वजीर का बेटा दोनों पेड़ से नीचे उतरे और वहॉ गये जहॉ वह मणि रखी हुई थी। वह मणि तो वहीं थी पर गोबर के नीचे वह ताकतवर सॉप मरा पड़ा था।

वज़ीर के बेटे ने वह नागमणि घोड़े की लीद से निकाल कर अपने हाथ में ली और दोनों उसे धो कर साफ करने के लिये तालाब पर गये।

जब उसके ऊपर से घोड़े की सारी लीद साफ हो गयी तो वह मणि फिर से पहले की तरह से चमकने लगी। उसकी रोशनी में तालाब की पूरी तली चमक रही थी। उसमें वे मछलियॉ भी चमक रही थीं जो उस तालाब में तैर रही थीं।

पर उनका सबसे बड़ा आश्चर्य जो उन्होंने उस मणि की चमक में देखा वह था तालाब की तली में एक महल। उसकी दीवारों की मोटाई से लग रहा था कि वह एक शानदार महल था।

वज़ीर के साहसी बेटे ने राजा के बेटे से कहा कि उनको तालाब के पानी में डुबकी मार कर महल में जाना चाहिये।

सो वे दोनों उस पानी में डुबकी मार गये। नागमणि वज़ीर के बेटे के हाथ में थी। एक पल में ही वे महल के दरवाजे पर खड़े थे। महल का दरवाजा खुला था पर वहॉ न तो कोई धरती का आदमी ही था और ना ही कोई दैवीय आदमी था।

वे दरवाजे के अन्दर चले गये तो एक सुन्दर से बागीचे में आ गये। वहॉ बहुत तरीके के बहुत सारे फूल लगे थे। न तो राजा के बेटे ने और न ही वज़ीर के बेटे ने ही इतने सारे फूल पहले कभी देखे थे।

वहॉ बहुत सारे तरीके के गुलाब थे। चमेली मल्लिका बेला थे। खुशबुओं का राजा चम्पक था। कमल थे। और दूसरे हजारों तरह के खुशबूदार फूल थे। और ऐसा लग रहा था जैसे हर तरह के फूल भी वहॉ बहुत सारे थे।

सैंकड़ों की तादाद में गुलाब की झाड़ियॉ थीं। चमेली भी कई एकड़ जमीन में फैली पड़ी थी। और भी कई तरह के फूल बहुत दूर दूर तक लगे हुए थे। क्योंकि सब पौधों पर फूल आ रहे थे, सब खुशबूदार थे और वे सब खिल रहे थे सो सारी हवा में खुशबू ही खुशबू भरी पड़ी थी।

इस खुशबू के स्वर्ग से निकल कर वे घर की तरफ बढ़े जिसके चारों तरफ बहुत बड़े बड़े पेड़ लगे हुए थे। वे घर के दरवाजे पर

जा कर खड़े हो गये। तो उनको लगा कि वह तो एक परियों का घर था। उसकी दीवारें सोने की थीं और उनमें यहॉ वहॉ चमकदार हीरे लगे हुए थे।

रास्ते में उनको कोई आदमी नहीं मिला – न तो धरती का कोई आदमी और ना ही कोई और। अब वह घर के अन्दर चले गये। वह घर तो बहुत कीमती चीज़ों से और बहुत सारा सजा हुआ था।

वे लोग उसमें एक कमरे से दूसरे कमरे में घूमते रहे पर उन्होंने वहॉ देखा किसी को नहीं। ऐसा लग रहा था जैसे वह कोई सुनसान महल हो।

आखिर वह एक कमरे में आ पहुॅचे जिसमें एक नौजवान लड़की एक सोने के पलंग पर लेटी हुई थी। ऐसा लगता था जैसे वह वहॉ सो रही थी।

वह बहुत सुन्दर थी। उसका रंग लाल और सफेद का मिला जुला रंग था। उसकी उम्र सोलह साल थी। राजा के बेटे ने और वजीर के बेटे ने दोनों ने उसे देखा।

उन्हें वहॉ खड़े हुए बहुत देर नहीं हुई थी कि उस सुन्दर लड़की ने अपनी ऑखें खोलीं। उसकी ऑखें तो हिरनी की ऑखें जैसी थीं।

अपने सामने दो अजनबियों को खड़े देख कर वह बोली — "ओ बदकिस्मत लोगों, तुम लोग यहॉ कैसे आये। चले जाओ यहॉ से चले जाओ। यह एक बहुत ही ताकतवर सॉप का घर है। उसने

मेरे माता पिता भाइयों और दूसरे रिश्तेदारों को तो खा ही लिया है। अब बस अपने परिवार में केवल मैं ही अकेली बची हूॅ।

तुम दोनों अपनी जान बचा कर भागो नहीं तो वह ताकतवर सॉप तुम दोनों को भी खा जायेगा।"

तब वज़ीर के बेटे ने राजकुमारी को बताया कि कैसे वह सॉप अब मर गया है, कैसे उसने और उसके दोस्त ने उसकी मणि उससे ले ली है और फिर कैसे वे उसकी रोशनी से ही इस महल आये हैं।

यह सुन कर उसने दोनों अजनबियों को अपने को उस भयानक सॉप से आजाद कराने के लिये धन्यवाद दिया और उनसे उस घर में रहने के लिये और उसको कभी छोड़ कर न जाने के लिये प्रार्थना की। राजा के बेटे और वज़ीर के बेटे ने उसकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली।

राजा के बेटे को उसकी सुन्दरता से प्यार हो गया था सो कुछ समय बाद उसने उससे शादी कर ली। क्योंकि वहॉ कोई पंडित तो था नहीं सो दोनों की शादी एक दूसरे के गले में फूलों की माला डाल कर ही हो गयी।

राजा का बेटा राजकुमारी के साथ रह कर बहुत ही खुश हो गया। वह जितनी सुन्दर थी उतनी ही अपने व्यवहार में भी बहुत नम्र थी। और हालॉकि वजीर के बेटे की पत्नी सामान्य दुनियॉ में रह रही थी फिर भी वह अपने दोस्त की खुशियों में शामिल था।

धीरे धीरे समय गुजरता रहा कि एक दिन राजा के बेटे ने अपनी दुनियॉ में अपने घर जाने का विचार किया। और जैसा कि उसको एक राजा के बेटे के नाते चाहिये था उसको राजकुमारी के साथ शानो शौकत के साथ वहॉ जाना था।

इसके लिये यह सोचा गया कि पहले वजीर का बेटा नीचे की दुनियॉ से ऊपर राजा के पास जाये और वहॉ से उस खुश जोड़े के लिये नौकर चाकर घोड़े हाथी आदि सवारियॉ ले कर आये तब वे वहॉ से जायें।

यह काम केवल नागमणि ही कर सकती थी। राजा के बेटे ने हाथ में नागमणि ली और वज़ीर के बेटे को ऊपर तक छोड़ने के लिये उसके साथ ऊपर की दुनियॉ तक गया।

वहॉ उसको विदा कह कर वह अपनी सुन्दर पत्नी के पास उस जादू पड़े महल में लौट आया।

वह जगह छोड़ने से पहले ही वजीर के बेटे ने दिन और समय निश्चित कर लिया जब वह नौकर चाकरों घोड़े हाथियों के साथ उस तालाब के किनारे खड़ा होगा और वहॉ राजा के बेटे और राजकुमारी का इन्तजार करेगा जो उस नागमणि की सहायता से ऊपर आ कर उससे मिलेंगे।

वज़ीर के बेटे को अपने देश जाने के लिये छोडने के बाद अब देखते हैं कि हमारा यह खुश जोड़ा यानी राजा का बेटा और राजकुमारी किस तरह अपना समय गुजार रहे थे।

एक दिन जब राजा का बेटा अपना दोपहर का खाना खा कर सो रहा था तो राजकुमारी की जिसने कभी ऊपर की दुनियॉ देखी नहीं थी इच्छा हुई कि वह ऊपर की दुनियॉ देखे।

और क्योंकि केवल नागमणि ही उसको सुरक्षित रूप से पानी में से ऊपर तक ले जा सकती थी और सारे कमरे में अपनी चमक फैला रही थी इसलिये उसने उस मणि को अपने हाथ में लिया और महल से ऊपर की दुनियॉ में चल दी।

वह सुरक्षित रूप से ऊपर की दुनियॉ में आ गयी। उसको ऊपर आ कर ऊपर की दुनियॉ का कोई भी आदमी नहीं मिला सो वह ऊपर आ कर वह तालाब की सीढ़ियों पर बैठ गयी जो नहाने वालों के लिये बनायी गयी थीं।

वह वहॉ बैठ कर मल मल कर नहायी, उसने अपने बाल धोये, थोड़ी देर पानी में खेली, थोड़ी देर तालाब के किनारे घूमी, चारों तरफ के दृश्य को देखा और फिर अपने महल वापस आ गयी।

उसका पति अभी तक सो रहा था। जब वह सो कर उठा तो उसने अपने पति को अपनी ऊपर की दुनियॉ की यात्रा के बारे में कुछ नहीं बताया।

अगले दिन उसी समय जब उसका पति सो गया वह फिर से ऊपर की दुनियॉ में चली गयी और ऊपर की दुनियॉ के किसी भी आदमी की नजर से बची हुई फिर अपने महल वापस आ गयी।

अपनी इस कामयाबी से अब वह निडर हो गयी थी सो वह तीसरी बार भी ऊपर गयी।

अब ऐसा हुआ कि उस दिन उस देश का राजा जिसके राज्य में यह तालाब था शिकार के लिये निकला हुआ था। उसने अपना तम्बू उस तालाब के पास ही लगाया हुआ था।

जब उसके नौकर उसके लिये दोपहर का खाना बनाने में लगे हुए थे तो वह तालाब के किनारे की तरफ घूमने निकल गया। वहीं उसके पास ही एक बुढ़िया आग जलाने के लिये सूखी लकड़ी इकट्ठा कर रही थी।

उसी समय राजकुमारी तीसरी बार पानी में से बाहर निकली और अपने चारों तरफ देखा तो एक आदमी और एक स्त्री को देख कर वह फिर से नीचे चली गयी।

हालॉकि राजकुमारी तुरन्त ही वापस चली गयी थी पर फिर भी राजकुमार ने उसकी एक हल्की सी झलक देख ली थी। और साथ में लकड़ी इकट्ठी करती बुढ़िया ने भी।

राजकुमार तो पानी के ऊपर ऑख जमाये ही खड़ा रहा। उसने ऐसी सुन्दरता पहले कभी कहीं नहीं देखी थी।

वह तो उसको कोई देव कन्या[9] सी लगी जिसके बारे में उसने कभी पुरानी किताबों में पढ़ा था कि वे कभी कभी अपनी ऊपर की

[9] Dev Kanya means gods' girl. Dev means god and Kanya means girl. It may also mean Divine Girl.

दुनियॉ से नीचे की दुनियॉ वालों का भला करने आ जाती हैं जैसे देवदूत[10] आते हैं।

राजकुमारी की दैवीय सुन्दरता को हालॉकि उसने केवल पल भर के लिये ही देखा था पर उसने उसके दिल पर एक गहरी छाप छोड़ दी थी और उसके दिमाग को दूसरी ओर लगा दिया था।

वह वहॉ उसको फिर से देखने की आशा में घंटों तक मूर्ति की तरह से खड़ा रहा और पानी की तरफ देखता रहा। पर सब बेकार। वह लड़की तो फिर वहॉ आयी ही नहीं।

राजकुमार तो उसके प्रेम में पागल सा हो गया था। वह बस यही बुड़बुड़ाता रहा "अभी यहीं और बस अभी गायब। अभी यहीं और बस अभी गायब।"

वह वहॉ से जाने को तैयार नहीं था जब तक कि उसके नौकर उसको वहॉ से नहीं ले गये। वह वहॉ से बड़ी बुरी हालत में अपने पिता के महल में ले जाया गया।

वह किसी से नहीं बोला। वह सिसकता ही रहा। उसके मुॅह से बस वही शब्द निकल रहे थे और उनको भी वह बार बार कह रहा था — "अभी यहीं और बस अभी गायब। अभी यहीं और बस अभी गायब।"

[10] Translated for the word "Angels"

अपने बेटे की यह हालत देख कर राजा को तो उसके बारे में चिन्तित होना ही था। पर वह यह नहीं सोच सका कि किस चीज़ ने उसके बेटे का दिमाग खराब कर दिया है।

उसके बेटे के मुँह से जो शब्द निकल रहे थे उनसे उसको यही पता नहीं चल पा रहा था कि मामला क्या है। और न ही वह उनका मतलब समझ पा रहा था। उसके नौकर भी उन शब्दों को नहीं समझ पा रहे थे।

उसको राज्य के सबसे अच्छे डाक्टरों को दिखाया गया पर कोई फायदा नहीं। ऐस्कूलेपियस[11] और उसके लड़के तो उसके रोग का भी पता नहीं चला सके तो वे उसका इलाज तो क्या करते। सभी डाक्टरों ने जब भी उससे कुछ पूछा तो उसने बस यही जवाब दिया "अभी यहीं और बस अभी गायब।"

राजा अपने बेटे को होश में न लाने की वजह से खुद भी परेशान और दुखी हो गया तो उसने ढोल पिटवा कर अपने राज्य में एक मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी आदमी उसके बेटे की बीमारी की वजह बतायेगा और उसका इलाज करेगा उससे वह अपनी बेटी की शादी कर देगा और उसके अपना आधा राज्य दे देगा।

[11] Aesculapius is the Greek god of medicine.

शहर के बहुत सारे हिस्सों में ढोल पीटा गया पर किसी ने वह ढोल नहीं छुआ[12] क्योंकि कोई उसके पागलपन की वजह ही नहीं जानता था तो इलाज तो वह क्या करता।

आखिर एक बुढ़िया ने उस ढोल को छुआ और कहा कि वह न केवल उसके पागलपन की वजह जानती है बल्कि उसका इलाज भी कर सकती है। यह वैसी ही एक बुढ़िया थी जो राजकुमार जब राजकुमारी को देखने के बाद पागल सा हो गया था तो तालाब के पास आग जलाने के लिये लकड़ियॉ इकट्ठी कर रही थी।

इस बुढ़िया के एक आधा पागल सा बेटा था जिसका नाम था फ़कीर चन्द और इसी लिये वह "फ़कीर की मॉ" कहलाती थी।

यह सुन कर कि वह बुढ़िया राजकुमार के पागलपन की वजह भी जानती थी और उसको ठीक भी कर सकती थी उस बुढ़िया को राजा के पास लाया गया।

राजा ने पूछा — "क्या तुम्हीं वह स्त्री हो जिसने हमारा ढोल छुआ था। क्या तुमको हमारे बेटे के पागलपन के बारे में मालूम है?"

बुढ़िया बोली — "जी न्याय के अवतार। मैं इसकी वजह जानती हूॅ पर मैं उसे तब तक नहीं बताऊॅगी जब तक मैं उसे ठीक नहीं कर लूॅगी।"

[12] "Touching the Drum" means that one is accepting the challenge

राजा ने पूछा — "पर मैं यह कैसे विश्वास करूँ कि तुम उसको ठीक कर दोगी जबकि देश के सबसे अच्छे डाक्टर तक उसको ठीक करने में नाकामयाब रहे हैं?"

बुढ़िया बोली — "आपको विश्वास करने की जरूरत नहीं है मालिक जब तक मैं उसको ठीक न कर दूँ। बहुत सारी बुढ़ियॉ ऐसे इलाज जानती हैं जो अक्लमन्द आदमी लोग भी नहीं जानते।"

राजा मजबूरी में बोला — "ठीक है देखते हैं तुम क्या करती हो। तुमको उसे ठीक करने में कितना समय लगेगा?"

बुढ़िया बोली — "अभी तो यह कहना मुश्किल है पर आपकी सहायता से मैं अपना काम अभी से शुरू कर दूँगी।"

राजा बोला — "मुझसे तुम्हें किस तरह की सहायता चाहिये?"

बुढ़िया बोली — "मालिक जहॉ आपके बेटे को यह बीमारी लगी थी मेरे लिये उस तालाब के किनारे एक झोंपड़ी बनवा दें। मैं वहॉ कुछ दिन रहना चाहती हूँ।

और मालिक अपने कुछ नौकरों को मेरी झोंपड़ी से सौ गज दूरी पर खड़ा कर दें ताकि मैं उनको जरूरत पड़ने पर आवाज दे सकूँ।"

राजा बोला — "ठीक है मैं ऐसा ही कर देता हूँ। तुमको कुछ और चाहिये क्या?"

बुढ़िया बोली — "नहीं सरकार। तैयारी के लिये अभी और कुछ नहीं चाहिये। पर मैं आपको वे शर्तें बता देना चाहती हूँ जिन शर्तों पर मैं यह इलाज अपने हाथ में ले रही हूँ।

सरकार ने इलाज करने वाले को अपना आधा राज्य और अपनी बेटी का हाथ देने का वायदा किया है। अब मैं तो औरत हूॅ और आपकी बेटी से शादी नहीं कर सकती हूॅ। इसके अलावा आपके दिये हुए आधे राज्य की राजा भी नहीं बन सकती हूॅ।

सो मेरी आपसे एक प्रार्थना है कि मेरा एक बेटा है फ़कीर चन्द। अगर मैं आपके बेटे को ठीक कर दूॅ तो आप मेरे उस बेटे से अपनी बेटी की शादी कर दें और उसको अपने आधे राज्य का मालिक बना दें।"

राजा बोला — 'ठीक है।"

कुछ ही घंटों में उस तालाब के किनारे एक झोंपड़ी बनवा दी गयी और फ़कीर चन्द की मॉ उसमें रहने चली गयी।

उसी झोंपड़ी के पास राजा के सिपाहियों के रहने के लिये एक छोटी सी रहने की जगह और बनवा दी गयी जहॉ राजा के सिपाही ठहरा दिये गये। ताकि उस बुढ़िया को जब भी उनकी सहायता की जरूरत हो तो वे उसकी सहायता के लिये तैयार रहें।

फ़कीर चन्द की मॉ ने यह सख्त हुक्म दे रखा था कि सिवाय उसके कोई और आदमी उस तालाब के पास नहीं जायेगा।

अब हम फ़कीर चन्द की मॉ को उस तालाब की रखवाली के लिये यहीं छोड़ते हैं और पानी के नीचे वाले महल में चलते हैं कि वहॉ राजा का बेटा और राजकुमारी क्या कर रहे हैं।

X X X X X X X

आखिरी बार यानी तीसरी बार ऊपर की दुनियॉ में जाने पर उस बुरी घटना के घटने के बाद राजकुमारी ने अब ऊपर की दुनियॉ में जाने का इरादा छोड़ दिया था।

पर क्योंकि साधारणतया स्त्रियों की उत्सुकता आदमियों से ज़्यादा होती है और नीचे वाले महल में रहने वाली राजकुमारी इन स्त्रियों से कोई अलग नहीं थी सो एक दिन जब उसका पति सो रहा था तो उसने फिर से अपने हाथ में नागमणि ली और ऊपर की दुनियॉ में आ गयी।

जैसे ही उसने तालाब के पानी के बीच में से अपना सिर बाहर निकाला फ़कीर की मॉ जो चौकन्नी हो कर पानी की तरफ देख रही थी अपनी झोंपड़ी में छिप गयी और उसकी जालीदार दीवार में से उसको देखा।

राजकुमारी ने चारों तरफ देखा कि धरती का कोई आदमी तो उसको नहीं देख रहा। जब उसने पक्का कर लिया कि धरती का कोई आदमी उसको नहीं देख रहा तो वह किनारे पर आ गयी। और अपने शरीर को मल मल कर नहाने लगी।

तब फ़कीर की मॉ अपनी झोंपड़ी से बाहर निकल कर आयी और जीत की आवाज में राजकुमारी से बोली — "आ मेरी बच्ची सुन्दरता की देवी। आ मेरे पास आ। मैं तुझे नहलाती हूॅ।"

ऐसा कह कर वह राजकुमारी के पास पहुॅची। राजकुमारी ने देखा कि वह तो केवल एक स्त्री थी सो उसने उससे बचने की कोई कोशिश नहीं की।

फ़कीर चन्द की मॉ ने उसको नहलाना शुरू किया। उसने उसके बाल धोते समय उसके हाथ में एक चमकीली मणि देखी तो बोली — "बेटी जब तक तुम नहाती हो इस मणि को तुम यहॉ नीचे रख सकती हो।"

राजकुमारी ने वह मणि नीचे रख दी और फ़कीर की मॉ ने तुरन्त ही वह मणि अपने हाथ में उठा कर उसको अपनी कमर में बॅधे कपड़े में बॉध लिया।

यह जान कर कि राजकुमारी अब वहॉ से बच कर नहीं जा सकती थी उसने राजा के नौकरों को इशारा किया तो वे तालाब की तरफ दौड़े आये। राजा के नौकर तो उसके हुक्म का इन्तजार ही कर रहे थे इसलिये वे तुरन्त ही वहॉ आ गये और उन्होंने राजकुमारी को गिरफ्तार कर लिया।

जब यह खबर राज्य में पहुॅची कि फ़कीर की मॉ ने एक जलपरी[13] पकड़ ली है तो वहॉ बहुत खुशियॉ मनायी गयीं। राज्य के सारे लोग अमर लोगों की दुनियॉ की उस "अमर लोगों की बेटी" को देखने के लिये राजा के दरबार में इकट्ठा हो गये।

[13] Translated for the words "Water Nymph"

जब वह राजा के महल में लायी गयी और राजकुमार ने जो उसके प्यार में पागल था उसे देखा तो वह तो खुशी से चिल्ला पड़ा – "मुझे मिल गयी मुझे मिल गयी।"

उसके दिमाग पर जो उसको देखने से बादल सा छा गया था वह छॅट गया। उसकी ऑखें जो उदास खाली और भद्दी पड़ गयी थीं वे भी अब उसकी अक्लमन्दी से चमक उठीं।

वह अपनी जिस जबान का इस्तेमाल करना भूल गया था या जिससे वह केवल यही कहता था "अभी यहीं और बस अभी गायब" अब उसकी वह जबान भी ठीक हो गयी थी।

अब वह अपने होश में आ गया था।

राजा तो यह देख कर बहुत खुश हो गया। उसकी खुशी की तो कोई हद ही नहीं रही। सारे शहर में बहुत आनन्द मनाया गया। लोगों ने फ़कीर चन्द की मॉ को बहुत दुआऐं दीं। उन्होंने नीचे वाली दुनियॉ की लड़की की राजकुमार से जल्दी से जल्दी शादी की दुआ मनायी।

राजकुमारी ने फ़कीर चन्द की मॉ से राजा से कहलवाया कि उसका पति पानी के नीचे रहता है। उसने यह कसम खायी है कि वह एक साल तक अपने पति के मुॅह के अलावा किसी दूसरे आदमी का मुॅह नहीं देखेगी। इसलिये इस समय में यह शादी नहीं हो सकती।

हालॉकि राजकुमार यह सुन कर कुछ नाउम्मीद सा हुआ पर फिर भी वह उसकी यह शर्त इसलिये मान गया कि वह इस कहावत में विश्वास करता था "देर उन खुशियों की मिठास को बढ़ा देती है जो किसी की किस्मत में लिखी हैं।"

अब यह तो अन्दाजा लगाना कोई मुश्किल काम नहीं है कि राजकुमारी के दिन रात कितने दुख में और रोते रोते कट रहे थे। वह बाहर की दुनियॉ देखने की अपनी उस उत्सुकता को कोस रही थी जिसने उसको अपने पति को नीचे छोड़ने और उसे खुद को इस हालत में पहुँचाया।

जब वह यह सोचती कि उसका पति पानी के नीचे बिकुल्ल अकेला है तो वह बहुत ज़ोर से रो पड़ती। वह यही सोचती कि काश वह वहॉ से न भागती।

पर अब तो यहॉ से भी भागना नामुमकिन था क्योंकि यहॉ तो वह दीवारों के अन्दर रह रही थी। और दीवारों के अन्दर भी दीवारें थीं।

इसके अलावा अगर वह महल और शहर से बाहर निकल भी आती तो उससे उसे फायदा क्या होगा। वह अपने पति को तो नहीं पा सकती थी क्योंकि नागमणि तो अब उसके पास थी ही नहीं। सो वह पानी के नीचे वाले महल में भी कैसे जा सकती थी। और उसका पति भी वहॉ से उसके पास नहीं आ सकता था।

महल की स्त्रियॉ और फ़कीर चन्द की मॉ ने उसका मन बदलने की बहुत कोशिश की पर सब बेकार।

उसको तो किसी और चीज़ में खुशी ही नहीं मिल रही थी। वह किसी से बोलती भी नहीं थी वह तो बस दिन रात रोती ही रहती। उसकी कसम का अब एक साल भी खत्म होने को आ रहा था फिर भी उसको कोई चीज़ तसल्ली नहीं दे पा रही थी।

पर अब उसकी शादी तो होनी ही है।

राजा ने अपने शाही ज्योतिषी से शादी के मुहूर्त के बारे में पूछा कि उनकी शादी कब होनी चाहिये। ज्योतिषी के कहे अनुसार उस समय के लिये तैयारियॉ शुरू कर दी गयीं।

हलवाई लोग उस दिन के लिये मिठाइयॉ बनाने में लग गये। दूध वाले को सैंकड़ों किलो दही का आर्डर दे दिया गया। आतिशबाजी के लिये सैंकड़ों किलो बारूद बनाया जाने लगा।

संगीतज्ञों के झुंड के झुंड महल के दरवाजों पर खड़े कर दिये गये जो अपने संगीत से चारों तरफ मिठास बिखेर रहे थे। सारा शहर जैसे त्यौहार मनाने की खुशी में डूबा पड़ा था।

इन लोगों को तो अब हम यहीं शादी की तैयारियॉ करते और खुशियॉ मनाते छोड़ते हैं और अब हम वज़ीर के बेटे के पास चलते हैं और देखते हैं कि वह क्या कर रहा है।

X X X X X X X

तुम्हें याद होगा कि वज़ीर का बेटा अपने दोस्त राजा के बेटे को पानी के नीचे वाले महल में छोड़ कर घोड़े हाथी और नौकर चाकर लाने अपने देश चला गया था ताकि वह अपने दोस्त और उसकी पत्नी को उनके देश के राजा के ढंग से ले जा सके।

इस तैयारी में उसको महीनों लग गये और जब सब कुछ तैयार हो गया तो वह बहुत सारे हाथियों घोड़ों और नौकरों चाकरों के साथ तालाब की तरफ अपनी यात्रा पर चला। फिर भी वह तालाब पर अपने तय किये हुए दिन से तीन दिन पहले ही पहुॅच गया।

आम के बागीचे में जो तालाब के पास ही था आदमियों और जानवरों के लिये तम्बू लगाये गये। वज़ीर के बेटे की ऑखें तालाब पर ही लगी रहतीं।

जिस दिन राजा के बेटे को पानी के बाहर आना था अब तो उस दिन का सूरज भी डूबने को आ रहा था और राजा का बेटा और राजकुमारी किसी के भी ऊपर आने का कोई निशान दिखायी नहीं दे रहा था।

उसने दो तीन दिन और इन्तजार किया पर फिर भी राजा का बेटा ऊपर नहीं आया।

वज़ीर का बेटा सोचने लगा कि उसके दोस्त और उसकी सुन्दर पत्नी को क्या हुआ होगा? क्या वे वहॉ मर गये? क्या किसी दूसरे सॉप ने, या फिर उसी सॉप के साथी ने जो मर गया था राजा के बेटे को मार मार कर मार दिया?

या फिर उन लोगों से नागमणि खो गयी? या फिर अगर वे कभी ऊपर की दुनियॉ में घूमने आ रहे हों और पकड़े गये हों?

इसी तरह के सैंकड़ों सवाल वज़ीर के दिमाग में आते रहे जाते रहे और यह सब सोचते सोचते वह बहुत परेशान हो गया।

पर जिस समय से वह तालाब के पास आया था उसी समय से उसको संगीत की आवाज सुनायी दे रही थी जो शहर की तरफ से आ रही थी जो लगता था कि कहीं पास में ही था।

उसने आस पास से आते जाते लोगों से पूछा कि यह संगीत की आवाज कैसी है तो लोगों ने बताया कि वहॉ के राजा के बेटे की किसी बहुत ही सुन्दर लड़की से शादी थी यह आवाज उसी की है।

वह लड़की इसी तालाब के पानी में से बाहर निकली थी जहॉ वह बैठा हुआ था। और यह संगीत उसी की शादी की खुशी में बज रहा था। शादी भी बस दो दिन बाद ही है।

यह सुनते ही वज़ीर के बेटे की समझ में आ गया कि यह सुन्दर लड़की जो इस तालाब के पानी में से निकली है वह और कोई नहीं बल्कि उसके दोस्त राजा के बेटे की पत्नी है।

उसने इस मामले की जॉच के लिये तुरन्त ही शहर जाने का निश्चय किया और हो सका तो राजकुमारी को वापस लाने का भी।

उसने हाथी घोड़े और नौकरों सबको घर वापस भेज दिया और खुद वह शहर की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर वह एक ब्राह्मण के घर ठहर गया।

कुछ देर तक आराम करने के बाद और खाना खाने के बाद वज़ीर के बेटे ने ब्राह्मण से पूछा कि इस संगीत का क्या मतलब था जो कुछ कुछ देर के बाद बज रहा था।

ब्राह्मण ने पूछा — "तुम दुनियॉ के कौन से हिस्से से आ रहे हो अजनबी जो तुमने उन हालात के बारे में ही नहीं सुना जिनमें शहर से बाहर के एक तालाब से एक दैवीय सुन्दरता वाली लड़की पानी में से बाहर निकली और अब उसकी शादी हमारे राजा के बेटे से परसों होने वाली है?"

वज़ीर के बेटे ने कहा — "नहीं मैंने नहीं सुना। मैं यहॉ से थोड़ी दूर देश से आ रहा हूँ जहॉ यह कहानी अभी पहुँची नहीं है। क्या आप मुझे यह कहानी ज़रा खोल कर बतायेंगे।"

तब ब्राह्मण ने वज़ीर के बेटे को यह कहानी सुनायी —

"पिछले साल करीब करीब इसी समय राजकुमार शिकार खेलने गये थे। उन्होंने अपने तम्बू शहर से बाहर एक तालाब के पास लगा लिये।

एक दिन जब राजकुमार उस तालाब के पास टहल रहे थे तो उन्होंने एक नौजवान बहुत सुन्दर लड़की या कहो तो एक देवी को देखा जो उस तालाब के पानी में से निकली।

उस लड़की ने एक मिनट इधर उधर देखा और फिर पानी में ही गायब हो गयी। राजकुमार जिन्होंने उसको देख लिया था तुरन्त ही उसके प्रेम में पड़ गये।

वह उसके प्रेम में इतने पागल हो गये थे कि उनके तो दिमाग ने ही काम करना बन्द कर दिया। उनको पागलों की सी हालत में घर लाया गया। वह बस कुछ और नहीं बोलते थे सिवाय इसके कि "अभी यहीं और बस अभी गायब।"

राजा ने अपने राज्य के सारे सबसे अच्छे डाक्टरों को उनके इलाज के लिये बुलवा भेजा पर न तो कोई उनकी बीमारी की वजह बता सका न ही कोई उनका इलाज ही कर सका।

आखिर फिर राजा ने मुनादी पिटवा दी कि जो कोई उसके बेटे की बीमारी की वजह बता देगा और उसका इलाज कर देगा वह उससे अपनी बेटी की शादी कर देगा और उसको अपना आधा राज्य दे देगा।

फिर एक दिन एक बुढ़िया ने जिसको लोग फ़कीर की मॉ कह कर बुलाते हैं राजा का ढोल छुआ और कहा कि वह राजकुमार की बीमारी भी बतायेगी और उसका इलाज भी करेगी।

जिस तालाब में से वह लड़की निकली थी उसी तालाब के पास उसके लिये एक झोंपड़ी बनवा दी गयी। उसके पास ही एक झोंपड़ी और बनवा दी गयी जिसमें राजा के नौकर रहते थे जो उसकी सहायता के लिये थे।

फिर ऐसा लगता है कि वह देवी फिर से उस पानी में से बाहर निकली। फ़कीर चन्द की मॉ ने उसको राजा के नौकरों की सहायता से पकड़ लिया और उसको एक पालकी में बिठा कर राजा के पास

ले आयी। जैसे ही राजकुमार ने उसे देखा तो उनका दिमाग ठीक हो गया।

राजकुमार की शादी उसके साथ तभी हो गयी होती पर उसने कहा कि उसने कसम खायी है कि उसका पति जो पानी के अन्दर रहता है उसके मुँह के सिवाय वह किसी दूसरे आदमी का मुँह एक साल तक नहीं देखेगी।

उसकी कसम का वह साल अब खत्म हो रहा है इसलिये अब उसकी शादी राजकुमार के साथ परसों हो रही है। यह संगीत जो तुम सुन रहे हो राजा के महल के दरवाजे पर बज रहा है। बस थोड़े में इस संगीत की यही कहानी है।"

वज़ीर का बेटा बोला — "अरे यह तो बड़ी अजीब कहानी है। और क्या केवल इसी काम के लिये फ़कीर की मॉ या फ़कीर चन्द को खुद को राजा की बेटी से शादी और राजा के आधे राज्य का इनाम मिल गया?"

"नहीं अभी तो नहीं मिला पर मिल जायेगा। अभी तो फ़कीर चन्द को वह सब नहीं मिला जिसका उसको वायदा किया गया था पर वह तो आधा पागल सा है या कहो तो पूरा ही पागल है। वह एक साल से घर से बाहर है। और कोई यह जानता भी नहीं कि वह कहॉ है। ये तो उसके अभी के ढंग हैं। बाद में वह क्या करेगा क्या पता।

वह अपने घर से बहुत बहुत दिनों तक बाहर रहता है। फिर अचानक घर आ जाता है और फिर गायब हो जाता है। मुझे लगता है कि उसकी मॉ अब उसके घर आने की जल्दी ही उम्मीद कर रही होगी।"

वज़ीर का बेटा बोला — "वह दिखने में कैसा लगता है और जब वह घर आ जाता है तो क्या करता है?"

ब्राह्मण बोला — "वह तुम्हारी ही लम्बाई का है पर उम्र में वह तुमसे थोड़ा छोटा है। वह अपनी कमर में एक छोटा सा कपड़ा बॉधता है अपने शरीर पर राख मले रहता है। किसी पेड़ की शाख अपने हाथ में लिये रहता है।

और जिस झोंपड़ी में उसकी मॉ रहती है उसके दरवाजे पर उस पेड़ की शाख हाथ में घुमा घुमा कर "धूप धूप धूप" की धुन पर नाचता रहता है। वह बहुत साफ बोलता है।

जब उसकी मॉ कहती है "फ़कीर थोड़े दिन के लिये मेरे पास और रुक जा।" तो वह हमेशा ही अपना एक ही बेवकूफी भरा जवाब देता है "नहीं मैं नहीं रुकूॅगा नहीं मैं नहीं रुकूॅगा।" और जब वह हॉ में जवाब देना चाहता है तो बोलता है "हूॅ"।"

ब्राह्मण के साथ यह बातचीत कर के वज़ीर के बेटे को काफी कुछ मालूम हुआ। अब वह यह सोच सका कि क्या हुआ होगा।

उसको लगा कि राजकुमारी नागमणि की सहायता से अकेली ही तालाब के पानी के ऊपर आयी होगी इसी लिये फ़कीर की मॉ ने उसे बिना राजा के बेटे के अकेले को ही पकड़ लिया होगा।

इसलिये नागमणि अब फ़कीर की मॉ के पास होनी चाहिये और इसी लिये उसका दोस्त राजा का बेटा जरूर ही पानी के नीचे अकेला होगा और अब बिना नागमणि के वह वहॉ से कहीं जा भी नहीं सकता।

अपने दोस्त की ऐसी अकेले की खराब हालत सोच कर वज़ीर के बेटे का दिल दुख से भर गया। वह सारी रात बहुत दुखी रहा और कुछ कुछ सोचता रहा।

क्या यह नामुमकिन है कि राजा के बेटे को नीचे की दुनियॉ से ऊपर की दुनियॉ में लाया जा सकता है? क्या हो अगर मैं किसी तरीके से वह नागमणि उस बुढ़िया से ले लूँ? और क्या मैं यह काम उसका बेटा फ़कीर चन्द बन कर नहीं कर सकता जो जल्दी ही वापस आने वाला है?

और फिर यह भी तो हो सकता है कि उसी तरीके से मैं राजकुमारी को राजा के महल से बचा कर भी ले आऊँ। सो उसने सोच लिया कि वह अगले दिन फ़कीर चन्द बनेगा और उसकी मॉ से नागमणि लेने के कोशिश करेगा।

यह सोच कर अगली सुबह वह ब्राह्मण के घर से चल दिया और शहर के बाहर चला गया।

वहॉ जा कर उसने अपने कपड़े उतारे और एक छोटा सा कम चौड़ाई का कपड़ा अपनी कमर में लपेटा जो मुश्किल से उसके घुटनों तक आ रहा था।

उसने अच्छी तरह से अपने शरीर पर राख मली। एक पेड़ से तोड़ कर एक शाख अपने हाथ में ली।

और यह सब कर के वह फ़कीर की मॉ की झोंपड़ी की तरफ चल दिया और वहॉ जा कर उसने दरवाजे पर "धूप धूप धूप" की धुन पर जंगली तरीके से नाचना शुरू कर दिया।

उसके नाचने ने बुढ़िया का ध्यान खींचा। उसको लगा कि उसका बेटा आ गया तो वह बोली — "अरे मेरे बच्चे फ़कीर तू आ गया। आ मेरे बच्चे, देख न देवता आखिर हम पर खुश हो ही गये।"

वज़ीर का बेटा बोला "हूँ"। उसके बाद भी वह पेड़ की शाख को हाथ में हिलाते हुए नाचता ही रहा बल्कि उसने और ज़्यादा जंगली तरीके से नाचना शुरू कर दिया।

मॉ फिर बोली — "इस बार तू वापस नहीं जायेगा। समझा। तुझे मेरे ही साथ रहना है।"

"नहीं मैं नहीं रहूँगा मैं नहीं रहूँगा।"

मॉ फिर बोली — इस बार मैं तेरी शादी राजा की बेटी से कराऊँगी। क्या तू शादी करेगा फ़कीर चन्द?"

वज़ीर का बेटा बोला "हूँ हूँ।" और वह पागलों की तरह नाचता ही रहा।

मॉ फिर बोली — "क्या तू मेरे साथ राजा के घर चलेगा? चल वहॉ चल कर मैं तुझे एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी दिखाऊँगी जो पानी में से निकली है।"

"हूँ हूँ।" वज़ीर के बेटे के मुँह से निकल रहा था और पैर उसके धूप धूप धूप की धुन पर नाचे जा रहे थे।

"फ़कीर क्या तू एक मणि देखना चाहता है, नागमणि। यह तो सात राजाओं का खजाना है।"

"हूँ हूँ।"

बुढ़िया झोंपड़ी के अन्दर गयी और नागमणि ला कर उसने वज़ीर के बेटे के हाथ पर रख दी। वज़ीर के बेटे ने उसको ले कर अपने कमर में पहनने वाले कपड़े में बॉध लिया।

फ़कीर की मॉ उसके इस अक्लमन्दी के व्यवहार पर बहुत खुश हो गयी। वह तुरन्त अपने बेटे को ले कर राजा के घर यह बताने के लिये गयी कि उसका बेटा घर वापस आ गया है और साथ में उसको वह राजकुमारी दिखाने के लिये भी गयी जो पानी में से निकली थी।

फ़कीर की मॉ और वज़ीर के बेटे को राजा के महल में तबसे बिना किसी रोक टोक के जाने की इजाज़त मिल गयी थी जबसे उस

बुढ़िया ने पानी वाली राजकुमारी को पकड़ा था। अब वह राज्य की एक बहुत ही मुख्य आदमी हो गयी थी।

वह वज़ीर के बेटे को उस कमरे में ले गयी जिसमें राजकुमारी थी और उसको राजकुमारी को बताया कि वह उसका बेटा फ़कीर चन्द था।

पर राजकुमारी एक ऐसे पागल से मिलने पर बिल्कुल भी खुश नहीं थी जो अधनंगा था जिसके शरीर पर राख लिपटी हुई थी और जो तब तक भी जंगली तरीके से ही नाच रहा था।

शाम होने पर बुढ़िया ने अपने बेटे से कहा कि अब उनको महल से अपने घर चले जाना चाहिये। पर वज़ीर के बेटे ने वहॉ से जाने से मना कर दिया। उसने कहा कि वह उस रात वहीं रहना चाहता है।

उसकी मॉ ने उससे बहुत कहा कि वह अब घर चले पर वह बराबर मना ही करता रहा। उसने कहा कि वह राजकुमारी के साथ ही रहना चाहता है उसे राजकुमारी बहुत अच्छी लगी सो वह उसके साथ कुछ देर और रहना चाहता है।

जब उसका बेटा नहीं माना तो वह वहॉ के चौकीदारों को यह कह कर अकेली ही घर चली गयी कि वे उसके बेटे की ठीक से देखभाल करें।

जब सब लोग वहॉ से सोने के लिये चले गये तो वज़ीर का बेटा राजकुमारी के पास आया और अपनी असली आवाज में बोला —

"राजकुमारी जी, क्या आप मुझे पहचान नहीं रहीं? मैं वज़ीर का बेटा हूॅ, आपके पति राजा के बेटे का दोस्त।"

राजकुमारी तो यह सुन कर दंग रह गयी — "कौन? वज़ीर का बेटा? ओ मेरे पति के सबसे अच्छे दोस्त, मुझे इस कैद से बाहर निकालो। यह तो मेरी मौत से भी बदतर है। हे भगवान यह मेरी ही गलती है जो आज मैं इस बुरी हालत में यहॉ पड़ी हूॅ।

मेहरबानी कर के मुझे बचाओ ओ मेरे पति के सबसे अच्छे दोस्त, मुझे बचाओ।" और यह कहते कहते वह रो पड़ी।

वज़ीर के बेटे ने कहा — "आप इतनी ज़्यादा नाउम्मीद न हों राजकुमारी जी। मैं आपको आज रात को ही यहॉ से ले जाने की कोशिश करूॅगा। बस आप वही कीजियेगा जो मैं आपसे करने के लिये कहूॅ।"

"ओ वजीर के बेटे, मैं वही करूॅगी जो तुम मुझसे करने के लिये कहोगे – जो भी। पर बस तुम मुझे यहॉ निकाल ले चलो।"

इसके बाद वज़ीर का बेटा वहॉ से चला गया। वह महल के ऑगन से गुजरा तो कुछ चौकीदारों ने उससे पूछागछी की तो वह बोला — "हूॅ हूॅ। मुझे ज़रा एक मिनट के लिये बाहर जाना है बस मैं अभी वापस आता हूॅ।"

इससे वे पहचान गये कि वह पागल फ़कीर चन्द ही था सो उन्होंने उसको जाने दिया। वह अपनी बात का सच्चा था सो वह जल्दी ही वापस आ गया और फिर राजकुमारी के पास चला गया।

एक घंटे बाद वह फिर बाहर गया। चौकीदारों ने उससे फिर पूछागछी की तो उसने फिर वही जवाब दिया जैसे उसने पहली बार दिया था।

जिन चौकीदारों ने उससे पूछागछी की थी उन्होंने मुॅह ही मुॅह में बड़बड़ाना शुरू किया "यह पागल फ़कीर चन्द तो रात भर बाहर जाता है फिर अन्दर आता है तो ठीक है हम इसे जाने देते हैं। यह जो करना चाहे करे। इसके लिये रात भर यहॉ कौन बैठा रहेगा।" यह कह कर वे एक तरफ बैठ गये।

अब तो वज़ीर का बेटा बिना किसी के पूछेगछे ही बाहर जाता रहा और अन्दर आता रहा और इस ताक में रहा कि वह कब राजकुमारी के साथ वहॉ से भाग सकता है।

सुबह के तीन बजे वज़ीर का बेटा फिर से महल के ऑगन से गुजरा तो इस बार किसी ने उससे कोई पूछताछ नहीं की क्योंकि सारे चौकीदार सो गये थे। यह देख कर वह बहुत खुश हुआ।

वह तुरन्त ही राजकुमारी के पास वापस गया और उनसे बोला — "आइये राजकुमारी जी अब यहॉ से बच कर भागने का समय आ गया है। सारे चौकीदार सो गये हैं। आप मेरी पीठ पर चढ़

जाइये और अपने बाल मेरी गर्दन से बॉध लीजिये। और मुझे कस कर पकड़ लीजिये। बस फिर हम यहॉ से चलते हैं।"

राजकुमारी ने वैसा ही किया जैसा उससे करने के लिये कहा गया और वह वजीर का बेटा राजकुमारी को ले कर महल के ऑगन से गुजर गया किसी ने उसको रोका नहीं।

वह उस सुन्दर बोझे को ले कर महल के दरवाजे पर पहुॅचा। वहॉ भी उसको किसी ने नहीं रोका और वह वहॉ से भी महल के बाहर निकल गया। शहर के बाहर पहुॅच कर वह उसी तालाब की तरफ चला गया जिसमें से राजकुमारी बाहर निकली थी।

वहॉ पहुॅच कर उसने राजकुमारी को नीचे खड़ा किया तो राजकुमारी ने कॉपते हुए आजादी की खुशी की सॉस ली। वजीर के बेटे ने नागमणि अपनी कमर में बॅधे कपड़े से निकाली और दोनों नीचे वाले महल में चले गये।

महल में राजा के बेटे ने अपने दोस्त और राजकुमारी का जो स्वागत किया उसको आसानी से सोचा जा सकता है। वह तो दुख से अधमरा सा हो रहा था पर इन दोनों के पहुॅचने के बाद उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसके मुर्दा शरीर में जान पड़ गयी हो।

तीनों खुशी से पागल से हो रहे थे। वे वहॉ उस महल में तीन दिन और रहे।

वे बार बार राजकुमारी के ऊपर वाली दुनियॉ को देखने की उत्सुकता की, उसके पकड़े जाने की, महल में कैद रहने की, शादी

की तैयारी की, बुढ़िया की, वज़ीर के बेटे के फ़कीर चन्द बनने की और उसके राजा की कैद से निकलने की कहानियॉ कहते रहे।

अब इस बात को कहने का तो कोई मतलब ही नहीं है कि राजा के बेटे और राजकुमारी ने वज़ीर के बेटे को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उसको अपना सबसे अच्छा और बड़ा दोस्त कहा।

उन्होंने यह भी कहा कि वे हमेशा ही जब तक ज़िन्दा रहेंगे तब तक उसकी सलाह से ही काम करेंगे।

उसके बाद तीनों ने अपने देश वापस लौटने का फैसला किया। उन्होंने पानी के अन्दर का महल छोड़ दिया और नागमणि की सहायता से ऊपर आ गये।

अब उनके पास न तो हाथी थे और न घोड़े सो उनको पैदल ही चलना पड़ा। और हालॉकि राजा के बेटे के लिये और वजीर के बेटे दोनों के लिये इस तरीके से चलना मुश्किल था क्योंकि वे तो बहुत आराम में पले थे पर राजकुमारी के लिये तो यह बहुत ही मुश्किल काम था। सड़क पर पड़े पत्थर उसके पैरों में चुभे जा रहे थे।

जब उसके पैर बहुत दुखने लगे तो राजा के बेटे ने उसको अपने कन्धों पर उठा लिया जिन पर वह अपने दोनों पैर दोनों तरफ लटका कर बैठ गयी। पर यह बोझा चाहे कितना भी प्यारा क्यों न था फिर भी कितनी भी दूरी तक ले जाने के लिये कुछ ज़्यादा ही

था। इसलिये बहुत सारा रास्ता तो उसने पैदल चल कर ही पार किया।

एक शाम वे एक पेड़ के नीचे आराम करने के लिये बैठे क्योंकि वहॉ आसपास में कोई भी बस्ती या घर दिखायी नहीं दे रहा था तो वज़ीर के बेटे ने राजा के बेटे और राजकुमारी से कहा — "आप लोग सोयें और मैं आपके लिये पहरा देता हूँ ताकि कोई खतरा आपको परेशान न करे।"

राजा का बेटा और राजकुमारी दोनों बहुत जल्दी ही सो गये पर वज़ीर का वफादार बेटा नहीं सोया वह पहरा देता रहा।

अब हुआ क्या कि उस पेड़ के ऊपर दो अमर चिड़ियों के एक जोड़े का एक घोंसला था – बिहंगम और बिहंगामी। इनको न केवल आदमी की भाषा आती थी बल्कि ये भविष्य के अन्दर भी देख सकते थे।

वज़ीर के बेटे को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे दोनों आदमियों की भाषा में बात कर रहे थे और वह उनकी सारी बातचीत समझ रहा था।

बिहंगम बोला — "वज़ीर का बेटा वैसे तो पहले ही अपने दोस्त की ज़िन्दगी के लिये अपनी ज़िन्दगी दॉव पर लगा चुका है पर फिर भी आखीर में वह भी राजा के बेटे की ज़िन्दगी बचा नहीं पायेगा।"

बिहंगामी ने पूछा — "वह कैसे?"

बिहंगम बोला — "क्योंकि राजा के बेटे के लिये बहुत सारे खतरे इन्तजार कर रहे हैं। उसका पिता, जब वह यह सुनेगा कि उसका बेटा आ रहा है तो वह कुछ हाथी घोड़ों और नौकरों को उनको लाने के लिये भेजेगा। और फिर जब राजा का बेटा हाथी पर चढ़ेगा ता वह उस पर से गिर जायेगा और मर जायेगा।"

बिहंगामी बोली — "और अगर कोई उसको उस समय उस हाथी पर चढ़ने से रोक ले तो और घोड़े पर चढ़ा दे तो। क्या वह इस तरह से नहीं बच सकता?"

बिहंगम बोला — "हॉ वह इस खतरे से तो बच जायेगा लेकिन फिर आगे एक और खतरा उसका इन्तजार कर रहा है। जब राजा का बेटा अपने पिता के महल पहुॅचेगा और उसके सिंहद्वार[14] में से गुजरेगा तो वह सिंहद्वार उसके ऊपर गिर पड़ेगा और वह उससे कुचल कर मर जायेगा।"

बिहंगामी बोली — "और अगर राजा के बेटे के उस दरवाजे तक पहुॅचने से पहले ही कोई उस सिंहद्वार को तोड़ दे तो क्या इससे राजा का बेटा नहीं बच जायेगा?"

बिहंगम बोला — "हॉ इस तरह वह इस खतरे से तो बच जायेगा पर अभी तो एक और खतरा बाकी है। जब राजा का बेटा घर पहुॅचेगा तो उसके आने की खुशी में एक दावत रखी जायेगी।

[14] Translated for the word "Lion's Gate". Sinh Dwaar is the main gate of the Palace.

जब वह उस दावत में बैठेगा और खाना खाने लगेगा तो एक मछली जो उसके लिये खास तौर पर पकायी गयी होगी उसका सिर खाते समय वह सिर उसके गले में फॅस जायेगा और उसको मार देगा।"

यह सुन कर बिहंगामी बोली — "पर मान लो अगर वहॉ बैठा कोई आदमी उसके हाथ से मछली का वह सिर छीन ले और उसको उसके मुॅह में जाने से रोक ले तो। क्या उसका यह खतरा इस तरीके से नहीं टल जायेगा?"

बिहंगम बोला — "यह तो तुम ठीक कह रही हो बिहंगामी। ऐसा करने से यह खतरा तो टल जायेगा पर अभी इसके बाद एक और नया खतरा उसका इन्तजार कर रहा है।

खाना खाने के बाद जब राजा का बेटा और राजकुमारी अपने कमरे में सोने के लिये जायेंगे और सो जायेंगे तो एक भयानक कोबरा उनके कमरे में आ कर राजा के बेटे को काट लेगा और वह मर जायेगा।"

बिहंगामी फिर बोली — "पर अगर कोई उस कमरे में पहले से छिप जाये और वह उस कोबरा को देखते ही उसको मार दे तो क्या राजा का बेटा नहीं बच सकता?"

बिहंगम बोला — "हॉ बच तो सकता है पर हम जो बात यहॉ कर रहे हैं वह अगर कोई किसी दूसरे को बता दे तो वह संगमरमर की मूर्ति बन जायेगा।"

बिहंगामी भी छोड़ने वाली नहीं थी वह बोली — "तो क्या कोई ऐसा तरीका नहीं है जिससे उस संगमरमर की मूर्ति को ज़िन्दा किया जा सके?"

बिहंगम बोला — "हॉ है जिससे उस संगमरमर की मूर्ति को ज़िन्दा किया जा सकता है अगर उस मूर्ति को राजकुमारी के ज़िन्दा बच्चे के जन्मते ही उसके खून से नहला दिया जाये तो वह मूर्ति ज़िन्दा हो जायेगी।"

उन दोनों अमर चिड़ियों की बात यहीं तक पहुॅची थी कि सुबह हो गयी। कौओं ने कॉव कॉव करना शुरू कर दिया और पूर्व में लाली छा गयी। पेड़ के नीचे सोये हुए यात्री भी जाग गये।

उन चिड़ियों की बातचीत तो रुक गयी थी पर वज़ीर के बेटे ने यह सब सुन लिया था और याद कर लिया था।

राजा का बेटा, राजकुमारी और वज़ीर का बेटा तीनों फिर अपनी यात्रा पर आगे बढ़ चले। वे बहुत दूर नहीं चले थे कि उन्होंने बहुत सारे नौकरों के साथ एक हाथी एक घोड़ा और एक पालकी सामने से आते देखे।

ये सब राजा ने यह सुन कर भिजवाये थे कि उसका बेटा अपनी नयी दुलहिन राजकुमारी और अपने दोस्त वज़ीर के बेटे के साथ घर वापस लौट रहा है।

हाथी राजा ने अपने बेटे के लिये बहुत कीमती चीज़ों से खास कर के सजवाया हुआ था था। घोड़ा वजीर के बेटे के लिये था और

पालकी जो चॉदी की बनी थी और बहुत चटकीले रंगों में सजी थी दुलहिन के लिये थी।

राजा का बेटा यह देख कर बहुत खुश हुआ और तुरन्त ही हाथी पर चढ़ने के लिये तैयार हुआ तो वजीर का बेटा तुरन्त ही वहॉ पहुॅचा और बोला — "आज मुझे इस हाथी पर चढ़ने दो राजकुमार तुम इस घोड़े पर चढ़ कर चलो।"

राजा के बेटे को वजीर के बेटे की इस सलाह पर थोड़ा आश्चर्य जरूर हुआ पर उसने सोचा कि उसके दोस्त को लग रहा है कि उसने अपने दोस्त की काफी सेवा कर ली इसलिये अब वह उससे थक गया है।

लेकिन फिर यह याद करते हुए कि उसके दोस्त ने उसको और उसकी पत्नी को बचाया है वह कुछ नहीं बोला और चुपचाप घोड़े पर चढ़ गया। हालॉकि उसके दिमाग से उसका यह अजीब व्यवहार निकला नहीं।

वे सब इस तरह से आगे चले तो थोड़ी देर बाद ही राजा का महल दिखायी देने लगा। महल का सिंहद्वार उन सबके स्वागत के लिये बहुत अच्छी तरह सजाया गया था।

उस दरवाजे के पास पहुॅच कर वज़ीर का बेटा बोला इससे पहले कि राजा का बेटा इस सिंहद्वार से हो कर महल में घुसे इस सिंहद्वार को तोड़ दिया जाये।

इस बार वज़ीर के बेटे की सलाह पर राजा के बेटे को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि वह सिंहद्वार बहुत सुन्दर बना हुआ था। और उसको तोड़ने की वज़ीर के बेटे ने कोई ख़ास वजह भी नहीं बतायी।

इस घटना से उसका दिमाग ज़रा कुछ ज़्यादा ही शक्की हो गया कि यह मेरा दोस्त कर क्या रहा है। पर फिर वही हुआ कि उसकी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए राजकुमार चुप रहा गया।

और वह बहुत सजा हुआ सुन्दर सिंहद्वार राजकुमार के उसमें से अन्दर जाने से पहले ही तोड़ दिया गया।

सब लोग महल के अन्दर पहुॅचे जहॉ राजा ने अपने बेटे का राजकुमारी का और वज़ीर के बेटे का बहुत ज़ोर शोर से स्वागत किया। वहॉ जा कर उन्होंने अपने कारनामों की कहानियॉ सुनायीं।

उनके कारनामों की कहानियॉ सुन कर राजा और राजा के दरबारियों को बहुत आश्चर्य हुआ और सबने एक आवाज में वज़ीर के बेटे की दोस्ती और वफादारी की बहुत तारीफ की।

महल की स्त्रियों ने राजकुमारी की सुन्दरता की बहुत तारीफ की कि उसका रंग दूध और गुलाल के मिले जुले रंग जैसा था। उसकी गर्दन बिल्कुल हंस की गर्दन जैसी थी।

उसकी ऑखें हिरनी की ऑखें जैसी थीं। उसके होठ इतने लाल थे जैसे बिम्बा फल[15]। उसके गाल बहुत सुन्दर थे। उसकी

[15] Bimba fruit is called pomegranate fruit in English, or Anaar in Hindi.

नाक बिल्कुल सीधी और ऊॅची थी। उसके बाल इतने लम्बे थे कि वे उसकी एड़ी तक पहुॅच रहे थे। और उसकी चाल तो इतनी शानदार थी जैसे कोई नौजवान हथिनी चलती है।

सब स्त्रियॉ राजकुमारी की सुन्दरता की इस तरह तारीफ कर रही थीं जिसकी किस्मत उसको इन लोगों के बीच खींच लायी थी।

वे सब उसके चारों तरफ बैठ गयीं और उससे तरह तरह के सवाल पूछने लगीं – उसके माता पिता के बारे में उसके पानी के नीचे वाले महल के बारे में जिसमें वह यहॉ आने से पहले रहती थी। उन्होंने उससे उस सॉप के बारे में भी पूछा जिसने उसके सब रिश्तेदारों को मारा था।

अब खाने का समय हो गया था सो सब लोग खाना खाने के लिये चले। खाने के लिये सोने के बर्तन इस्तेमाल किये गये थे।

बहुत तरह के बढ़िया बढ़िया खाने बनाये गये थे जिनमें सबसे ज़्यादा बढ़िया था रोहू मछली का बड़ा सिर। यह सिर सोने के एक कटोरे में राजा के बेटे की थाली के पास रखा हुआ था।

जब सब लोग खाना खा रहे थे तो राजा के बेटे ने वह रोहू मछली का सिर खाने के लिये कटोरे में से निकाल कर अपनी थाली में रख लिया।

कि अचानक वज़ीर के बेटे ने वह रोहू मछली का सिर उसकी थाली में से उठा लिया और अपनी थाली में रखते हुए बोला — "राजकुमार यह रोहू मछली का सिर तो आज मैं खाऊॅगा।"

यह सुन कर राजा के बेटे को गुस्सा तो बहुत आया पर फिर भी वह कुछ बोला नहीं।

उधर वज़ीर के बेटे को भी पता चल गया कि रोहू मछली का सिर ले लेने की वजह से उसका दोस्त बहुत गुस्से में है पर इसमें वह कुछ नहीं कर सकता था क्योंकि उसका यह अजीब व्यवहार उसके दोस्त की ज़िन्दगी बचाने के लिये बहुत जरूरी था।

वह इसे किसी को बता भी नहीं सकता था क्योंकि अगर वह बता देता तो वह खुद संगमरमर की मूर्ति बन जाता।

खाना खत्म हुआ तो वज़ीर के बेटे ने अपने घर जाने की इच्छा प्रगट की। अगर कोई दूसरा समय होता तो राजा का बेटा इस समय उसको उसके घर नहीं जाने देता पर उसके इतने सारे अजीब व्यवहार देख कर उसने उसकी बात मान ली और उसको हॉ कर दी।

पर वज़ीर के बेटे का अभी अपने घर जाने का कोई इरादा नहीं था क्योंकि अभी तो उसको अपने दोस्त को आखिरी खतरे से बचाना था।

सो वहॉ से तो वह यह कह कर चला गया कि वह अपने घर जा रहा है पर वह अपने घर नहीं गया बल्कि अपने हाथ में तलवार ले कर राजा के बेटे के सोने के कमरे में घुस गया।

वहॉ जा कर वह उनके पलंग के नीचे छिप कर बैठ गया और राजा के बेटे और राजकुमारी के सोने के लिये आने का इन्तजार

करने लगा। उस पलंग पर बहुत मुलायम गद्दे पड़े हुए थे और मच्छरों से बचने के लिये उसके चारों तरफ सिल्क और सुनहरी बेल से सजी हुई मसहरी लगी हुई थी।

खाना खाने के बाद जल्दी ही राजा का बेटा और राजकुमारी दोनों सोने के लिये अपने कमरे में आ गये और सो गये।

आधी रात हो गयी थी। शाही जोड़ा गहरी नींद सो रहा था। तभी वज़ीर के बेटे ने एक बहुत बड़े साइज़ का सॉप राजा के बेटे के कमरे में नाली के रास्ते से आते देखा और पलंग पर चढ़ते देखा।

वह तुरन्त ही पलंग के नीचे से निकला और उसने अपनी तलवार से उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये। उसके टुकड़ों को उसने पान सुपारी रखने वाली थाली में रख कर उनको ढक दिया।

अब ऐसा हुआ कि जब वज़ीर का बेटा सॉप को अपनी तलवार से काट रहा था तो उसके खून की एक बूँद राजकुमारी के सीने पर गिर गयी क्योंकि मसहरी के परदे नीचे नहीं गिराये गये थे।

वजीर के बेटे ने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि राजकुमारी को इस खून की बूँद से कोई नुकसान पहुँचे तो मैं उसको चाट लेता हूँ।

पर तभी उसको यह महसूस हुआ कि यह तो एक बहुत बड़ा पाप होगा कि वह एक सोती हुई नौजवान लड़की को आधा नंगा देखे। सो उसने एक कपड़े को सात बार मोड़ा, उसको अपनी

ऑखों पर बॉधा और वह खून की बूँद वहॉ से चाटने के लिये राजकुमारी के ऊपर झुका।

जब वह राजकुमारी के ऊपर से वह खून की बूँद चाट रहा था तो राजकुमारी की ऑख खुल गयी और वह चीख पड़ी। उसकी चीख ने उसके पति को भी जगा दिया जो उसके बराबर में ही सो रहा था।

राजा के बेटे ने देखा कि वज़ीर का बेटा तो उसके सामने है जबकि वह तो यह सोचे बैठा था कि वह अपने घर चला गया है। बस वह तो उसको देखते ही गुस्से में पागल सा हो गया। वह अपनी पत्नी के शरीर पर झुक कर और गुस्से में उठ कर उसको मार ही देता अगर वज़ीर के बेटे ने उसको वहीं रोक न लिया होता।

वज़ीर का बेटा बोला — "दोस्त यह सब मैंने तुम्हारी जान बचाने के लिये किया है तुम मुझे क्यों मारना चाहते हो?"

राजा का बेटा बोला — "यह तुम क्या कह रहे हो। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा। क्योंकि जबसे हम पानी के नीचे वाले महल से आये हैं तबसे तुम कुछ अजीब तरह से व्यवहार कर रहे हो।

पहले यह जानते हुए भी तुमने मुझे हाथी पर चढ़ने से रोका कि वह हाथी मेरे पिता ने मेरे लिये खास तौर पर भेजा था। मैंने सोचा कि तुमने मेरी जो सेवा की है उन्होंने तुमको कुछ पागल सा कर दिया है सो मैंने उस बात को जाने दिया।

फिर तुमने हमारे महल के इतने सुन्दर सिंहद्वार को तुड़वाया जिसको मेरे पिता ने हमारे लिये कितने मन से सजाया था। वह भी मैंने जाने दिया।

फिर शाही दावत के समय तुमने बड़ी बेशरमी के साथ मेरी थाली में से मेरी रोहू मछली का सिर उठा लिया। यह सोचते हुए कि तुम मुझसे ज़्यादा इज़्ज़त के काबिल हो मैंने उसको भी जाने दिया।

फिर तुमने बहाना बनाया कि तुम घर जा रहे हो जिसके लिये मुझे ज़रा भी दुख नहीं है क्योंकि तुम मुझे पहले ही बहुत गुस्सा कर चुके थे।

पर अब तो तुम मेरे सोने वाले कमरे में ही घुस आये। तुमने मेरे बारे में जरूर ही कुछ बुरा सोचा होगा और तुम यह कह रहे हो कि यह सब तुमने मेरी जान बचाने के लिये किया है।

मुझे यकीन है कि यह सब तुमने मेरी जान बचाने के लिये नहीं किया बल्कि मेरी पत्नी को हथियाने के लिये किया है।"

वज़ीर का बेटा गिड़गिड़ाया — "ओ मेरे दोस्त, मुझे बहुत अफसोस है कि तुम मेरे दोस्त हो कर भी मेरे बारे में ऐसा सोच रहे हो। मेहरबानी कर के कम से कम तुम तो मेरे बारे में ऐसा मत सोचो।

भगवान जानता है कि मैंने ऐसा इसलिये बिल्कुल नहीं किया कि मैं तुम्हारी पत्नी को हथिया लूँ बल्कि यह सब मैंने तुम्हारी ज़िन्दगी बचाने के लिये ही किया है। मैं बिल्कुल सच बोल रहा हूँ मेरी बात

का यकीन करो। तुम मेरे इस अजीब से व्यवहार को अच्छी तरह जान लेते अगर मैं तुम्हें यह बताने के लायक होता कि मैंने ऐसा क्यों किया।"

"और तुम बताने के लायक क्यों नहीं हो? किसने तुम्हारा मुँह बन्द कर रखा है?"

वज़ीर का बेटा बोला — "मेरी बदकिस्मती ने मेरे दोस्त मेरी बदकिस्मती ने। अगर मैंने तुमको बता दिया कि ऐसा मेंने क्यों किया तो मैं संगमरमर की मूर्ति बन जाऊँगा।"

राजा का बेटा हँसा और हँस कर बोला — "संगमरमर की मूर्ति? हा हा हा, क्या तुमने मुझे इतना बेवकूफ समझ रखा है कि मैं तुम्हारी इस बेमतलब की बात पर विश्वास कर लूँगा?"

वज़ीर का बेटा बोला — "तो मेरे दोस्त क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें वह सब बताऊँ कि मैंने ऐसा क्यों किया और फिर संगमरमर की मूर्ति बन जाऊँ तो फिर तुम तैयार रहो कि यह बताने के बाद तुम्हारा यह दोस्त संगमरमर की मूर्ति बन जायेगा।"

राजा का बेटा बोला — "ओह अब बता भी दो नहीं तो तुम मेरे हाथ से मारे जाओगे।"

वजीर का बेटा बोला — "ठीक है। इसका मतलब है कि जब तुमने मुझे मारने की ठान ही रखी है तो फिर मैं अपने सिर से यह इलजाम हटा कर ही क्यों न मरूँ कि मैंने यह सब अपने दोस्त की

ज़िन्दगी बचाने के लिये नहीं बल्कि उसकी पत्नी को हथियाने के लिये किया है।"

उसने कई बार राजा के बेटे से फिर कहा कि वह उसको यह बात बताने के लिये ज़ोर न दे पर राजा का बेटा अपने इरादों पर अटल था सो वज़ीर के बेटे ने अपनी ज़न्दगी एक बार फिर दॉव पर लगायी और बोला — "तुमको याद है पानी के नीचे वाले महल से निकलने के बाद जब हम अपने घर वापस लौट रहे थे हम सबने एक रात को एक बड़े से पेड़ के नीचे बसेरा किया था?"

"हॉ याद है।"

"और मैंने कहा था कि तुम लोग सो जाओ मैं तुम दोनों का पहरा देता हू।"

"हॉ कहा था।"

"बस यह उसी रात की बात है। तुम लोग तो सो गये और मैं पहरा देता रहा। वहॉ दो अमर चिड़ियॉ बिहंगम और बिहंगमी बात कर रही थीं जो मैंने सुन लीं। इनमें से बिहंगम तुम्हारी ज़िन्दगी में आने वाले खतरे बताता जा रहा था और बिहंगामी उन खतरों के टालने के तरीके पूछती जा रही थी।"

जब वजीर के बेटे ने हाथी वाला खतरा बता कर खत्म किया तो उसके शरीर का नीचे वाला हिस्सा पत्थर का हो गया।

उसने राजा के बेटे से कहा — "देखो दोस्त मैंने तुमसे क्या कहा था। मेरा नीचे वाला हिस्सा पत्थर का हो गया।"

राजा का बेटा बोला — "सुनाते रहो सुनाते रहो तुम अपनी कहानी। आगे बताओ।"

वजीर के बेटे ने फिर महल के सिंहद्वार की कहानी सुनायी तो उसका आधा शरीर पत्थर का हो गया। जब उसने मछली के सिर वाली कहानी बता कर खत्म की तब तक उसकी गरदन तक का हिस्सा पत्थर का हो चुका था।

वजीर का बेटा बोला — "देखो दोस्त मेरी गरदन तक का हिस्सा पत्थर का बन चुका है बस अब केवल गरदन और सिर ही रह गया है। अब अगर मैंने तुम्हें बाकी की कहानी बतायी तो मेरे ये दोनों हिस्से भी पत्थर के हो जायेंगे। क्या तुम चाहते हो कि मैं यह कहानी तुमको आगे सुनाऊॅ?"

राजा का बेटा बोला — "हॉ तुम मुझे यह कहानी पूरी बताओ। मैं इसे पूरी सुनना चाहता हूॅ।"

वजीर का बेटा दुखी हो कर बोला — "ठीक है मैं यह कहानी तुम्हें पूरी आखीर तक सुनाता हूॅ। पर अगर किसी वजह से मेरे पूरे पत्थर में बदल जाने के बाद तुम्हें मेरी इस कहानी सुनने से पछतावा हो और तुम मुझे ज़िन्दा करना चाहो तो अपने ज़िन्दा करने की एक तरकीब मैं तुम्हें पहले ही बता देता हूॅ।

कुछ महीने बाद राजकुमारी एक बच्चे को जन्म देगी। अगर उसके जन्म के तुरन्त बाद ही तुम मेरी इस संगमरमर की मूर्ति को उस बच्चे के खून से नहला दोगे तो मैं ज़िन्दा हो जाऊॅगा।"

उसके बाद उसने सॉप वाली भविष्यवाणी भी उसके बता दी। जब उसका आखिरी शब्द उसके मुँह पर था तो उसके शरीर का बचा हुआ हिस्सा भी पत्थर का हो गया। और वह एक मूर्ति के रूप में नीचे गिर पड़ा।

यह देख कर राजकुमारी बिस्तर से कूद पड़ी और वहॉ गयी जहॉ पान रखने का बर्तन रखा हुआ था। उसने पान रखने का बर्तन खोला तो देखा कि उसमें तो वाकई सॉप के टुकड़े रखे हुए हैं।

राजा का बेटा और राजकुमारी दोनों को अब इस बात का विश्वास हो गया था कि उनका मरा हुआ दोस्त उनके लिये कितना वफादार था।

वे दोनों उस संगमरमर की मूर्ति के पास गये पर वह तो अब बेजान पड़ी थी। वे बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगे पर अब रोने का क्या फायदा था क्योंकि वह मूर्ति तो अब हिलने वाली भी नहीं थी।

उन्होंने निश्चय किया कि वे उस मूर्ति को किसी सुरक्षित जगह में छिपा कर रख देंगे और जब उनके पहला बच्चा होगा तो उसके खून से उसको नहला कर अपने दोस्त को ज़िन्दा कर लेंगे।

X X X X X X X

समय गुजरा तो राजकुमारी ने एक सुन्दर बेटे को जन्म दिया। वह बच्चा अपनी मॉ पर गया था। उसका पिता और माता दोनों ही

उसकी सुन्दरता देख कर बहुत खुश थे। वह उसको मारना नहीं चाह रहे थे।

पर अपनी कसम को याद करते हुए जो उन्होंने अपने दोस्त की तरफ से खायी थी जिसकी मूर्ति कमरे के एक कोने में रखी हुई थी और उसकी उन सेवाओं को याद करते हुए जो उसने उन दोनों को लिये की थीं उन्होंने उस बच्चे के दो टुकड़े कर दिये और उसके खून से उस संगमरमर की मूर्ति को नहला दिया।

पल भर में ही वह मूर्ति जानदार हो गयी और वज़ीर का बेटा राजा के बेटे और राजकुमारी के सामने खड़ा हो गया। दोनों अपने पुराने दोस्त को फिर से ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुए।

पर वज़ीर का बेटा उस नये जन्मे बच्चे को खून में पड़ा देख कर बहुत दुखी हुआ। उसने उस मरे हुए बच्चे को उठाया एक तौलिये में लपेटा और निश्चय किया कि वह उसको ज़िन्दा कर के ही रहेगा।

सो वज़ीर के बेटे ने उस बच्चे को ज़िन्दा करने के इरादे से देश के सारे डाक्टरों से सलाह ली पर उन्होंने कहा कि वे किसी ऐसे आदमी का तो इलाज कर सकते थे जिसमें जान हो पर ऐसी किसी आदमी का इलाज नहीं कर सकते थे जिसमें जान ही न हो।

तब वज़ीर के बेटे ने अपनी पत्नी के बारे में सोचा जो एक दूर के शहर में रहती थी और काली देवी की बहुत बड़ी भक्त थी।

उसने सोचा कि शायद उसकी भक्ति से उस मरे हुए बच्चे में जान पड़ जाये। सो वह उस शहर चल दिया जहॉ उसकी पत्नी रहती थी। इस समय वह अपने पिता के घर में रह रही थी।

उनके घर के बराबर में एक बागीचा था। उसके एक पेड़ पर उसने तौलिये में लिपटे हुए मरे हुए बच्चे को लटका दिया और वह घर के अन्दर चला गया।

जब वज़ीर के बेटे ने अपने पति को काफी समय के बाद देखा तो वह बहुत खुश हुई। पर साथ में उसने यह भी देखा कि वह बहुत उदास था। वह बहुत कम बोल रहा था और ऐसा लग रहा था जैसे उसके दिमाग में कुछ घूम रहा था। उसने उससे पूछा भी कि वह इतना उदास क्यों था पर वह चुप ही रहा।

एक रात जब वे सो रहे थे तो उसकी पत्नी बिस्तर से उठी और उठ कर बाहर चली गयी। पति ने जिसको अपने दोस्त के बच्चे को जिलाने की चिन्ता में किसी भी रात को ठीक से नींद नहीं आती थी जब अपनी पत्नी को उसने इतनी रात गये घर से बाहर जाते देखा तो वह भी चुपचाप उसके पीछे चल दिया।

उसकी पत्नी काली देवी के मन्दिर में गयी जो उसके घर से बहुत दूर नहीं था। वहॉ जा कर उसने फूलों और चन्दन की अगरबत्ती से देवी की पूजा की और बोली — "हे मॉ काली मेरे ऊपर दया करो और मेरी सब मुश्किलों को दूर करो।"

देवी बोली — "तुझे और क्या दुख है बेटी। तूने बहुत दिनों तक अपने पति की वापसी के लिये मेरी प्रार्थना की अब वह वापस लौट आया है तो अब तुझे और क्या दुख है।"

वज़ीर के बेटे की पत्नी जवाब दिया — "यह तो ठीक है मॉ कि मेरा पति तो वापस आ गया है पर वह बहुत दुखी है। बहुत कम बोलता है और मेरे साथ खुश भी नहीं रहता है। बस एक कोने में चुपचाप बैठा रहता है।

इस पर देवी ने कहा — "अपने पति से पूछ कि उसके दुखी होने की वजह क्या है और फिर मुझे बता। फिर मैं देखती हूॅ।"

वज़ीर के बेटे ने देवी और अपनी पत्नी की यह बातचीत सुनी पर वह उनके सामने नहीं गया। वह वहॉ से अपनी पत्नी के आने से पहले ही घर आ गया और घर आ कर अपने बिस्तर में लेट गया।

अगले दिन उसकी पत्नी ने उसके दुख की वजह पूछी तो उसने उसको बताया कि उसके दोस्त राजा के बेटे का बच्चा मर गया है जिसको वह बचाना चाहता है।

अगले दिन उसी समय उसकी पत्नी फिर से काली के मन्दिर गयी और जा कर उसको अपने पति का दुख बताया तो देवी बोली कि ठीक है जाओ और बच्चा ले कर आओ मैं उसको ज़िन्दा कर दूॅगी।"

अगली रात वह बच्चा ले कर काली देवी के सामने गयी तो देवी ने उस बच्चे को फिर से ज़िन्दा कर दिया। वज़ीर का बेटा यह

देख कर बहुत खुश हुआ और ज़िन्दा बच्चे को ले कर राजा के बेटे और राजकुमारी के पास महल भागा गया और उनको उनका बच्चा सही सलामत वापस कर दिया।

इस बात के लिये उन सबने खूब खुशियॉ मनायी और वे सब बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

4 मूर्ति के प्यार में[16]

ग्रिम की सबसे अच्छी कहानियों में एक कहानी बहुत ही सुन्दर और दिल को छू जाने वाली कहानी है और वह है – "वफादार जौन"।[17] इसके टक्कर की कहानी "राम और लक्ष्मण"[18] वाली कहानी है। मजे की बात यह है कि केवल इटली में ही इस कहानी के सात रूप प्रचलित हैं। सबसे पहले हम इसकी शुरूआत वहॉ के एक पूरे रूप से करते हैं – "मूर्ति के प्यार में"[19]। राम और लक्ष्मण की कहानी तो तुम लोग पढ़ ही चुके हो। अब यह पढ़ो "मूर्ति के प्यार में" कहानी और "वफादार जोहानैस" कहानी आगे दी गयी है।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके दो बेटे थे। राजा का बड़ा वाला बेटा शादी नहीं करना चाहता था जबकि छोटा वाला चारों तरफ हर जगह घूम आया पर उसे उसकी पसन्द की कोई लड़की ही नहीं मिली।

अब हुआ क्या कि एक दिन वह एक शहर गया वहॉ उसने एक मूर्ति देखी तो वह उसके प्रेम में पड़ गया। उसने उस मूर्ति को खरीद लिया और अपने घर ले गया। वह मूर्ति ले जा कर उसने अपने कमरे में रख दी। वह रोज उस मूर्ति को अपने गले से लगाता और चूमता।

---

[16] In Love With a Statue. A tale from Italy.

[17] "Faithful John". By Grimms. (Tale No 6)

[18] "Ram and Laxman" by Ms Mary Frere in her book "Old Deccan days" 1868. Hindi translation of this book, "Purane Deccan ke Din" is available from hindifolktales@gmail.com .

[19] "In Love With a Statue". By Domenico Comparetti. From Monferrato. Taken from the book "Italian Popular Tales" by Thomas Crane. Hindi translation of this book, "Italy Ki Lokpriya Lok Kathayen" is available from hindifolktales@gmail.com in four parts. This story is in its first part.

एक दिन यह बात उसके पिता को पता चल गयी तो उसने उससे पूछा — "यह तुम क्या कर रहे हो? अगर तुम्हें एक पत्नी चाहिये तो एक हाड़ मॉस की लड़की को लो संगमरमर की नहीं।"

लड़के ने जवाब दिया कि वह वैसी ही लड़की लेना चाहेगा जैसी कि वह मूर्ति है और किसी तरह की नहीं। उसका बड़ा भाई उन दिनों कुछ नहीं कर रहा था तो वह वैसी लड़की की खोज में बाहर चला गया।

जब वह जा रहा था तो एक शहर में उसे एक आदमी दिखायी दिया जिसके पास एक चूहा था जो नाचता था तो आदमी जैसा लगता था। उसको देख कर उसने अपने मन में सोचा कि वह उसको खरीद लेता है और अपने भाई को दे देगा। उसके दिल बहलाने के लिये यह अच्छी चीज़ है। उसने वह चूहा खरीद लिया और आगे चल दिया।

चलते चलते वह एक और शहर में पहुँचा वहॉ उसको एक चिड़िया मिली जो बिल्कुल किसी देवदूत की तरह गाती थी। उसने अपने भाई के लिये उसको भी खरीद लिया।

घूमते घूमते वह घर वापस लौटने वाला ही था और एक सड़क से गुजर रहा था कि उसको एक भिखारी दिखायी दिया जो एक दरवाजा खटखटा रहा था। एक बहुत सुन्दर लड़की खिड़की पर आयी जिसकी शक्ल उसके भाई के पास वाली मूर्ति से बहुत मिलती जुलती थी पर वह तुरन्त ही वहॉ से चली गयी।

सो उसने भिखारी से उस घर से दोबारा भीख मॉगने के लिये कहा पर भिखारी ने मना कर दिया क्योंकि उसको डर था कि कि जादूगर जो इस समय घर से बाहर गया हुआ था कहीं जल्दी ही वापस न आ जाये और उसे खा न जाये।

पर राजकुमार ने उसे इतना सारा पैसा और दूसरी चीज़ें दीं कि वह तुरन्त ही दोबारा भीख मॉगने चला गया। पर उस बार भी वह लड़की केवल पल भर के लिये ही खिड़की पर आयी और वापस चली गयी। तब राजकुमार यह चिल्लाते हुए सड़क पर घूमने लगा कि वह शीशे ठीक करता है और बेचता है।

उस लड़की की नौकरानी ने जब यह सुना तो वह अपनी मालकिन के पास गयी और उससे शीशे देखने के लिये कहा। वह वहॉ गयी पर राजकुमार ने उससे कहा — "यहॉ तो मेरे पास बहुत ही सस्ते शीशे हैं पर अगर आपको अच्छा शीशा लेना हो तो आप मेरे जहाज़ पर चलें वहॉ आपको बहुत ही बढ़िया किस्म के शीशे मिलेंगे।"

जब वह वहॉ पहुँची तो वह उसको वहॉ से ले चला। यह देख कर वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी और आहें भरने लगी ताकि वह उसे उसके घर वापस छोड़ दे। पर यह तो ऐसा था जैसे दीवारों से बात करना।

जब वे खुले समुद्र में पहुँच गये तो उन्होंने एक बहुत बड़ी काली चिड़िया की आवाज सुनी। वह चिल्ला रही थी — "सिरीयू

सिरीयू। तुम्हारा चूहा तो बहुत सुन्दर है। तुम उसको अपने भाई के पास ले जाओगे और तुम उसका सिर उसकी तरफ घुमाओगे और उसके बारे में उसे बताओगे तो तुम संगमरमर के बन जाओगे।

सिरीयू सिरीयू। तुम्हारी चिड़िया तो बहुत सुन्दर है। तुम उसको अपने भाई के पास ले जाओगे। तुम उसका सिर उसकी तरफ घुमाओगे और उसके बारे में उसे बताओगे तो तुम संगमरमर के बन जाओगे।

सिरीयू सिरीयू। तुम्हारी यह लड़की तो बहुत सुन्दर है। तुम उसको अपने भाई के पास ले जाओगे। तुम उसका सिर उसकी तरफ घुमाओगे और उसके बारे में उसे बताओगे तो तुम संगमरमर के बन जाओगे।"

अब उसे तो पता ही नहीं था कि वह इन तीनों चीज़ों के बारे में अपने भाई से क्या और कैसे कहे क्योंकि यह सब कुछ तो वह उसी के लिये ले जा रहा था। क्योंकि उसे डर था कि इनके सबके बारे उसे बता कर तो वह खुद ही संगमरमर का बन जायेगा।

फिर भी वह चला और बन्दरगाह पर उतरा। उसने चूहे को अपने छोटे भाई को दिखाया तो उसने उसे जैसे ही लेना चाहा तो उसने उसका सिर काट दिया।

उसके बाद उसने उसे चिड़िया दिखायी जो एक देवदूत की तरह गाती थी। भाई ने उसे लेना चाहा तो बड़े भाई ने फिर उसका सिर काट दिया।

फिर वह बोला — "मेरे पास इन दोंनों से भी ज़्यादा सुन्दर एक और चीज़ है।" और उसने वह सुन्दर लड़की जो उसकी मूर्ति जैसी दिखायी देती थी उसके सामने कर दी।

लड़की को लाने वाले ने अभी तक कुछ कहा नहीं था सो छोटे भाई ने सोचा कि कहीं वह उस लड़की को उससे न ले ले तो उसने उसे जेल में डलवा दिया। वह वहॉ जेल में बहुत दिनों तक रहा पर उसने अपना मुॅह नहीं खोला। इस वजह से उसे मरवा दिया गया।

जिस दिन उसको मरना था उससे तीन दिन पहले उसने अपने भाई से कहा कि वह उससे आ कर मिल ले।

हालॉकि छोटे भाई की उससे मिलने की कोई इच्छा तो नहीं थी पर फिर भी वह राजी हो गया। जब वह अपने बड़े भाई से मिलने गया तो बड़े भाई ने उसे बताया कि रास्ते में उसको एक काली बड़ी चिड़िया मिली थी उसने मुझसे कहा था कि अगर मैं तुम्हें वह नाचता हुआ चूहा दूॅगा और उसके बारे में बताऊॅगा तो मैं पत्थर का हो जाऊॅगा।"

उसके इतना कहते है वह कमर तक पत्थर का हो गया। उसने आगे कहा — "और अगर मैंने तुम्हें गाती चिड़िया दी और उसके बारे में बताया तो भी मेरे साथ वैसा ही होगा।" यह कहते कहते वह छाती तक पत्थर का बन गया।

वह और आगे बोला — "और अगर मैंने तुम्हें यह लड़की दे दी और इसके बारे में बताया तो भी मेरे साथ यही बीतेगी।" जैसे

ही उसने अपना वाक्य खत्म किया वह सारा का सारा पत्थर का हो गया।

यह देख कर तो उसका भाई बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ा और उसको ज़िन्दा करने की कोशिश करने लगा। सब तरह के डाक्टर बुलाये गये पर कोई भी उसको ज़िन्दा न कर सका।

आखीर में एक आदमी आया जिसने कहा कि वह उसको एक शर्त पर ज़िन्दा कर सकता है कि उसे जो चाहिये वह उसे दे दिया जाये। राजा ने कहा कि वह वैसा ही करेगा जैसा वह चाहेगा।

उसने राजा के दो बच्चों का खून मॉगा। पर उनकी मॉ इसके लिये तैयार ही न हो। तब राजा ने एक नाच का इन्तजाम किया। और फिर जब उसकी पत्नी नाच रही थी तो उसने अपने दोनों बच्चों को मार दिया।

उसने उनके खून से उस पत्थर की मूर्ति को नहला दिया। तुरन्त ही मूर्ति ज़िन्दा हो गयी और वह आदमी बन कर नाच में चला गया।

जब मॉ ने उस आदमी को देखा तो उसे अपने बच्चों की याद आयी। वह भागी गयी और उनको अधमरा पाया तो बेहोश हो कर गिर पड़ी।

पास में खड़े लोगों ने उसको धीरज देने की कोशिश की पर जब उसने ऑख खोलीं और डाक्टर को देखा तो चीख पड़ी —

“ओ नीच दूर हो जाओ मेरी नजरों से। सो वह तुम हो जिसने मेरे दोनों बच्चों को मरवाया है।”

डाक्टर बोला — “मुझे माफ करें देवी। मैंने आपके बच्चों को कोई नुकसान नहीं पहुॅचाया है। आप जायें और जा कर देखें कि आपके बच्चे वहॉ हैं कि नहीं।”

वह तुरन्त ही भागी हुई उस कमरे में गयी जहॉ वे थे। वे तो वहॉ पर ठीक थे और खेल रहे थे। बल्कि खूब शोर मचा रहे थे।

तब वह डाक्टर बोला — “बेटी मैं तुम्हारा पिता जादूगर हूॅ जिसको तुम छोड़ आयी थीं। मैं तुम्हें सिखाना चाहता था कि बच्चे का प्यार क्या होता है।”

उसके बाद उन लोगों में सुलह हो गयी और सब शान्ति और खुशी से रहने लगे।

5 रैवन[20]

सच में यह एक बहुत अच्छी कहावत है "खराब दृश्य से तो खराब फैसला अच्छा" पर इसका मानना बहुत मुश्किल है क्योंकि कुछ लोगों का फैसला बिल्कुल ठीक होता है।

दूसरी तरफ लोगों के मामलों के समुद्र में मछली पकड़ने वाले शान्त समुद्र में ज़्यादा हैं जो केंकड़े पकड़ते हैं। और जो केवल वही चाहता है जो उसे चाहिये तो वह उसी पर निशाना लगाता है और सबसे चौड़ी जगह मारता है।

इसका फल यह होता है कि सब अॅधेरे में मारते रहते हैं। सब टेढ़े ढंग से सोचते हैं सब बच्चों जैसे खेलते हैं। कोई कुछ फैसला कर लेता है तो कोई कुछ। और इस तरह से बिना किसी तरकीब के मारने से लोग पछताते हैं।

ऐसा ही मामला कुछ शेडी ग्रोव के राजा के साथ हुआ। अब आप सुनिये कि यह सब कैसे हुआ। अगर आप सब मुझे शालीनता से यह बताने के लिये बुलायें और फिर मेरी तरफ ध्यान दें।

कुछ ऐसा कहा जाता है कि एक बार शेडी ग्रोव के राजा मिलूकियो[21] ने अपने राज्य का और घर का काम भी ठीक से करना छोड़ दिया था क्योंकि वह शिकार का बहुत शौकीन था। वह इस रास्ते पर इतनी दूर आ गया था कि एक दिन यह रास्ता उसको एक झाड़ी की तरफ ले गया।

[20] The Raven. (Tale No 25) Day 4, Tale No 9. Taken from the Book "Il Pentamerone" by Giambattista Basile. 1634. Hindi translation of this Book, "Il Pentamerone" is available from hindifolktales@gmail.com in three parts. This story is in its second part.

[21] Milluccio – name of the King of Shady Grove

यह एक वर्गाकार जमीन का टुकड़ा था जिस पर इतने सारे पेड़ घने घने लगे थे कि वे सूरज के घोड़ों को भी अन्दर नहीं आने देते थे।

वहॉ एक बहुत सुन्दर संगमरमर का पत्थर पड़ा हुआ था और उस पर एक रैवन[22] था जो मरा पड़ा था। राजा ने जब उसका लाल खून संगमरमर के सफेद पत्थर पर पड़ा देखा तो उसने एक लम्बी आह भरी और बोला — "क्या मुझे एक ऐसी पत्नी नहीं मिल सकती जो इस पत्थर की तरह सफेद और लाल हो। उसके बाल और भोंहें ऐसी ही काली हों जैसे इस रैवन के पंख।"

यह कह कर वह अपने विचारों में डूबा हुआ वहॉ कुछ देर तक ऐसे खड़ा रहा जैसे वह खुद ही पत्थर का हो गया हो। वह खुद भी एक संगमरमर की मूर्ति बन गया था और दूसरे संगमरमर की मूर्ति को प्यार करने लगा था।

यह कल्पना उसके दिमाग में ऐसी बस गयी कि वह ऐसी लड़की को हर जगह ढूँढने लगा। चार सेकंड में ही वह कल्पना तिनके से बढ़ कर एक खम्भे जैसी हो गयी थी।

वह एक जंगली सेब से बढ़ कर एक काशीफल जितनी बड़ी हो गयी थी। एक छोटे से अंगारे से ले कर बड़ी भट्टी जैसी हो गयी थी। एक बौने से ले

[22] Raven is a crow-like bird. See its picture above.

कर एक बड़े साइज़ के आदमी[23] जैसी हो गयी थी। अब उसके दिमाग में और कुछ था ही नहीं। यह तस्वीर उसको दिमाग में ऐसे बस गयी थी जैसे किसी ने पत्थर से पत्थर उसकी तस्वीर बना दी हो।

वह जिधर भी देखता उसे वह तस्वीर उधर ही नजर आती जिसे वह अपने दिल में लिये फिरता था। वह सब कुछ भूल गया था उसके दिमाग में बस यह संगमरमर ही संगमरमर था और कुछ नहीं।

उसके ढंग चाल सब इस पत्थर के साथ ऐसे हो गये थे कि वह चाकू की धार जैसा पतला हो गया था। और यह पत्थर एक चक्की के पत्थर की तरह था जिसने उसकी ज़िन्दगी को कुचल कर रख दिया था।

एक पत्थर के चौरस टुकड़े की तरह जिसके ऊपर उसकी हर रंग की खुशियॉ पीस कर सब मिला दी गयी हों। एक चुम्बक जिसने उसको आकर्षित कर लिया हो और फिर वह एक पीसने वाला पत्थर बन गया हो जो कभी न रुकता हो।

अखिर उसके भाई जैनेरीलो[24] ने अपने भाई को इतना पीला और अधमरा देखा तो उससे पूछा — "मरे भाई यह तुम्हें क्या हो गया है कि तुम्हारी ऑखों में इतना दुख है और तुम्हारे चेहरे से

[23] Translated for the word "Giant"

[24] Jennariello – name of the brother of Milluccio

इतनी निराशा झलक रही है। ऐसी तुम पर क्या मुसीबत आ पड़ी है। कुछ बोलो तो अपने भाई से अपना दिल खोलो तो।

कोयले की बू अगर एक कमरे में बन्द हो तो आदमियों के लिये जहर बन जाती है। पाउडर भी थोड़ा थोड़ा कर के एक पहाड़ बन जाता है और उसे हवा में उड़ा देता है। तुम कुछ बोलो तो। अपना मुॅह खोलो तो।

मुझे बताओ तो कि मामला क्या है। मैं तुम्हें हर तरीके से विश्वास दिलाता हूॅ कि अगर तुम्हारी सहायता करने के लिये हजार ज़िन्दगियॉ भी कुर्बान करनी पड़े तो मैं कर दूॅगा।"

तब मिलूकियो ने आहें भरते हुए पहले तो उसके प्यार के लिये धन्यवाद किया फिर कहा कि उसको उसके प्यार में कहीं कोई कमी नहीं है और वह उस पर पूरा विश्वास करता है।

पर इस बीमारी की कोई दवा नहीं है क्योंकि यह एक पत्थर से पैदा हुई है जहॉ उसने बिना किसी फल की आशा रखे अपनी इच्छाओं के बीज बोये थे।

पत्थर भी ऐसा कि जिसमें से कोई मुशरूम भी नहीं निकल सकता वह तो बस सिसीफस[25] का पत्थर था जिसको सिसीफस पहाड़ के ऊपर ले जाना चाहता था पर वह हमेशा वहॉ पहुॅच कर नीचे की ओर ही लुढ़क जाता था।

[25] Sisyphus was a great Greek King of Corinth who was punished by Zeus ro roll a stone continuously up the hill and when it reached the top of the hill, it would roll down again to be rolled up.

आखिर हजारों बार विनती करने पर मिलूकियो ने उसे अपने प्यार की बात बतायी। इस पर जैनेरीलो ने उसे जितनी तसल्ली वह दे सकता था दी और खुश रहने के लिये कहा। दुखी न होने के लिये कहा। उसको सन्तुष्ट करने के लिये उसने यह पक्का इरादा कर लिया था कि वह दुनियॉ भर में घूमेगा जब तक उसको उस पत्थर जैसी कोई स्त्री नहीं मिल जायेगी।

उसने उसी समय एक बड़ा जहाज़ तैयार करवाया। उसमें बेचने के लिये बहुत सारा सामान भरा खुद वह एक सौदागर की तरह से तैयार हुआ और वेनिस[26] की तरफ चल दिया जो इटली का खुद एक आश्चर्य है। वहॉ बहुत बढ़िया गुणी लोग रहते हैं। वेनिस अपनी कला और प्रकृति के लिये भी बहुत मशहूर है।

वहॉ से से वह लैवन्त[27] और फिर वहॉ से कैरो[28] चल दिया। जब वह वहॉ पहुँचा और शहर में घुसा तो उसने देखा एक आदमी बहुत सुन्दर बाज़ लिये जा रहा था। जैनैरीलो ने उसे तुरन्त ही अपने भाई के लिये खरीद लिया जो एक अच्छा शिकारी था।

जल्दी ही उसे एक और आदमी मिला जिसके पास एक बहुत ही शानदार घोड़ा था। उसने उसको भी खरीद लिया। फिर वह समुद्र

[26] Venice is a large city in Italy – known as “City of Canals”
[27] Levant is a geographical area in the Eastern Mediterranean area of Western Asia containing Syria, Lebanon, Cyprus, Turkey Israel Jordan and Palestine OR broadly Greece to Egypt.
[28] Cairo – capital of Egypt

की यात्रा की थकान से ताजा होने के लिये एक सराय में चला गया।

अगली सुबह जब रोशनी के जनरल के हुक्म पर रोशनी ने आसमान के तम्बू में सितारों की सेना पर हमला किया और सितारों ने अपनी जगह छोड़ दी तो जैनैरीलो शहर देखने के लिये निकल पड़ा।

उसकी ऑखें बिल्ली[29] की ऑखों की तरह से एक ऐसी स्त्री की तलाश में चारों तरफ घूम रही थीं जो हाड़ मॉस के चेहरे पर पत्थर जैसी हो। जब वह इस तरह से चारों तरफ देखता हुआ घूम रहा था। कभी वह इधर देख लेता तो कभी उधर देख लेता जैसे वह किसी पुलिस वाले की निगाह से बचने की कोशिश कर रहा हो।

उसको एक भिखारी दिखायी दिया जिसकी कमर पर बहुत सारे प्लास्टर और फटे कपड़े लदे हुए थे। भिखारी ने उससे पूछा — "ओ बहादुर नौजवान तुम इतने डरे हुए क्यों हो।"

जैनेरीलो बोला — "क्या मैं तुम्हें अपना हाल बताऊॅ? मेरा विश्वास करो मैं अपना हाल पुलिस को बता कर ज़्यादा अच्छा महसूस करूॅगा बजाय तुम्हारे।"

भिखारी बोला — "आराम से आराम से नौजवान आराम से। क्योंकि आदमी का मॉस पौंड से तौल कर नहीं बेचा जाता। अगर

[29] Translated for the word "Lynx"

डेरियस ने अपना दुख एक सईस को न बताया होता तो वह फारस का बादशाह न होता।[30]

यह कोई बड़ी बात नहीं होगी इसलिये तुम अपनी बात इस भिखारी को बता दो। हालॉकि कोई डंडी इतनी पतली नहीं हो सकती पर वह दॉत तो कुरेद ही सकती है।

जब जैनेरीलो ने भिखारी की ठीक बात सुनी तब उसने उसे अपने वहॉ आने की वजह बतायी।

सुन कर भिखारी बोला — "अब देखो न मेरे बेटे। हर चीज़ का हिसाब रखना कितना जरूरी है। हालॉकि मैं तो एक कूड़े का ढेर हूॅ फिर भी मैं तुम्हारी आशाओं के बागीचे को और सुन्दर बना सकता हूॅ।

अब सुनो। भीख मॉगने के बहाने मैं एक दरवाजा खटखटाऊॅगा जहॉ एक जादूगर की नौजवान और सुन्दर बेटी रहती है। तुम वहॉ ऑखें खोल कर देखना तुमको उसमें वैसी ही शक्ल मिल जायेगी जैसी कि तुम्हारा भाई चाहता है।"

ऐसा कह कर उसने पास के एक मकान का दरवाजा खटखटाया तो लिवीला[31] ने दरवाजा खोल कर एक रोटी उसको

[30] Darius was (Darius, The Great) the King of Persia who reigned from 522 BC to 486 BC. He ruled the empire at its peak, when it included much of West Asia, parts of the Caucasus, parts of the Balkans, most of the Black Sea coastal regions, Central Asia, as far as the Indus Valley in the far east and portions of north and northeast Africa including Egypt (Mudrâya), eastern Libya, and coastal Sudan.
[31] Liviella – name of magician's daughter

दी। जैसे ही जैनेरीलो ने उसे देखा वह उसको वैसी ही लगी जैसी कि मिलूकियो ने उसे बताया था।

उसने भी भिखारी को बहुत अच्छी भीख दी और उसे भेज दिया। खुद वह सराय गया और एक फेरी वाले जैसा रूप रखा दो बक्सों में दुनियॉ भर की दौलत रखी और लिवीला के घर चल दिया। रास्ते में वह अपना सामान बेचने के लिये आवाज लगाता जा रहा था।

आखिर उसने उसे बुला ही लिया। उसके पास लिवीला ने सिर पर पहनने वाली सुन्दर जालियॉ देखीं टोपियॉ देखीं। रिबन लेस रूमाल कौलर सुइयॉ आदि बहुत सारी चीज़ें देखी। जब उसने उन सबको बार बार देख लिया तो उसने उससे उसे कुछ और दिखाने के लिये कहा।

जैनेरीलो बोला — "आदरणीय मैडम। इन बक्सों में तो मेरे पास केवल रोजमर्रा की और सस्ती चीज़ें हैं पर अगर आप मेरे जहाज़ पर आयें तो मैं आपको दुनियॉ की दूसरी चीज़ें दिखाऊॅगा। वहॉ मेरे पास बहुत बड़े बड़े लौर्ड के खरीदने लायक चीज़ें हैं।"

लिवीला को उनके देखने की बहुत उत्सुकता हुई, क्योंकि लड़कियों को तो होती ही है वह बोली — "अगर मेरे पिता बाहर नहीं गये होते तो वह मुझे कुछ पैसे दे देते।"

जैनेरीलो बोला — "कोई बात नहीं। अगर वह बाहर हैं तब तो आप और भी ज़्यादा अच्छे तरीके से आ सकती हैं। क्योंकि तब

शायद वह आपको इन चीज़ों को देखने का आनन्द नहीं उठाने देते।

और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आपको इतनी शानदार चीज़ें दिखाऊँगा कि लोग आपसे ईर्ष्या करेंगे – गले का हार कान के झुमके ब्रेसलैट आदि कि आप उनको देख कर आश्चर्यचकित रह जायेंगी।"

जब लिवीला ने इतनी अच्छी चीज़ों का इतना अच्छा वर्णन सुना तो उसने अपनी एक दासी को अपने साथ के लिये बुलाया और जैनेरीलो के जहाज़ पर चल दी।

पर जैसे ही वह जहाज़ पर चढ़ी तो जैनेरीलो ने उसको तो सामान दिखाना शुरू कर दिया और नाविक को चालाकी से हुक्म दिया कि वह जहाज़ का लंगर उठा ले और मस्तूल खोल दे। ताकि इससे पहले कि लिवीला उसकी चीज़ों से नजर ऊपर उठाये जहाज़ खुले समुद्र में पहुँच जाये।

जब लिवीला को यह चाल पता लगी उसने ओलिम्पिया[32] से उलटे तरीके से व्यवहार करना शुरू कर दिया। यानी ओलिम्पिया तो इसलिये रोयी थी क्योंकि उसको एक चट्टान पर छोड़ दिया गया था पर यहॉ उसने इसलिये रोना शुरू कर दिया कि वह चट्टानों को छोड़ कर जा रही थी।

[32] Olympia

पर जब जैनेरीलो ने उसे यह बताया कि वह कौन था और वह उसे कहॉ ले जा रहा था। कैसे वहॉ उसकी खुशकिस्मती उसका इन्तजार कर रही थी। फिर उसने मिलूकियो की सुन्दरता का वर्णन किया उसकी शान का उसके गुणों का वर्णन किया। आखीर में उसके प्यार का वर्णन किया कि वह उससे कितना प्यार करता था तो वह उसको शान्त करने में सफल हो गया।

उसने खुद ने हवा से प्रार्थना की कि वह उसको जल्दी से उस दृश्य को दिखा दे जिसे अभी अभी जैनेरीलो ने उसके सामने खींचा था।

जब वे खुशी खुशी जा रहे थे तो उन्होंने जहाज़ के नीचे लहरों के उठने गिरने की आवाज सुनी और हालॉकि वे बहुत धीरे धीरे बोल रहे थे फिर भी जहाज़ के कप्तान ने तुरन्त ही समझ लिया कि यह सब क्या है।

वह चिल्लाया "सावधान जहाज़ के ऊपर वाले सब लोग सुनें। तूफान आ रहा है भगवान ही मालिक है।"

जैसे ही उसने यह कहा कि तभी हवा की सीटी जैसी आवाज के साथ जहाज़ झाग वाली लहरों से भर गया। और जब लहरें जहाज़ के दोनों तरफ थीं यह जानने की उत्सुकता में कि दूसरे लोग क्या कर रहे थे बिन बुलाये मेहमान जहाज़ के डैक पर कूद पड़े।

एक आदमी ने उनको कटोरे भर भर कर बाहर फेंका तो दूसरे ने बालटी भर भर कर फेंकना शुरू किया। एक और दूसरे ने पम्प लगा कर उसको निकाला।

जब हर नाविक अपना अपना काम करने में लगा हुआ था क्योंकि यह उसकी अपनी सुरक्षा का भी सवाल था कोई मस्तूल देख रहा था कोई उसको आगे बढ़ाने में सहायता कर रहा था जैनेरीलो सबसे ऊॅचे मस्तूल पर चढ़ गया और अपनी दूरबीन से देखने लगा कि शायद उसे कहीं कोई जमीन का टुकड़ा दिखायी दे जाये।

अगर कहीं दिखायी दे जाये तो वे कम से कम वहॉ अपना लंगर डाल सकते थे। सो लो वह अपने दो फीट वाली दूरबीन से **100** मील दूर तक देख रहा था कि उसने एक फाख्ता अपने साथी के साथ अपने जहाज़ के मस्तूल पर बैठते देखा।

नर फाख्ता ने कहा — "रूचे रूचे।"[33]

उसकी साथिन ने जवाब दिया — "क्या बात है प्रिय तुम दुखी क्यों हो।

नर फाख्ता बोला — "इस बेचारे राजकुमार ने अपने भाई को देने के लिये एक बाज़ खरीदा था पर जैसे ही वह इसे अपने हाथ में लेगा कि यह उसकी ऑखें नोच लेगा। पर अगर यह उसको उसे

[33] Rucche

नहीं देगा या फिर उसको खतरे की बात बतायेगा तो यह संगमरमर का बन जायेगा।"

इसके बाद वह फिर से रोने लगा "रूचे रूचे।"

मादा फाख्ता बोली — "अब क्या। तुम अब भी रो रहे हो। अब क्या कुछ और नया होने वाला है।"

नर फाख्ता बोला — "इस बेचारे ने उसके लिये एक घोड़ा भी खरीदा है पर जैसे ही वह पहली बार उस पर चढ़ेगा तो घोड़ा उसकी गर्दन तोड़ देगा। पर अगर वह उसको उसे नहीं देगा या फिर उसको सावधान करेगा तो खुद संगमरमर का बन जायेगा।"

नर फाख्ता फिर रो कर बोला "रूचे रूचे।"

मादा फाख्ता फिर बोली — "अब क्या बात है। अब तुम क्यों रो रहे हो।"

नर फाख्ता बोला — "रूचे यह राजकुमार उसके लिये एक पत्नी भी ले कर जा रहा है। पर पहली ही रात को जब वे दोनों सोने जायेंगे तब एक भयानक ड्रैगन उन दोनों को खा जायेगा। अगर यह उसको भाई के पास नहीं ले जायेगा या उसको इस खतरे के बारे में सावधान करेगा तो खुद संगमरमर का बन जायेगा।"

जैसे ही उसने यह बोला तो तूफान रुक गया और हवाऐं भी शान्त हो गयीं पर जैनेरीलो के दिल में जो कुछ उसने चिड़ियों की जबानी सुना उसे सुन कर एक बाहर वाले तूफान से भी ज़्यादा भयानक तूफान उठने लगा।

यह तूफान बाहर वाले तूफान से बीस गुना ज़्यादा था। उसे लग रहा था जैसे वह सारा कुछ समुद्र में फेंक दे ताकि वह ये सब चीज़ें अपने भाई के पास न ले जा सके ताकि वे उसको नुकसान न पहॅुचा सकें।

दूसरी तरफ उसने अपने बारे में सोचा कि दान तो अपने घर से ही शुरू होता है। इस बात से डरते हुए कि अगर वह ये चीज़ें अपने भाई के पास नहीं ले जाता या उसे इस खतरे के बारे में पहले से बताता है तो वह पत्थर का हो जायेगा उसने यह तय किया कि उसको सच पर ध्यान देना चाहिये बजाय सम्भावना पर। क्योंकि कमीज उसके ज़्यादा पास थी बजाय जैकेट के।

जब वह शेडी ग्रोव पहॅुचा तो उसने देखा कि उसका भाई तो किनारे पर खड़ा है। उसने दूर से ही देखा कि वह जहाज़ के वापस आने पर बहुत खुश था। और जब उसने देखा कि उस जहाज़ पर तो वह भी थी जो उसके दिल में बसी हुई थी तब तो वह बहुत ही खुश हुआ।

उसने दोनों चेहरों को साथ साथ रख कर देखा तो उसने देखा कि इस चेहरे और उस चेहरे में बाल भर का भी अन्तर नहीं था। यह देख कर इतना खुश था कि खुशी के मारे वह झुका जा रहा था।

सो जब वह जहाज़ से नीचे उतरा तो उसके भाई ने उसको गले लगाया और पूछा — "यह कैसा बाज़ है जो तुम्हारी मुट्ठी पर बैठा हुआ है।"

जैनेरीलो बोला — "मैंने इसको तुम्हें देने के लिये ही खरीदा था।"

मिलूकियो बोला — "इससे लगता है कि तुम मुझे वाकई बहुत प्यार करते हो क्योंकि तुम हमेशा मेरी खुशी ही ढूँढते रहते हो। सच तो यह है कि अगर तुम मेरे लिये कोई कीमती खजाना भी लाये होते तो मुझे इतनी खुशी नहीं होती जितनी कि इस बाज़ के लाने पर हुई है।"

और जैसे ही वह उसको अपने हाथ में लेने के लिये बढ़ा जैनेरीलो ने तुरन्त ही एक चाकू निकाला जो वह अपने साथ लिये था और उसकी गर्दन काट दी।

उसका यह काम देख कर तो राजा ऑखें फाड़े खड़ा देखता रह गया। उसने सोचा कि लगता है कि उसका भाई पागल हो गया था इसी लिये उसने ऐसा पागलपने का काम किया। पर उसने सोचा कि उसके आने की खुशी को खराब नहीं करना चाहिये इसलिये वह चुप रह गया।

उसके बाद उसकी निगाह घोड़े पर पड़ी तो उसने अपने भाई से पूछा कि वह घोड़ा किसका था। तो भाई ने बताया कि वह घोड़ा भी उसी के लिये था। यह सुन कर उसकी इच्छा हो आयी कि वह

उसकी सवारी करे। पर जैसे ही वह चढ़ने के लिये छल्ले देख रहा था कि जैनेरीलो ने घोड़े की टॉगें काट दीं।

यह देख कर राजा को फिर बहुत गुस्सा आया। उसको लगा कि जैनेरीलो ने यह काम उसको नाराज करने के लिये किया है सो उसका अपना गुस्सा और ऊपर बढ़ने लगा।

फिर भी उसने सोचा कि अपना गुस्सा दिखाने का यह कोई सही समय नहीं है कहीं ऐसा न हो कि नयी दुलहिन का मुॅह देखने का भी आनन्द खत्म हो जाये जिसे देखते हुए वह कभी थकेगा नहीं।

जब वे शाही महल में आये तो उसने शहर के सब लौर्ड और लेडीज़ को बुलाया। एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया गया। इस समय वह कमरा ऐसा लग रहा था जैसे कि वह घुड़सवारों के घुड़सवारी सीखने का स्कूल हो। जब नाच खत्म हो गया तो फिर एक दावत हुई उसके बाद सब लोग आराम करने चले गये।

अब जैनेरीलो के दिमाग में तो केवल एक ही बात घूम रही थी कि वह अपने भाई की ज़िन्दगी कैसे बचाये। वह अपने भाई के पलंग के पीछे जा कर छिप गया।

वह ड्रैगन के लिये पहरा दे रहा था कि लो आधी रात के समय वहॉ एक बहुत ही बड़ा और भयानक ड्रैगन आया। उसकी ऑखों से लपटें निकल रही थीं और मुॅह से धुॅआ। उसकी शक्ल से जो डर टपक रहा था उससे डरों को डराने वाला भी मुॅह छिपा कर बैठा जाये।

जैसे जैनेरीलो ने उस राक्षस को देखा उसने उसे मारने की सोची। उसने अपनी दमिश्क की तलवार निकाली और उसे बॉये दॉये चलाना शुरू कर दिया। फिर उसने उसे एक इतने ज़ोर से मारा कि राजकुमार के पलंग के खम्भे के दो टुकड़े हो गये।

राजकुमार जाग गया और ड्रैगन गायब हो गया।

जब मिलूकियो ने अपने भाई के हाथ में तलवार देखी और पलंग के खम्भे को दो हिस्सों में टूटे पड़े देखा तो वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "कोई है कोई है। भाई को धोखा देने वाला मुझे मारने आया है।"

शोर सुन कर कई नौकर जो पास वाले कमरों में ही सोते थे वहॉ भागे आये। राजा ने उनको हुक्म दिया कि वह जैनेरीलो को बॉध लें और उसी समय उसे जेल में डाल दें।

अगले दिन सूरज ने जैसे ही रोशनी बॉटने के लिये अपना बैंक खोला तो राजा ने अपने सलाहकारों की काउन्सिल बुलायी और जब उसने बताया कि रात क्या हुआ था कि किस तरह से उसने बाज़ को मारा फिर घोड़े को मारा और अब वह उसको भी मारना चाहता था। सबने कहा कि ऐसे आदमी को यानी जैनेरीलो को मार देना चाहिये।

लिवीला की सारी प्रार्थनाऐं बेकार गयीं। वे राजा का दिल न पिघला सकीं। राजा ने कहा — "प्रिये तुम मुझे प्यार नहीं करतीं। तुम अपने देवर की ज़्यादा इज़्ज़त करती हो बजाय मेरी ज़िन्दगी

के। तुमने अपनी ऑखों से देखा है कि यह हत्यारा कुत्ता एक ऐसी तलवार से मुझे मारने आया जिससे हवा में बाल भी काटा जा सकता है। अगर मेरे पलंग के खंभे ने मेरी जान न बचा ली होती तो तुम अब तक विधवा हो गयी होतीं।"

ऐसा कहते हुए उसने कहा कि उसके हुक्म का पालन किया जाये।

जब जैनैरीलो ने यह सजा सुनी और देखा कि भाई की ज़िन्दगी बचाने का उसे यह इनाम मिल रहा है उसे समझ ही नहीं आया कि वह क्या कहे या क्या करे।

अगर उसने कुछ नहीं कहा तो बुरा होगा और अगर नहीं कहा तो उससे भी बुरा होगा। इसके अलावा वह जो भी करेगा वह पेड़ से भेड़िये के मुॅह में ही गिरने के बराबर होगा।

अगर वह चुप रहा तो उसका सिर कुल्हाड़ी से काट दिया जायेगा और अगर वह बोला तो ज़िन्दगी भर के लिये पत्थर का बन जायेगा।

आखिर बहुत सोचने विचारने के बाद उसने यह निश्चय किया कि वह उनको इसकी वजह बता कर ही रहेगा ताकि वह अपने आखिरी दिन तक एक निरपराध की ज़िन्दगी बिता सके। बजाय इसके कि वह सच को छिपा कर रखे और एक धोखा देने वाले के नाम से इस दुनियॉ से जाये।

सो उसने राजा को एक सन्देश भेजा कि उसको अपने हाल के बारे में उससे कुछ कहना है। उसको राजा के सामने लाया गया जहॉ पहले उसने एक बड़ा परिचय वाला भाषण दिया जिसमें उसने बताया कि वह अपने भाई को कितना प्यार करता था।

फिर उसने उस धोखे के बारे में बताया जो उसने लिवीला को अपने भाई की खुशी के लिये ही दिया था। फिर उसने बाज़ के बारे में कही गयी फाख्ताओं की बातचीत सुनायी।

फिर कैसे पत्थर का बनने से बचने के लिये उसने बिना राजकुमार को बताये बाज़ को मार दिया ताकि राजकुमार देख सके। जब वह यह बोल रहा था तो उसकी टॉगें पत्थर की होती जा रही थीं।

और जब उसने घोड़े का मामला सुनाना शुरू किया तो उसी तरह से वह कमर तक पत्थर का बन गया। उसका सारा शरीर बिल्कुल अकड़ रहा था। यह एक ऐसी चीज़ थी जो अगर कभी किसी दूसरे समय पर होती तो शायद वह उसको देखने के लिये पैसा देता पर आज तो उसका दिल रो रहा था।

आखीर में जब वह ड्रैगन वाली बात बताने लगा तब तो वह सिर से पैर तक कमरे में एक मूर्ति बना खड़ा था।

यह देख कर राजा ने अपनी गलती के लिये खुद को बहुत कोसा कि उसने अपने इतने प्यारे भाई के लिये इतनी जल्दी में ऐसी सजा सुना दी थी। उसने अपने भाई का एक साल तक शोक

मनाया। जब भी वह अपने भाई के बारे में सोचता तो बस उसकी ऑखों से ऑसुओं की नदी बह निकलती।

इस बीच लिवीला ने दो बेटों को जन्म दिया जो दुनियॉ के दो सबसे सुन्दर प्राणी थे। कुछ महीनों बाद रानी तबियत बहलाने के लिये जंगल में गयी।

पिता इत्तफाक से अपने दोनों बेटों के साथ कमरे के बीच में खड़ा था और ऑसुओं भरी ऑखों से मूर्ति की तरफ देख रहा था जो उसकी बेवकूफी की यादगार थी जिसने उससे आदमियों में फूल उसका भाई छीन लिया था।

कि तभी एक बहुत ही आदरणीय और शाही किस्म का आदमी वहॉ प्रगट हुआ। उसके लम्बे लम्बे बाल उसके कन्धों पर बिखरे हुए थे। उसकी दाढ़ी ने उसकी छाती को ढक रखा था।

राजा को सिर झुकाते हुए उसने राजा से कहा — "योर मैजेस्टी इस भले भाई को इसको इसकी पुरानी हालत में लाने का क्या देंगे।"

राजा बोला — "मैं अपना राज्य दे दूॅगा।"

आदमी बोला — "नहीं। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसका भुगतान पैसों में हो सके। यह तो ज़िन्दगी का मामला है तो इसका भुगतान भी ज़िन्दगी से ही होना चाहिये।"

तब राजा ने कुछ तो जैनैरीलो से प्यार की वजह से और कुछ उसके साथ अन्याय करने की वजह से आदमी से कहा — "आप

मेरा विश्वास करें सर उसकी ज़िन्दगी के लिये मैं अपनी ज़िन्दगी तक दे दूँगा। अगर वह इस पत्थर में से निकल आता है तो मैं इस पत्थर में बन्द होने के लिये तैयार हूँ।"

यह सुन कर बूढ़ा बोला — "बिना तुम्हारी ज़िन्दगी को खतरे में डाले क्योंकि एक आदमी को बड़ा करने में काफी समय लगता है तुम्हारे बच्चों के खून को इस संगमरमर की मूर्ति पर मलने से यह मूर्ति तुरन्त ही ज़िन्दा हो जायेगी।"

राजा बोला — "अरे बच्चे तो मैं फिर भी पा सकता हूँ पर दूसरे भाई को देखने की तो मुझे कोई आशा नहीं है।"

कह कर उसने अपने दोनों भोले भाले बच्चों की उस पत्थर की मूर्ति के सामने बलि चढ़ा दी। उनका खून मूर्ति पर मल दिया। मूर्ति तुरन्त ही ज़िन्दा हो गयी। राजा ने अपने भाई को गले लगा लिया।

दोनों बच्चों की लाशों को एक ताबूत में बन्द कर दिया ताकि उनको पूरी इज़्ज़त के साथ दफ़नाया जा सके।

उसी समय रानी वापस आ गयी। राजा ने अपने भाई को छिपने के लिये कहा और रानी से बोला — "तुम मुझे क्या दोगी अगर मैं अपने भाई को फिर से ज़िन्दा कर दूँ।"

लिवीला बोली — "मैं आपको अपना सारा राज्य दे दूँगी।"

राजा ने पूछा — "क्या तुम अपने बच्चों का खून दे सकती हो।"

रानी बोली — "नहीं वह तो नहीं। क्योंकि मैं इतनी बेरहम नहीं हो सकती कि मैं अपने ही हाथों से अपने ऑखों के तारे निकाल दूॅ।"

राजा बोला — "अफसोस अपने भाई को ज़िन्दा देखने के लिये मैंने अपने बच्चों को ही मार डाला है। क्योंकि यही जैनैरीलो की ज़िन्दगी की कीमत थी।"

इतना कह कर राजा ने रानी को ताबूत में रखी दोनों छोटे बच्चों की लाशें दिखा दीं। जब उसने यह दृश्य देखा तो उसने तो पागलों की तरह से रोना शुरू कर दिया।

"ओ मेरे बच्चों, ओ मेरी ज़िन्दगी, ओ मेरे दिल की खुशी, मेरे खून के फव्वारों। किसने सूरज की खिड़कियों को लाल रंग दिया है। किसने बिना डाक्टर की सलाह के मेरी ज़िन्दगी की नस काट डाली है।

उफ़ मेरे बच्चों। अब तो मुझसे मेरी आशा भी छीन ली गयी है। मेरी रोशनी बुझा दी गयी है। मेरी खुशी को जहर दे दिया गया है। मेरा सहारा चला गया है। तुमको तलवार से मार दिया गया है। मेरा कलेजा दुख से छलनी हुआ जा रहा है। तुम खून में डूबे हुए हो और मैं ऑसुओं में।

अफसोस कि अपने चाचा को ज़िन्दगी देने के लिये तुमने अपनी मॉ को ही मार दिया है क्योंकि मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकती। मेरी दुखी ज़िन्दगी के सबसे सुन्दर कपड़े का नमूना, मेरी आवाज का

ऑरगैन[34] तो अब बन्द है क्योंकि उसकी तो धौंकनी ही ले ली गयी है।

ओ मेरे बच्चों। तुम अपनी मॉ को जवाब क्यों नहीं देते। वह मॉ जिसने कभी तुम्हारी नसों में अपना खून दिया था आज तुम्हारे लिये अपनी ऑखों से रो रही है।

पर मेरी किस्मत बता रही है कि मेरी खुशी का फव्वारा सूख गया है। अब मैं ज़िन्दगी की खुशियों का आनन्द लेने के लिये और ज़िन्दा नहीं रहूँगी। बस अब मैं तुम्हें ढूँढने के लिये आती हूँ।"

इतना कह कर वह नीचे कूदने के लिये कमरे की खिड़की की तरफ भागी कि तभी उसका जादूगर पिता उसी खिड़की से बादलों के साथ अन्दर आया और चिल्ला कर बोला — "रुक जाओ लिवीला रुक जाओ। मैंने अभी अभी उसे पूरा कर लिया है जो मैं पूरा करना चाह रहा था। मैंने एक ही पत्थर से तीन चिड़ियें मार दी हैं।

मैंने जैनेरीलो से अपना बदला ले लिया है जो मेरे घर मुझसे मेरी बेटी को छीनने आया था। मैंने उसको इतने महीनों तक एक संगमरमर की मूर्ति में कैद कर रखा था। मैंने तुम्हें भी तुम्हारे बुरे व्यवहार की सजा दे ली है कि तुम मुझसे इजाज़त लिये बिना जहाज़

[34] Organ – In music, the organ is a keyboard instrument of one or more pipe divisions or other means for producing tones, each played with its own keyboard, played either with the hands on a keyboard or with the feet using pedals. The organ is a relatively old musical instrument. There are many kinds of organ. See the picture of one kind above.

पर चढ़ कर यहॉ चली आयी थीं तुम्हारे बच्चों को उनके पिता के हाथ से मरवा कर।

मैंने उस राजा को भी सजा दे दी है जो वह सूरत अपने दिमाग में लिये फिरता रहा। मैंने पहले उसको उसके अपने भाई का जज बनाया और फिर उसी के हाथ से उसी के अपने बच्चों की हत्या करवा दी।

पर मैं केवल तुम्हारे ऊपर के बाल काटना चाहता था न कि तुम्हारी खाल उधेड़ना चाहता था। अब मेरी इच्छा यह है कि मैं इस सब जहर को मीठे में बदल दूॅ। इसलिये तुम जाओ और अपने बच्चों और मेरे धेवतों को लो वे अब पहले से भी ज़्यादा सुन्दर हो गये हैं।

और तुम मिलूकियो आओ मेरे गले लग जाओ। मैं तुम्हें अपना दामाद मानता हूॅ और अपने बेटे जैसा जानूॅगा। जैनेरीलो का अपराध मैं माफ करता हूॅ क्योंकि यह सब उसने अपने भाई के प्यार में किया।"

जैसे ही वह यह कह कर चुका दोनों बच्चे वहॉ आ गये। नाना तो उनके देख कर सन्तुष्ट ही नहीं हो पा रहा था वह उनको बार बार गले से लगा कर चूमे जा रहा था।

इस खुशी के बीच तीसरा सहने वाला जैनेरीलो भी वहॉ आ गया जिसने बहुत सारे तूफानों का सामना किया था अब वह मैकेरोनी के पानी में तैर रहा था।

पर इतनी खुशी मिलने पर भी वह अपनी पुरानी ज़िन्दगी के खतरों को नहीं भूला। वह हमेशा यही सोचता रहा कि उसके भाई ने कितनी बड़ी गलती की थी।

किसी आदमी को कितना सावधान रहना चाहिये कि वह किसी गड्ढे में न गिर पड़े क्योंकि —

इन्सान के सारे फैसले झूठे और तर्कहीन होते हैं।

6 वफादार जोहानैस[35]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इसे ग्रिम्स भाइयों ने लिखा है।

एक बार की बात है कि एक राजा था जो बहुत बीमार था। उसने सोचा कि लगता है कि मैं तो बस अब मर ही जाऊॅगा। वह बोला — "मेरे वफादार जोहानैस को बुलाओ।"

वफादार जोहानैस उसका एक बहुत ही वफादार नौकर था और इसी लिये वह इसी नाम से जाना जाता था क्योंकि वह उसका ज़िन्दगी भर वफादार रहा था।

जब वह राजा के बिस्तर के पास आया तो राजा ने उससे कहा — "मेरे प्यारे वफादार जोहानैस। मुझे लगता है कि मैं अब और नहीं जी पाऊॅगा। मेरी एक ही चिन्ता है और वह है मेरा बेटा। वह अभी छोटा है और ठीक से सोचने और फैसला करने लायक नहीं है।

मैं तब तक शान्ति से नहीं मर पाऊॅगा जब तक तुम मुझसे यह वायदा न करो कि तुम उसे वह सब कुछ सिखा दोगे जो उसको सीखना चाहिये। तुम उसके पालने वाले पिता बनोगे।"

---

[35] Faithful Johannes. A folktale from Germany. By Grimm Brothers. Tale No 6. Translated by DL Ashliman. 1819 edition. Taken from the Web Site : https://sites.pitt.edu/~dash/grimm006.html

वफादार जोहानैस बोला — "मैं उसको कभी नहीं छोड़ूँगा। उसकी वफादारी से सेवा करूँगा चाहे उसमें मेरी जान ही क्यों न चली जाये।"

यह सुन कर राजा ने कहा — "अब मैं आराम और शान्ति से मर सकूँगा। मेरे मर जाने के बाद उसे सारा किला दिखा देना। सारे कमरे दिखा देना सारी तिजोरियॉ और वह खजाना दिखा देना जो उन तिजोरियों में रखा हुआ है।"

पर लम्बी वाली गैलरी में जो आखिरी कमरा है जिसमें "सुनहरी छत वाली राजकुमारी" की तस्वीर रखी हुई है वह उसे मत दिखाना। क्योंकि अगर वह उसे देख लेगा तो वह उसके प्यार में पागल हो जायेगा।

वह उसको देख कर बेहोश भी हो सकता है। और उसके लिये अपने आपको खतरे में डालने के लिये तैयार हो जायेगा। उससे तुम्हें उसे बचाना होगा।"

वफादार जोहानैस के एक बार फिर राजा से वायदा करने के बाद कि जैसा उसने उससे कहा था वह वैसा ही करेगा राजा चुप हो गया। उसका सिर तकिये पर से नीचे गिर गया था और वह मर गया।

राजा को दफ़नाने के बाद वफादार जोहानैस ने छोटे राजा को वह सब बताया जो उसने राजा को मरते समय कहा था। फिर वह बोला — "मैं अपना वायदा जरूर पूरा करूँगा। मैं आपके साथ भी

उसी तरह से वफादार रहूँगा जैसे मैं आपके पिता के साथ वफादार रहा हूँ चाहे मेरी जान ही क्यों न चली जाये।"

जब दुख का समय खत्म हो गया तो वफादार जोहानैस ने राजकुमार से कहा — "आइये। अब समय आ गया है जब आपको अपनी विरासत में मिली चीज़ें देख लेनी चाहिये। आइये सबसे पहले मैं आपको आपका किला दिखाता हूँ।"

कह कर वह उसको सब जगह ले गया। उसने राजकुमार को सारा किला दिखाया सारे शानदार कमरे दिखाये पर उनमें से एक कमरा उसने उसको खोल कर नहीं दिखाया। यह वही कमरा था जिसे राजा ने उसे दिखाने के लिये मना किया था जिसमें वह खतरनाक तस्वीर रखी हुई थी।

वह तस्वीर उस कमरे में कुछ इस तरह से रखी हुई थी कि जब दरवाजा खोला जाता था तो वह दरवाजा खोलने वाले को सामने ही दिखायी पड़ती थी। वह इतनी अच्छी तरह से बनायी गयी थी कि वह तस्वीर बिल्कुल ज़िन्दा और सॉस लेती हुई लगती थी और दुनियॉ की सबसे सुन्दर तस्वीर लगती थी।

छोटे राजा ने देखा कि वफादार जोहानैस हमेशा ही उस कमरे के सामने से निकल जाता पर उसको खोलता नहीं था। एक दिन उसने पूछा — "तुम इस दरवाजे को मेरे लिये क्यों नहीं खोलते।"

वफादार जोहानैस हमेशा यही जवाब देता कि "इस कमरे में कुछ डरावनी चीज़ है जो आपको डरा देगी। इसलिये मैं इसे नहीं खोलता।"

छोटा राजा बोला — "मैंने सारा किला देख लिया है अब मैं इस कमरे को भी देखना चाहता हूॅ।"

कह कर वह उस कमरे का दरवाजा तोड़ने की कोशिश करने वाला ही था कि वफादार जोहानैस ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा — "मैंने आपके पिता से यह वायदा किया था कि आप यह कमरा नहीं देखेंगे। क्योंकि इस कमरे का खोलना मेरे और आपके दोनों के लिये बदकिस्मत हो सकता है।"

छोटा राजा बोला — "नहीं नहीं। अगर मैं इसको अन्दर से नहीं देखूॅगा तो निश्चय ही मुझे अच्छा नहीं लगेगा। जब तक मैं इसे अन्दर से नहीं देख लूॅगा तब तक मुझे दिन और रात कभी चैन नहीं पड़ेगा। मैं यहॉ से हिलूॅगा भी नहीं जब तक तुम इस दरवाजे को खोलोगे नहीं।"

वफादार जोहानैस ने देखा कि अब तो कोई रास्ता नहीं रह गया है सो भारी दिल से आहें भरते हुए उसने बड़े से चाभी के गुच्छे से एक चाभी निकाली और उस कमरे का दरवाजा खोल दिया।

यह सोचते हुए कि अगर वह छोटे राजा से पहले अन्दर घुसा तो शायद छोटा राजा वह तस्वीर न देख पाये इसलिये दरवाजा खोलने के बाद वही सबसे पहले अन्दर घुसा।

पर इससे क्या भला हो सकता था। उसने वह तस्वीर वफादार जोहानैस के कन्धे के ऊपर से देख ली। लड़की की तस्वीर देखते ही जो कि बहुत शानदार थी और सोने और कीमती रत्नों से चमक रही थी वह बेहोश हो कर गिर पड़ा। बेचारे वफादार जोहानैस ने उसको उठाया और उसके बिस्तर तक ले जा कर उसे वहॉ लिटा दिया।

उसने सोचा — "अब तो हमारे ऊपर यह बदकिस्मती टूट ही पड़ी है पर ओ लौर्ड अब यह खत्म कैसे होगी।"

उसने छोटे राजा को थोड़ी सी वाइन पिलायी ताकि उसके अन्दर थोड़ी सी ताकत आ सके। होश में आते ही उसने पहला सवाल यही पूछा — "यह इतनी सुन्दर तस्वीर किसकी है?"

वफादार जोहानैस बोला — "यह तस्वीर "सुनहरी छत की राजकुमारी" की तस्वीर है।"

छोटा राजा बोला — "मुझे तो उससे इतना प्यार हो गया है कि अगर पेड़ की सारी पत्तियॉ भी जीभ हो जायें तो भी उसको नहीं बता सकतीं। मैं उसको पाने के लिये अपनी जान भी दे सकता हूॅ। तुम तो मेरे बहुत वफादार जोहानैस हो मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो।"

वफादार जोहानैस बेचारा बहुत देर तक सोचता रहा कि इस मामले से कैसे सिलटा जाये क्योंकि इस राजा की बेटी को तो देखना भी मुश्किल था।

आखिर उसे एक तरीका समझ में आ ही गया। उसने छोटे राजा से कहा — "इसके चारों तरफ हर चीज़ सोने की है – मेज कुर्सी प्लेटें प्याले कटोरे और घर की दूसरी चीज़ें। और आपके खजाने में पॉच टन सोना है।

क्यों न हम शाही सुनार से कहें कि वह एक टन सोने के कई तरह के बर्तन पक्षी जानवर आदि बना दे। मुझे आशा है कि वह उन्हें जरूर पसन्द करेगी। सो हम उन सबके साथ उससे जा कर मिलेंगे। हम इसी तरह से अपनी किस्मत आजमाते हैं।"

छोटे राजा ने बहुत सारे सुनारों को बुलवाया और उन्हें बहुत शानदार शानदार चीज़ें बनाने के लिये कहा सो वे दिन रात उन्हें बनाने में लग गये।

जब वह सारा सामान तैयार हो गया तो वफादार जोहानैस ने एक व्यापारी का रूप बनाया और उस सब सामान को एक जहाज़ पर लदवा दिया। छोटे राजा ने भी ऐसा रूप रखा जिससे उसे कोई पहचान न सके। और फिर दोनों उस देश को चल दिये जहॉ वह सुनहरी छत की राजकुमारी रहती थी।

वफादार जोहानैस ने छोटे राजा से कहा कि वह अभी जहाज़ पर ही रहे और उसका इन्तजार करे — "हो सकता है कि मैं राजकुमारी को अपने साथ ही ले आऊॅ इसलिये ज़रा ध्यान रखना कि यहॉ सब ठीकठाक रहे। सारे जहाज़ को सजा कर रखना और सोने के बर्तनों को बाहर लगा कर रखना।"

फिर उसने कई तरह की सोने की बनी हुई चीज़ें अपने साथ लीं किनारे पर गया और सीधे शाही किले की तरफ चल दिया। जब वह किले के अन्दर घुसा तो उसने देखा कि वहॉ एक कुँए के पास एक बहुत सुन्दर लड़की खड़ी हुई है। उसके हाथ में दो सोने की बालटियॉ हैं जिनसे वह उसमें से पानी खींच रही है।

वह अपना चमकता हुआ पानी भर कर पलट कर वापस जाने वाली ही थी कि उसने अजनबी को देखा। उसने उससे पूछा कि वह कौन है।

वह बोला — "मैं एक व्यापारी हूँ।" कहते हुए उसने अपना ऐप्रन खोल कर उसे अपना कुछ सामान दिखा दिया।

उसने अपनी बालटियॉ जमीन पर रख दीं और उन सोने की चीज़ों को एक एक कर के अलटते पलटते बोली — "अरे कितनी सुन्दर सुन्दर सोने की चीज़ें हैं।"

उसने अजनबी का हाथ पकड़ लिया और उसे ऊपर ले चली। वह राजकुमारी की अपनी नौकरानी थी। जब राजकुमारी ने वे चीज़ें देखीं तो व्ह उनको देख कर बहुत खुश हुई और बोली — "ओह ये सारी ही चीज़ें कितने सुन्दर तरीके से बनायी गयी हैं कि मैं तो तुमसे ये सब खरीद लूँगी।"

पर वफादार जोहानैस बोला — "मैं तो एक अमीर व्यापारी का केवल एक नौकर हूँ। ये जो चीज़ें मेरे पास यहॉ हैं इनका उन चीज़ों से तो कोई मुकाबला ही नहीं जो मेरे मालिक के पास जहाज़ में हैं।

वे तो इनसे भी कहीं ज़्यादा कीमती और कहीं ज़्यादा सुन्दर हैं जो शायद ही कभी सोने की बनायी गयी हों।"

जब उसने यह इच्छा प्रगट की कि वह सारा सामान वहॉ उसके पास लाया जाये तो वफादार जोहानैस बोला — "उस सबको यहॉ लाने में तो बहुत दिन लग जायेंगे। इसके अलावा उनको दिखाने के लिये कई कमरों की जरूरत पड़ेगी और फिर आपका मकान भी तो इतना बड़ा नहीं है इसलिये आप अगर उनको वहीं चल कर देख सकें तो ज़्यादा अच्छा है।"

इस बात ने तो उसको सोने की चीज़ों को देखने की इच्छा को और भी अधिक जगा दिया और उसे और भी अधिक उत्सुक कर दिया। सो आखिर वह बोली — "तो चलो फिर मुझे जहाज़ पर ही ले चलो। मैं खुद ही वहॉ जहाज़ पर जा कर तुम्हारे मालिक का खजाना देखूॅगी।"

वफादार जोहानैस को भी इसी का इन्तजार था। वह इसके लिये तुरन्त ही तैयार हो गया। वह उसे वहॉ ले गया।

जब छोटे राजा ने राजकुमारी को आते देखा तो वह तो उसको उसकी तस्वीर से भी ज़्यादा सुन्दर लगी। उसको लगा कि उसके तो दिल की धड़कन ही रुक जायेगी। वह जहाज़ पर चढ़ी और छोटा राजा उसको अन्दर ले गया।

पर वफादार जोहानैस बाहर ही रहा और राजकुमारी जैसे ही अन्दर गयी उसने जहाज़ वालों को जहाज़ खेने का हुक्म दे दिया।

उसने उनसे कहा कि सारे मस्तूल खोल दिये जायें और जहाज़ को चिड़िया की तरह उड़ा कर ले चलो।

उधर अन्दर छोटा राजा राजकुमारी को सोने के बर्तन और बहुत सारी चीज़ें जो वह खास उसके लिये बनवा कर लाया था दिखा रहा था।

उन सब चीज़ें को देखते देखते उसे घंटों बीत गये। उन सबको देख देख कर वह इतनी खुश थी कि उसे यह भी पता नहीं चला कि उसे वहॉ कितना समय बीत गया और जहाज़ कब का किनारे से चल चुका था और बीच समुद्र में पहुँच चुका था।

जब उसने आखिरी चीज़ देख ली तो उसने व्यापारी को धन्यवाद दिया और घर जाने के लिये जहाज़ से निकल कर बाहर आयी तो देखा कि जहाज़ तो समुद्र के बीच में था। जमीन तो न जाने कहॉ छूट गयी थी। वह तो बस तेज़ी से बढ़ा चला जा रहा था।

वह चिन्तित हो कर चिल्ला पड़ी — "मुझे धोखा दिया गया है। मुझे अगवा किया गया है। मैं एक व्यापारी के जाल में फॅस गयी हूँ। उफ़ इससे तो मैं मर जाती।"

छोटे राजा ने उसका हाथ पकड़ कर कहा — "मैं कोई व्यापारी नहीं हूँ। मैं राजा हूँ और तुमसे नीचे कुल का भी नहीं हूँ। अगर मैंने तुमको अपने साथ लाने के लिये तुम्हारे साथ चाल खेली है तो वह केवल इसलिये कि मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ। पहली बार जब

मैंने तुम्हारी तस्वीर देखी थी तब तो मैं बेहोश ही हो कर गिर पड़ा था।"

जब सुनहरी छत की राजकुमारी ने यह सुना तब कहीं जा कर उसको तसल्ली हुई। वह उससे खुशी से शादी करने के लिये राजी हो गयी।

अब ऐसा हुआ कि जब ये लोग आगे बढ़ रहे थे तो वफादार जोहानैस ने जो सामने की तरफ बैठा हुआ संगीत बजा रहा था तीन रैवन पक्षी अपनी तरफ आते हुए देखे।

उसने अपना संगीत बजाना बन्द कर दिया और वह सुनने की कोशिश करने लगा जो वे आपस में बात कर रहे थे क्योंकि वह उनकी भाषा समझ सकता था।

उनमें से एक रैवन ने कहा — "अरे यह तो सोने के छत की राजकुमारी को घर लिये जा रहा है।"

दूसरा रैवन बोला — "पर अभी वह उसके पास तो है ही नहीं।"

तीसरा रैवन बोला — "हॉ है न। वह देखो वह उसके पास जहाज़ में बैठी हुई है।

पहले वाला रैवन फिर बोला — "वह उसका क्या भला करेगी। जब वे जमीन पर उतरेंगे तो एक चेस्टनट रंग का घोड़ा उनसे मिलने के लिये आगे आयेगा। राजकुमार उस पर चढ़ने की

कोशिश करेगा। जब वह उस पर चढ़ेगा तो वह उसको ले कर हवा में उछल जायेगा और फिर वह अपनी दुलहिन को कभी नहीं देख पायेगा।"

दूसरा रैवन बोला — "पर क्या इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है?"

"हॉ है। अगर कोई और उस घोड़े पर जल्दी से चढ़ जाये और उसके थैले में से बन्दूक निकाल कर उसके सिर में गोली मार दे तो छोटा राजा बच जायेगा। पर इस बात को जानता कौन है और अगर कोई जानता भी है और वह अगर यह राजा से कहता है तो वह अपने पैर के अॅगूठे से ले कर घुटनों तक पत्थर का बन जायेगा।"

दूसरा वाला रैवन बोला — "मुझे तो इससे और आगे का भी पता है। अगर घोड़ा मर भी गया फिर भी छोटा राजा राजकुमारी को नहीं रख पायेगा।

क्योंकि जब वे एक साथ किले में घुसेंगे तो एक सिली हुई शादी की कमीज़ एक थाली में रखी होगी वह देखने में तो सोने चॉदी के तारों से बनी हुई दिखायी देगी पर वह गंधक[36] और तारकोल की बनी हुई होगी। अगर वह उसे पहन लेगा तो वह उसे हड्डियों तक जला देगी।"

तीसरे रैवन ने पूछा — "क्या इससे बचा नहीं जा सकता?"

[36] Translated for the word "Sulphur"

दूसरा रैवन बोला — "अगर कोई आदमी दस्ताने पहन कर उस कमीज़ को आग में फेंक दे और जला दे तब छोटे राजा को बचाया जा सकता है।

पर इससे भी ऐसा कौन सा बहुत बड़ा भला होने वाला है। क्योंकि अगर किसी को यह मालूम पड़ भी जाये और और वह यह बात छोटे राजा को बता भी दे तो उसका घुटनों से ले कर दिल तक का शरीर पत्थर का हो जायेगा।"

तीसरा रैवन बोला — "मुझे तो इससे आगे का भी पता है। कमीज़ के जल जाने के बाद भी छोटे राजा को दुलहिन नहीं मिलेगी।

क्योंकि शादी के बाद जब शादी का नाच शुरू होगा और राजकुमारी नाच रही होगी तो वह अचानक पीली पड़ जायेगी और एक मरे हुए की तरह से नीचे गिर जायेगी।

अगर कोई उसे तुरन्त ही नहीं उठा लेता है और उसकी दॉयी छाती से तीन बूँद खून निकाल कर नहीं थूक देता है तो राजकुमारी वहीं मर जायेगी। पर अगर कोई इस बात को जानता है और राजा को बताता है तो उसका सारा शरीर पत्थर का हो जायेगा – सिर से ले कर पैर तक।"

वे रैवन इस तरह से बात कर के वहॉ से उड़ गये।

वफादार जोहानैस ने सोचा "मैं बचाऊँगा अपने राजकुमार को चाहे यह सब मेरा नाश ही क्यों न कर दे।"

जब जहाज़ जमीन तक पहुँचा और वे लोग जहाज़ से उतरे तो जो कुछ रैवन कह रहे थे वे बातें सच होने लगीं। एक बहुत ही शानदार चैस्टनट रंग का घोड़ा छोटे राजा की तरफ बढ़ा। छोटा राजा उसको देख कर बहुत खुश हुआ और बोला "यही घोड़ा मुझे मेरे किले तक ले जायेगा।"

वह बस उस घोड़े पर चढ़ने ही वाला था कि वफादार जोहानैस उसको पीछे हटा कर उसके सामने आ कर उस घोड़े पर बैठ गया। उसके थैले में से बन्दूक निकाली और घोड़े के सिर में एक गोली मार दी जिससे वह वहीं पर मर गया।

छोटे राजा के दूसरे नौकर जो उसके इतने वफादार नहीं थे चिल्लाये — "उफ़। कितनी शर्मनाक बात है कि इसने इतने सुन्दर जानवर को मार दिया। खास कर के जब जबकि उसको राजा को उसके किले तक ले जाना हो।"

पर छोटा राजा बोला — "शान्ति शान्ति। उसे कुछ न कहो। वह मेरा सबसे ज़्यादा वफादार जोहानैस है। कौन जानता है कि यह काम उसने मेरे कुछ अच्छे के लिये ही किया हो।"

अब वे किले में घुसे तो एक कमरे में एक बहुत बड़ी थाली रखी हुई थी जिसमें उसके लिये शादी के लिये एक कमीज़ रखी हुई थी जो सोने चॉदी के तारों से बुनी लग रही थी।

छोटा राजा उसको पहनने के लिये आगे बढ़ा और उसको उठाने ही वाला था कि वफादार जोहानैस ने अपने दस्ताने पहने हाथों से उसको उठा कर आग में डाल दिया और जला दिया।

इस बात पर तो दूसरे लोग कुछ ज़रा ज़्यादा ही नाराज हो गये क्योंकि वह कमीज़ तो राजा की शादी के लिये थी पर छोटे राजा ने इस बार भी उनको चुप रहने को कहा और कहा कि वफादार जोहानैस उसका वफादार नौकर था हो सकता है इस बात में भी उसके लिये इसमें कुछ अच्छा ही छिपा हो।

अब शादी की तैयारियॉ शुरू हो गयीं। शादी हुई। शादी की रस्म पूरी होने के बाद नाच की तैयारी हुई। उसमें दुलहिन भी हिस्सा ले रही थी। वफादार जोहानैस बराबर उसके चेहरे पर नजर जमाये हुए था। कि अचानक वह पीली पड़ गयी और तुरन्त ही मरी जैसी नीचे गिर पड़ी।

वफादार जोहानैस इसी पल का इन्तजार कर रहा था। वह तुरन्त ही दौड़ कर उसके पास गया। उसने उसको उठाया और एक कमरे में ले जा कर लिटा दिया। उसने उसकी दॉयी छाती से तीन बूँद खून चूसा और थूक दिया। तुरन्त ही उसने सॉस लेनी शुरू कर दी और वह होश में आ गयी।

छोटे राजा ने यह सब देखा कि यह सब क्या हुआ। अबकी बार उसको बहुत गुस्सा आ गया। इन सब बातों को न जानते हुए

कि वफादार जोहानैस ने यह सब क्यों किया उसने वफादार जोहानैस को जेल में डलवा दिया।

अगले दिन उसको फॉसी की सजा सुना दी गयी और उसको फॉसी की जगह भेज दिया गया। जब वह उस ऊॅचे चबूतरे पर खड़ा था जिस पर उसको फॉसी लगायी जाने वाली थी और उसको फॉसी लगने ही वाली थी कि वह बोला — "जिसको भी मौत की सजा मिलती है उसको यह अधिकार है कि वह अपने आखिरी शब्द कह सकता है। क्या मुझे इसका अधिकार है?"

छोटा राजा बोला — "हॉ तुम्हें इसका अधिकार है।"

वफादार जोहानैस बोला — "मुझे यह सजा दे कर मेरे साथ न्याय नहीं किया जा रहा है। मैं तो हमेशा से ही आपका वफादार रहा हूॅ।" और उसने जहाज़ पर हुई पूरी घटना छोटे राजा के सामने दोहरा दी। और फिर कहा कि "यह सब तो मैंने अपने मालिक को बचाने के लिये किया था इसमें मेरा अपना कोई स्वार्थ नहीं था।"

छोटा राजा चीखा — "ओ मेरे वफादार जोहानैस। मुझे माफ कर दो मुझे माफ कर दो।" पर जब तक छोटे राजा ने ये शब्द कहे तब तक तो वह पूरा का पूरा पत्थर का बन चुका था।

यह देख कर छोटे राजा और रानी बहुत दुखी हुए। छोटा राजा बोला — "ओह मैंने उसे उसकी वफादारी का कितना बुरा बदला दिया।"

फिर उसने हुक्म दिया कि वह पत्थर की मूर्ति उसके सोने के कमरे में उसके पलंग के पास ही रखवा दी जाये। अब वह जब भी उसे देखता तो रोता और कहता — "काश मैं इसे ज़िन्दा कर सकता। ओ मेरे सबसे ज़्यादा वफादार जोहानैस।"

इस तरह से कुछ समय गुजर गया। इस बीच रानी ने जुड़वॉ बच्चों को जन्म दिया – दो बेटे जो जल्दी जल्दी बढ़ने लगे और रानी को आनन्द देते थे।

एक दिन रानी तो चर्च गयी हुई थी और उसके दोनों बेटे अपने पिता के पास बैठे हुए खेल रहे थे। छोटे राजा की निगाह मूर्ति पर पड़ी तो दुखी मन से उसके मुॅह से निकला — "ओह मेरे सबसे ज़्यादा वफादार जोहानैस। काश मैं तुम्हें ज़िन्दा कर सकता।"

आश्चर्य। आज वह मूर्ति बोल पड़ी — "आप मुझे ज़िन्दा कर सकते हैं अगर आप मुझे वह दे देंगे जो आपको सबसे प्यारा है।"

छोटा राजा खुशी से चिल्ला पड़ा — "मैं तुम्हें कुछ भी देने के लिये तैयार हूॅ बोलो क्या चाहिये तुम्हें।"

मूर्ति बोली — "अगर आप अपने दोनों बच्चों के सिर अपने हाथ से काट कर उनका खून मेरे ऊपर छिड़क दें तो मैं ज़िन्दा हो जाऊॅगा।"

पहले तो छोटा राजा इस विचार से डर कर कॉप गया कि उसको अपने हाथ से अपने दोनों बच्चों के सिर काटने पड़ेंगे पर फिर वफादार जोहानैस की वफादारी के बारे में सोच कर कि किस

तरह से उसने उसकी जान बचायी है उसने अपने ही हाथों से अपने दोनों बच्चों का सिर काट कर उनका खून मूर्ति पर छिड़क दिया।

लो वफादार जोहानैस तो उसके सामने ज़िन्दा ठीक और तन्दुरुस्त खड़ा था। उसने छोटे राजा से कहा — "मेरे लिये आपकी यह वफादारी बेकार नहीं जायेगी छोटे राजा।"

उसने बच्चों के सिर उठा कर उनके शरीरों पर फिर से लगा दिये और उन पर उन्हीं का खून मल दिया। और अब वे भी ठीक ज़िन्दा और तन्दुरुस्त खड़े थे। वे फिर से खेल कूद रहे थे जैसे उन्हें कुछ हुआ ही न हो। यह देख कर राजा तो बहुत खुश हो गया।

रानी के चर्च से आने से पहले पहले उसने अपने दोनों बच्चों और वफादार जोहानैस को एक बड़े बक्से में छिपा दिया। जब वह वापस लौटी तो छोटे राजा ने उससे पूछा — "क्या तुम चर्च में प्रार्थना कर रही थीं?"

रानी बोली हॉ कर तो रही थी पर मैं बराबर आपके वफादार जोहानैस के बारे में ही सोचे जा रही थी कि हमारी वजह से उसके ऊपर कितना बड़ा दुख आ पड़ा।"

छोटा राजा बोला — "प्रिये हम अपने वफादार जोहानैस को फिर से ज़िन्दा कर सकते हैं पर हमें अपने दोनों बच्चे खोने पड़ेंगे। हमें उनकी बलि चढ़ानी पड़ेगी।"

यह सुन कर रानी तो पीली पड़ गयी। वह बहुत डर गयी थी। पर फिर कुछ संभल कर बोली — "पर हम अपनी ज़िन्दगी के लिये उसके कर्जदार हैं।"

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने बक्सा खोला और तीनों को यह कहते हुए बाहर निकाला — "भगवान की कृपा है कि आज तीनों ज़िन्दा हैं।"

फिर उसने उसको सब बताया कि उसके पीछे क्या क्या हुआ था। फिर वे जब तक मरे सब खुशी खुशी रहे।

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (20 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (13 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (11 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Ping King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022